* समर्पण *

श्रद्धेय श्रीकृष्ण दास जी जाजू,

बी. ए., एल-एल. बी; वर्धा.

महोदय !

मुझे कुछ दिन तुम्हारे पास रहने का, तथा समय समय पर तुम से साक्षात या पत्र-व्यवहार द्वारा वार्तालाप करने का, सौभाग्य प्राप्त हुआ है। तथापि तुम अभी दूर ही मालूम होते हो। आत्मोन्नति, शिक्षा-प्रचार और समाज-सुधार का जो आदर्श तुमने उपस्थित किया है, उसे मैं कब भली भांति समझूंगा ?

त्यागमूर्ति ! तुम विद्वान होकर भी सरल हो। अल्प भाषी होकर भी महान उपदेशक हो। बड़े होकर भी छोटों से प्रेम करते हो। तुम सर्वस्व-त्यागी होकर भी धनवानों से बढ़कर हो। तुम सब के सन्मुख अपने व्यवहारों द्वारा उच्च दृष्टान्त रखते हो। माहेश्वरी जाति और मारवाड़ी समाज तुम से शोभायमान है,

तुम्हारे उदाहरण और उद्योग से इनकी जागृति और उत्थान कार्य हो रहा है।

तुम सांसारिक बातों में अनुराग नहीं रखते, पर स्वार्थी संसार तुम्हें कब छोड़ने लगा! आत्म-संतोष के लिए मैं यह क्षुद्र रचना तुम्हें समर्पित कर कृतार्थ होना चाहता हूं। परमात्मा करे, मैं तुम्हारे आशीर्वाद के योग्य बन सकूं।

विनीत
भगवानदास केला

———

निवेदन

श्रद्धाञ्जलि ! तेरी रूप रेखा, तेरे गुण दोष, तुझे पढने वाले स्वयं जान लेंगे, मुझे उसका दिग्दर्शन कराना अभीष्ट नहीं; यहां कुछ और ही बातों की चर्चा करनी है।

× × × ×

तू बड़े आड़े वक्त में मेरे काम आयी। गत तीन वर्ष का समय मेरे जीवन में विशेष प्रकार का रहा है। मैं साधारण मार्ग को छोड़ नयी दिशा में चल रहा था; निश्चित आजीविका के कार्य से पृथक् हो स्वच्छन्दता-पूर्वक लिखने पढ़नेमें लगा था। ऐसा कार्य करने वाले व्यक्ति के लिए, विशेषतया मामूली गृहस्थी के लिए हिन्दी संसार में कैसी वाधाओं और चिन्ताओं का सामना करना पड़ता है, इसे भुक्त भोगी ही जानते हैं। ऐसी परिस्थिति में, तेरे महापुरुषों के चरित्रों के स्वाध्याय से मुझे बराबर उत्साह, शक्ति और सन्तोष मिलता रहा। परमात्मा करे, तेरे द्वारा प्रदान किया हुआ बल मेरे भावी जीवन में भी काम आता रहे। मेरे कार्य मौन भाषा में तेरे उपकारों की सूचना दें।

× × × ×

मैं चाहता हूं कि तेरा पाठ करने वाले तुझ से सम्यग् लाभ उठावें। तू उनके जीवन-संग्राम में पथ-प्रदर्शिका हो, उनमें त्याग और बलिदान के भावों का संचार करने वाली हो। तू उनका आत्म बल बढ़ाने में सहायक हो, और, उनके सुशुप्त विचारों को जागृत करने वाली हो। यह कार्य कुछ अंश में भी हुआ तो मैं अपने को कृत-कृत्य समझूंगा।

× × × ×

तेरी रचना में मुझे कई मित्रों का परामर्श मिला है। स्थानीय गुरुकुल के श्री० शिवदयालु जी बी० ए०, विद्यासागर जी वेदालंकार, और ज्ञानेन्द्रनाथ जी ने तथा प्रेम महाविद्यालय के श्री० नारायणदास जी विद्यालंकार ने तो विशेष कृपा की है। 'कर्मवीर'-सम्पादक श्रद्धेय श्री० माखनलाल जी चतुर्वेदी के सहयोग-सूचक दो शब्द प्राप्त कर लेना तेरा और मेरा दोनों का समान सौभाग्य है। और हां, शिक्षा-प्रेमी होनहार नवयुवक श्री० रामनिवास जी साबू, मंत्री, श्री माहेश्वरी पाठशाला, इन्दौर, भारतीय ग्रन्थमाला को प्रकाशन कार्य के लिए आर्थिक सहायता न देते, तो न मालूम तू कब तक मेरी अन्य पुस्तकों की हस्त-लिखित प्रतियों के बंडल में पड़ी रहती। इन विविध महानुभावों को, मेरे धन्यवाद की आवश्यकता नहीं है; तेरे द्वारा पाठकों का समुचित कल्याण होते देखकर ही इन्हें सन्तोष होगा।

× × × ×

मेरी इच्छा थी कि कुछ अन्य महापुरुषों को अर्पित श्रद्धाञ्जलि भी प्रकाशित होजाती। पर साधनों की कमी रही। और भी असुविधायें उपस्थित हुई। कई अंश लिखे लिखाये रोकने पड़े। उस सामग्री का उपयोग होना समय और परिस्थिति पर निर्भर है; और हां, इस बात पर भी निर्भर है कि श्रद्धालु पाठक तेरा (तथा ग्रन्थमाला की अन्य पुस्तकों का) स्वागत कैसा करते हैं। आशा है, वे अपनी सहानुभूति का निरन्तर परिचय देते रहेंगे। शुभम्।

विनीत

भगवानदास केला

दो शब्द

श्रीयुत भगवानदास जी केला की शुद्ध साहित्य-सेवा हिन्दी-भाषियों के लिये उपेक्षा करने की नहीं, आदर करने की चीज़ है। केला जी, और विद्वान अध्यापक श्री दयाशंकर जी दुबे एम० ए० अर्थशास्त्र और राजनीति-शास्त्र पर कुछ न कुछ लिखते रहे हैं! उनका यह साहित्य कितने ही प्रान्तों में पुस्तकालयों के लिये, और कुछ राष्ट्रीय संस्थाओं में पाठ्य-पुस्तकों के रूप में भी स्वीकृत है; किन्तु अन्य साहित्यों में जहां ऐसे लेखकों का समादर होता है, वहां हिन्दी-साहित्य की राजनीति-हीनता, और राजनीति-विज्ञान तक से भड़कने वाली मनोवृत्ति को यह गौरव प्राप्त है कि केला जी जैसे नम्र, निष्पाप और लगन वाले त्यागी लेखकों को उपेक्षित जीवन बिताना पड़े, और मानव मनोभावों को विलास में नहलाने वाला साहित्य हिन्दी के मानसिक खाद्य के ख़रीदारों में नमक की तरह आवश्यक वस्तु बन जाय।

बे--मिलावट के (Unadulterated) घी तथा अन्य खाद्य-पदार्थों की तरह बे--मिलावट के साहित्य को भी हम असम्भव बनाते चले जा रहे हैं। क्या इसका यह अर्थ नहीं है कि हम साहित्य में ईमानदार और श्रद्धामय जीवन ही को असम्भव कर देना चाहते हैं? अन्ध-श्रद्धा दण्डनीय है; किन्तु गुणों की छान-बीन किये बिना ही पनपने वाली अन्ध-अश्रद्धा क्या कम दण्डनीय है? श्री० कालेलकर जी के शब्दों में संकटों और दुःखों का ताप उतना कठिन नहीं

होता जितना आत्म-निराशा का, और आत्म-घाती अश्रद्धा का होता है। इसी का परिणाम है कि ज्ञान-संग्रह के बाद साहस--पूर्वक कोई कार्य उठा लेने की, विश्व-सतह के चिन्तकों के साथ सोचने की, और आये, दिन आत्म-यज्ञ करने की हमारी तैय्यारी केवल कल्पना की वस्तु हो रही है। कौन कह सकता है कि इसी मनोवेदना ने इस पुस्तक के नम्र लेखक को श्रद्धाञ्जलि लिखने के लिये बाध्य न किया हो? इस पुस्तक में देश और विदेश के कुछ महा-पुरुषों के प्रति श्रद्धा प्रकट की गई है। इसमें लेखक ने अपने जीवन को बे-मिलावट की श्रद्धामय भाषा में प्रकट किया है, और अपने प्रकटीकरण को पक्षपात से दूर रखने की सावधानी लेते भी वे दीख पड़ते हैं।

यह पुस्तक श्रद्धा के पथ में पूर्व और पश्चिम, नवीन और प्राचीन, स्त्री और पुरुष, तथा धर्मी और विधर्मी, सब की अर्चना कर रही है। इसमें जहां भगवान रामचन्द्र, भगवान् श्रीकृष्ण, भगवान बुद्ध, और भगवान गौरांग के प्रति, वहां भगवान ईसा और मोहम्मद साहब के लिये भी लेखक की श्रद्धा की थैली के पुष्प उल्लास-पूर्वक बिखर पड़े हैं। धर्म के युग--परिवर्तकों में जहां इस पुस्तक में शंकराचार्य, राजा राम मोहन और स्वामी दयानन्द की चर्चा है, वहां मार्टिन लूथर, सुक़रात और टालस्टाय भी लेखक की श्रद्धा के जल-कणों से सींचे जा रहे हैं। वीरों में जहां राणाप्रताप गुरु गोविन्दसिंह, और लोकमान्य तिलक की चर्चा है, वहां मेज़िनी, लिंकन, मार्क्स, और सनयुत सेन के प्रति भी श्रद्धा प्रकट की गई है। देवियों में अहिल्या बाई, लक्ष्मी बाई और पद्मनी की चर्चा

है, वहां देवी जोन और फ्लोरन्स नाइटिंगेल पर भी लेखक ने अपनी श्रद्धा की अञ्जलियां चढ़ाई हैं।

हृदय के इस विशाल भवन में लेखक ने खड़े होने में शायद स्वर्गीय लाला लाजपतराय जी के इस अमर कथन को मार्ग-दर्शक बनाया है:—"मेरा मज़हब हक़परस्ती (सत्य की पूजा), मेरी मिल्लत (धर्म) क़ौम परस्ती, और मेरी इबादत (ईश्वराराधना) मुल्क परस्ती (देश-सेवा) है। मेरी अदालत मेरा अन्तःकरण है। मेरी ज़ायदाद मेरी क़लम है। मेरा मन्दिर मेरा दिल है। मेरी उमंगें सदा जवान हैं।" स्वयं लेखक के शब्दों में, "महापुरुषों की प्रशंसा सब कोई करते हैं। वे चाहे हमारे धर्म के न हों, हमारी जाति के न हों, हमारे रंग, पेशे या देश के भी न हों, उनके लिये हमारे हृदय में स्थान होता है। अपने मन की क्षुद्रता, सांसारिक कूटनीति, या ईर्षा-द्वेष आदि के कारण हमें अपनी जिव्हा या लेखनी से चाहे उनका आदर न करें, पर इसमें सन्देह नहीं कि हम अपने अन्तस्तल में उनका गुणगान करने को विवश होते हैं।" सो, लेखक ने अपनी इसी विवशता को इस पुस्तिका में प्रकट किया है, और, इस में वे सफल भी हुए हैं।

मोहम्मद साहब पर अपनी वीर-पूजा के भावों को बरसाते हुए लेखक वेदना भरे हृदय से पूछता है:—"हे महापुरुष! क्या तुम्हारे अधिकांश अनुयायियों के व्यवहार को देखकर, अन्य धर्मों के मानने वालों के हृदय में, तुम्हारे मत के प्रति कुछ श्रद्धा बढ़ रही है?" भगवान श्रीकृष्ण के प्रति अपनी आराधना के फूल चढ़ाते

हुए लेखक की मनोव्यथा इन शब्दों में प्रगट होती है :—
"महाराज ! हमें क्षमा करना ! हमने तुम्हें ठीक नहीं समझा या समझ कर भी भूल गये। रसिक कुकवियों और कुलेखकों के हाथ तुम्हारे चरित्र की घोर दुर्गति की गई।" महर्षि बाल्मीकि के प्रति श्रद्धाञ्जलि अर्पित करते हुए लेखक ने जो उद्‌गार प्रकट किये हैं, वे आधुनिक कवियों, लेखकों और प्रकाशकों के लिए खूब मनन करने की चीज़ हैं। गरज़ यह है कि अनेक चरित्रों की चर्चा करते हुए लेखक उस कूड़े-करकट की कड़ी आलोचना करने से नहीं चूके जिसके कारण वर्णित महापुरुषों के प्रति उत्पन्न होने वाली श्रद्धा में बाधा पड़ती हो।

कुछ लोग अनाथ बनकर वीर पुरुषों से अपनी रक्षा मांगते हैं। कायर श्रद्धा के इस पथ को लेखक ने ग्रहण नहीं किया। उसने अपनी वीर--पूजा में प्रेरणा, उत्साह और प्राण की मांग की है। पुस्तक जनता की भाषा में लिखी गई है, और तरुण पीढ़ी के द्वारा गाँवों, खेतों, खलियानों और जन-संग्रह के शान्त-स्थानों में यह विचार-पूर्वक पढ़ी जाय, ऐसी मेरी हार्दिक इच्छा है।

'कर्मवीर' कार्यालय
खंडवा।

माखनलाल चतुर्वेदी

विषय सूची

प्रथम खण्ड

पूर्वाभास.

दूसरा खण्ड

भारतीय महापुरुषों के प्रति.

तीसरा खण्ड

अन्य देशीय महापुरुषों के प्रति.

श्रद्धाञलि

प्रथम खंड

पूर्वाभास

मेरा मज़हब हक़ परस्ती (सत्य की पूजा) है। मेरी मिल्लत (धर्म) कौम परस्ती है। मेरी इबादत (ईश्वरआराधना), मुल्क परस्ती (देश सेवा) है मेरी अदालत मेरा अन्तःकरण है। मेरी जायदाद मेरी क़लम है। मेरा मंदिर मेरा दिल है। मेरी उमंग सदा जवान है।

— स्व० लाला लाजपतराय.

" महापुरुषों का गुण कीर्तन सुनने सुनाने से हम अपने हृदयों को टटोलने लगते हैं।

'जब तक वीर पूजा का अर्थ वीरत्व-पूजा और व्यक्ति पूजा का अर्थ व्यक्ति के गुण विशेषों की पूजा रहता है, तब तक वह पूजा स्वागत योग्य ही नहीं, समाज के लिए एक आवश्यक वस्तु हो जाती है। विवेकयुक्त होने के कारण, यह समाज को व्यक्ति के वंश या धर्म की पूजक न बनाकर, उसके गुण विशेषों को धारण करने वाला बनाती है।

— राजस्थान संदेश.

श्रद्धाञ्जलि

" नया धर्म सम्पूर्ण महात्माओं का धर्म होगा। उसमें पुरुषों के आचार और बलिदानों को प्रथम स्थान दिया जायगा। वह तमाम प्रेम करने वालों और शूरवीरों की पूजा सिखलायेगा।

अरे चंचल मन ! तू ने रात में अनेक स्वप्न देखे, दिन में तरह तरह की कल्पनायें कीं। हर्ष और शोक में, तन्दुरुस्ती या बीमारी में तुझे कभी चैन न मिला। जब तुझे अपने उद्धार का काम न रहा, तो तू अपने पतन के ही रास्ते लग लिया। आ, अब घड़ी भर के लिए महापुरुषों का दर्शन कर। अपनी संकीर्णता त्याग दे। भूल जा इस बात को, कि तू किस वर्ण या धर्म का है, किस देश या जाति का है। बस एक बात सामने रहे, तू मनुष्य योनि का है, और मनुष्य होने के नाते, प्रत्येक आदर्श पुरुष स्त्री का आदर मान करना तेरा कर्तव्य है, तेरा अधिकार है। प्रत्येक महापुरुष तक, तथा प्रत्येक महिमामयी मातृ शक्ति तक तेरी पहुंच है। तेरी पहुंच उस समय तक है, जब तक तू ही स्वयं उसमें बाधक न हो; तू उन्हें अलौकिक शक्ति वाला देवी देवता, पीर पैगम्बर, आदि मानकर उनका मनुष्यों से पृथक् वर्गीकरण न कर डाले। हां, तो, महान् आत्माओं तक तू पहुंच सकता है, उनके दर्शन तुझे हो सकते हैं, और तू उनके प्रति श्रद्धाञ्जलि

अर्पित करके अपनी वाणी या लेखनी को पवित्र कर सकता है।

× × × × ×

एक समस्या सामने है। कृष्ण और ईसा को, या चैतन्य और मोहम्मद को, भिन्न भिन्न गुण वाले विविध महात्माओं को, साथ साथ ही श्रद्धाञ्जलि कैसे अर्पित की जा सकती है? इस विषय में यही ध्यान में रख लेना पर्याप्त है कि परमात्मा के अनेक ढंग हैं, अनेक साधन हैं. जब जिस की आवश्यकता होती है, उससे काम लिया जाता है। जिस समय गर्मी की ज़रूरत होती है, वह बड़े यत्न से संचित की जाती है, पर पीछे उसकी अति हो जाने या उसकी उपयोगिता न रहने पर, उसके ह्रास का उद्योग, और सर्दी का स्वागत किया जाता है; यह नित्य का अनुभव है। इसी प्रकार देश काल की परिस्थिति के अनुसार कभी हिंसा की आवश्यकता होती है, और कभी अहिन्सा की। कभी गौतम बुद्ध के आगमन की प्रतीक्षा की जाती है, कभी शिवा जी का आह्वान किया जाता है।

× × × × ×

जिन महापुरुषों को यहां श्रद्धाञ्जलि अर्पित की जाती है.क्या उनके अतिरिक्त और महात्मा इस श्रेणीमें नहीं आ सकते? ऐसा कहने का दुस्साहस या मूर्खता कौन करेगा? भारत भूमि तो रत्नगर्भा प्रसिद्ध ही है, इसके सामने सुदीर्घ-कल्पनातीत इतिहास है। अन्य देशों में भी समय समय पर अनेक विभूतियां हुई हैं। अनेक तो प्रकाश में ही नहीं आयीं; जो प्रकाशित भी हुई उनमें से भी बहुतों पर समय ने आवरण

डाल दिया है। जिनको मैं जानता हूं, और मानता हूं, उनकी संख्या भी काफी बड़ी है। अपने वर्तमान साधन और सुविधाओं का विचार करके, यहां केवल स्वर्गीय, और उनमें से भी थोड़े से ही महापुरुषों को श्रद्धाञ्जलि अर्पित की जाती है

× × × × ×

क्या एक हिन्दू को ईसाई, या मुसलमान आदि धर्मों के प्रवर्तकों को श्रद्धाञ्जलि अर्पित करनी चाहिये ? क्यों नहीं ? प्रत्येक व्यक्ति अपने धर्म का सच्चा अनुयायी बनने के लिए, अन्य धर्मों की विविध क्रियाओं से कुछ सम्बन्ध न रखते हुए भी, उनके महापुरुषों के वृत्तान्त जान कर कुछ लाभ ही उठा सकता है। शान्तिवादियों को क्रान्ति-वादियों का दृष्टि-कोण समझने, और उससे यथा-सम्भव सहानुभूति रखने में हर्ज ही क्या है ?

× × × × ×

क्या महापुरुष सर्वथा पूर्ण होता है, क्या उसका प्रत्येक कार्य और वाक्य सदैव के लिए अनुकरणीय होता है ? नहीं। यद्यपि प्रत्येक महापुरुष मानवी विकास का एक समुज्वल स्वरूप होता है, तथापि उसमें कुछ और भी विकास की गुञ्जायश हो सकती है। निस्सन्देह वह कुछ अंश में परिस्थिति का निर्माण करने वाला होता है, परन्तु वह देश काल और परम्पराओं के प्रभाव से सर्वथा मुक्त नहीं होता; उसमें किसी प्रकार की क्षति रहजाना असम्भव नहीं है; और, इस बात का विचार न रख कर, उसके कार्यों या

वाक्यों का अन्धानुसरण करने वाले, उसके महान जीवन से लाभ की अपेक्षा हानि ही अधिक उठाते हैं।

× × × × ×

क्या मुझ में श्रद्धाञ्जलि अर्पण करने की क्षमता है? भगवान रामचन्द्र के प्रति श्री तुलसीदास जी ने श्रद्धाञ्जलि अर्पित की थी। कर्मयोगी कृष्ण का शिष्य होने की योग्यता अर्जुन में थी। महात्मा ईसा का भक्त सन्त जॉन था। स्वामी दयानन्द का जीवन चरित्र अपने हृदय पर अंकित गुरुदत्त विद्यार्थी ने किया था। भला, मुझ में किसी महानात्मा के प्रति यथार्थ श्रद्धा-भाव का परिचय देने की योग्यता कहां? और, यहां तो बहुत सी आत्माओं का प्रश्न है। पर, जो भी हो, मन ही तो ठहरा, इसकी निरंकुशता प्रसिद्ध है। अपनी समझ की क्षुद्रता और अपनी भाषा की अपूर्णता को जानते हुए भी मैंने कुछ विचार प्रगट करने का साहस कर लिया।

× × × × ×

एक बात और है। विवाह की चिट्ठी पीली होती है। बलिदान होने की उत्कट इच्छा रखने वाले अपना प्रार्थना-पत्र प्रायः अपने रक्त से लिखते हैं। माननीय महापुरुषों के प्रति कोई अपनी श्रद्धा के भाव कैसे आकार प्रकार वाली वस्तुओं से प्रकाशित करे? यह तो स्वर्ण-पत्रों पर, अथवा कम से कम स्वर्णाक्षरों में किये जाने चाहियें। पर यहां तो बे-रंग सफेद कागज़ है और साधारण काली रोशनाई है। चित्रों का भी अभाव है; यह विचित्र ही है। जो हो; पत्र पुष्प जैसा कुछ है श्रद्धा सहित समर्पित है।

महापुरुष

"महापुरुषों का जीवन हम लोगों के लिए उन्नति का मार्ग दिखलाने वाला होता है, परन्तु वह हमारी बाढ़ रोकने वाला ऐसा घेरा नहीं बन सकती, जिसके पार जाना ना हो जाय"

—लाला हरदयाल

मैं महापुरुषों के, सच्चे वीरों के दर्शन करना चाहता हूं। उनके सत्संग से मैं अपने आप को पवित्र बनाऊंगा। उनके प्रति अपनी तुच्छ भेंट चढ़ाकर अपना मनुष्य जीवन सफल करूंगा। वह मेरे आराध्य देव होंगे। मैं उनकी पूजा करूंगा। उनकी संरक्षता में मेरा कल्याण होगा। अपनी जीवन-यात्रा में भटकते समय, मैं उनके चरण-चिन्हों को देखकर ठीक राह में लगने का प्रयत्न करूंगा। संसार सागर में महापुरुष प्रकाश-स्तम्भ का काम देते हैं। हर दशा में वे मेरा कल्याण करेंगे।

× × × ×

महापुरुषों की प्रशंसा सब कोई करते हैं। वे चाहे हमारे धर्म के न हों, हमारी जाति के न हों, हमारे रंग, पेशे, या देश के भी न हों, उनके लिए हमारे हृदय में स्थान होता है। अपने मन की क्षुद्रता, सांसारिक कूट नीति, या ईर्षा द्वेषादि के कारण, हम अपनी जिह्वा या लेखनी से चाहे उनका आदर न करें, पर इसमें सन्देह नहीं कि हम अपने अन्तस्तल में उनका गुण-गान करने को विवश होते हैं। जी चाहता है, हम भी वैसे सद्गुणों से सम्पन्न हों।

× × × ×

महापुरुष शक्ति के उपासक होते हैं; वे स्वयं शक्ति-स्वरूप होते हैं। हां, उनकी शक्ति दैवी शक्ति होती है। उनके उदाहरण राम, कृष्ण, गौतम बुद्ध, हज़रत ईसा, लिंकन, अहिल्या बाई और देवी जोन हैं। इनका आचार व्यवहार, भोजन वस्त्र, रहन सहन सात्विक होता है। ये सद्गुणों के भंडार होते हैं। ये मानव जाति की प्रगति में अपनी आहुति चढ़ाने वाले होते हैं। ये सत्य, न्याय, दया, साहस, त्याग, धैर्य, आदि के प्रतिनिधि और प्रचारक होते हैं। औरों की सेवा सुश्रुषा और कल्याण करना ही ये अपना कर्तव्य समझते हैं। इनके विरोधी राक्षस, दैत्य या दुर्जन आदि कहलाते हैं। महापुरुषों के उदाहरण रावण और कंस हैं। इनकी शक्ति आसुरी होती है। ये इन्द्रिय-लिप्सा, लोभ और अहंकार आदि की प्रतिमा होते हैं। औरों को कष्ट देना इनका मुख्य व्यवसाय होता है।

शक्ति के इन दोनों स्वरूपों में, प्रत्येक युग में, प्रत्येक समय में, बहुधा प्रत्येक जाति या समूह में, और अनेक बार एक ही व्यक्ति में घोर युद्ध रहता है। बहुधा आसुरी शक्ति की विजय होती दिखाई देती है; परन्तु इतिहास बतलाता है कि अन्ततः उन्हें पराजय और अपयश मिलता है। दारा, और लुई, नेपोलियन, सिकन्दर, और डायर चन्द रोज़ अपनी अपनी धाक जमाकर चलते हुए। चंगेज खां, तैमूरलंग, नीरो, अबदाली, गौरी, गज़नवी और अलाउद्दीन आदि की प्रशंसा अब कौन करता है ?

× × × ×

महापुरुष अपनी समस्त शक्ति को, शारीरिक, मानसिक, और आत्मिक सामर्थ्य को, अपनी प्रिय से प्रिय वस्तु को, अपनी धन सम्पत्ति को, अपने पुत्र स्त्री आदि निकट सम्बन्धी को, स्वयं अपने प्राणों को, दूसरों के हितार्थ दी हुई धरोहर समझते हैं। वह परोपकार करते हैं, किसी पुरस्कार-प्राप्ति आदि के विचार से नहीं, किसी अपने स्वार्थ की पूर्ति के लिए नहीं। संसार उन्हें भला कहे या बुरा, लौकिक दृष्टि से वह सफल माने जांय या विफल, वह सदा धीरता और गम्भीरता पूर्वक अपने निर्धारित मार्ग में चले जाते हैं। उन्हें माया, ममता या दुनिया का कोई अन्य प्रलोभन खरीद नहीं सकता। किसी प्रकार के कष्ट से वे विचलित नहीं होते।

× × × ×

महापुरुषों के कार्य-क्षेत्र भिन्न भिन्न होते हैं। कोई सामाजिक रूढियों और रीति रस्मों को सत्य और उपयोगिता की कसौटी पर कसता है, और प्रत्येक अत्याचार के विरुद्ध निस्संकोच अपनी आवाज़ उठाता है। कोई धार्मिक आचार विचार की जांच पडताल करता है, और अन्ध विश्वासों और मिथ्या परम्पराओं से लडाई ठानता है। कोई राजनैतिक व्यवहारों, कानून कायदों, तथा इन्हें अमल में लाने वाले अधिकारियों की परीक्षा लेता है, जहां जो बात अनुचित या अन्याय-पूर्ण प्रतीत होती है, उसका मूलोच्छेद करने के लिए कटिबद्ध होजाता है।

× × × ×

महापुरुषों के अस्त्र शस्त्र तथा प्रयोग विधि भी भिन्न

भिन्न होती है। कोई अपनी वाणी या लेखनी मे सिंह-गर्जना करता है, कोई तीर तलवार, बन्दूक और तोपों से आततायियों की खबर लेता है, कोई सशस्त्र-क्रान्ति करता है, और कोई प्रेम-मंत्र की दीक्षा देकर ही शत्रुओं को शिष्य बनाता है। कोई संगठन और बहिष्कार का तत्व समझाता है, और, कोई सत्याग्रह और असहयोग के विजय की घोषणा करता है।

× × × ×

महापुरुषों की महिमा को, उनके समकालीन व्यक्तियों में से प्रायः बहुत कम ही समझ सकते हैं। उन्हें बहुधा बाहर वालों का ही नहीं, अपने निकट सम्बन्धियों और प्रिय मित्रों का भी विरोध सहना पड़ता है। उनके साथ तरह तरह का अन्याय और अत्याचार होता है। माता पिता उन्हें घर से निकालते हैं, मित्र उन्हें अपने पास रखने में, या उनसे किसी प्रकार का सम्बन्ध बताने में बड़ी जोखम समझते हैं। वे दर-दर ठोकर खाते हैं। कोई उन्हें विष देने का प्रयत्न करता है, तो अनेक व्यक्ति अन्य प्रकार से उनकी जीवन-लीला समाप्त करने की चिन्ता में रहते हैं। परन्तु ये बातें उनके उद्देश्य की पूर्ति में, उनकी निहित शक्तियों के विकास में, प्रायः सहायक ही होती हैं। सोना जितना तपाया जाता है, उतना ही खरा होता जाता है।

× × × ×

दार्शनिक, आविष्कारिक, वैज्ञानिक, लेखक, योद्धा, या शासक आदि, किसी भी रूप में, महापुरुष का आविर्भाव हो

सकता है। महान् आत्मायें धनवानों के महलों में भी जन्म ले सकती हैं, और ग़रीबों की झोंपड़ियों में भी। प्रायः निर्धनता और तपस्या का वातावरण उनके शुभागमन के लिए अधिक अनुकूल होता है। वे पुरुष रूप में ही आ सकती हों, यह बात नहीं है। स्त्री जाति, मातृ शक्ति उनसे समय समय पर कृतार्थ हुई हैं। किसी खास देश ने ही महापुरुषों का ठेका नहीं ले लिया है, वह प्रत्येक देश में प्रकट हो सकती हैं। उन्हें काले गोरे या पीले रंग का कोई पक्षपात नहीं है, और न वे ब्राह्मण, क्षत्री, वैश्य, और शूद्र में ही कुछ भेद भाव मानती हैं। वे महान हैं, इन क्षुद्र बातों से उन्हें क्या ?

× × × ×

प्रत्येक महापुरुष के सामने कुछ खास कार्य होता है। वह अपने समय की समस्याओं को हल करता है, और जनता की सुख शांति बढ़ाता है। उसके बहुत समय बाद आनेवाली, उसके देश की, तथा अन्य देशों की मनुष्य सन्तान भी, यदि चाहें तो, अपनी अपनी प्रस्तुत कठिनाइयों में, उसके कार्यों या वाक्यों से देशकालानुसार यथोचित लाभ उठा सकती है। इस प्रकार एक महापुरुष अपने जन्म तथा रहन सहन आदि की दृष्टि से, एकदेशीय होते हुए भी थोड़ा बहुत प्रत्येक देश और प्रत्येक जाति के लिए होता है। हां, वह प्रत्येक समय के वास्ते भी होता है। वह अपने समय में था, वर्तमान में है, और भविष्य में रहेगा। वह अमर है। उसकी कोई सन्तान या प्रत्यक्ष उत्तराधिकारी न होने की दशा में भी, वह स्वयं भूतकाल की शृंखला को भविष्य के साथ जोड़ने वाला है।

× × × ×

सर्व साधारण के लिए, महापुरुषों का ठीक ठीक चरित्र जानना बहुत कठिन होता है। उनके जीवन की घटनाओं में, उनके शत्रु या विरोधी मिथ्या दूषणों का समावेश कर देते हैं, तो अन्ध भक्तों के वर्णन में भावनायें या कल्पनायें मुख्य स्थान ले लेती हैं। श्रद्धालु शिष्यों या अनुयायियों द्वारा उनका जन्म अलौकिक घटनाओं से युक्त बताया जाता है, उनकी मृत्यु भी विचित्र रीति से हुई वर्णन की जाती है, और उनका बीच का जीवन भी एक रहस्यमय पहेली बना दिया जाता है। इस प्रकार महापुरुषों का वास्तविक स्वरूप ऐसे लुप्त होजाता है, जैसे किसी चित्र की रेखायें उसके गहरे रंग में छिप जाती हैं। ऐतिहासिकों को उनकी चरित-चर्चा में पद पद पर भूल-भुलैयां, अप्रासंगिक विषय, तथा उलझनें मिलती हैं। महापुरुषों को अलौकिक स्वरूप देने वाले, उन्हें अवतार, पैगम्बर और मसीहा बनाने की चेष्टा करने वाले नहीं जानते, कि वे अपने श्रद्धा-पात्र को भावी जनता, विशेषतया, विवेकशील मनुष्यों की दृष्टि में कितना विवादास्पद और उपहासजनक बना डालते हैं। महा धन्य हैं, वे महापुरुष, जिनका मत, सिद्धान्त या आविष्कार सुपात्रों तक ही परिमित रहता है।

दूसरा खण्ड
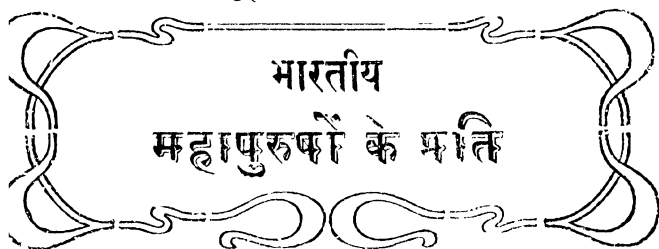
भारतीय महापुरुषों के प्रति

दूसरे धर्मों का मैंने आदर पूर्वक अध्ययन कर लिया है; इसके मानी यह नहीं है, कि हिन्दू धर्म-ग्रन्थों के प्रति मेरी श्रद्धा कम होगयी है, या विश्वास घट गया है। अलबत्ता उन्होंने मेरे हिन्दू-धर्म-ग्रन्थों के समझने में बड़ा भाग लिया है। उन्होंने जीवन के प्रति मेरी दृष्टि विशाल कर दी है।

—म० गान्धी

अनन्त सभ्यताओं की माता, अनन्त संस्कृतियों की माता, अनन्त व्यापी हिन्दू धर्म की माता, भारत माता संसार को एक महान् संदेश देने के लिए अवतीर्ण हुई है।

—टी. एल. वास्वानी

---

(१)

वाल्मीकि के प्रति

महात्मन्! गुदड़ी में बहुधा लाल छुपे रहते हैं; निम्न श्रेणी के वातावरण से प्रभावित व्यक्ति भी अपना जीवन सुधार सकता है; एक चोर और डाकू अपने त्याग और तप से ऋषि पद प्राप्त कर सकता है; इन बातों का तुमने जीता जागता उदाहरण उपस्थित किया। अन्धकारमय मार्ग में भटकने वालों के लिए तुम प्रकाश-स्तम्भ हो, अपने जीवन से निराश व्यक्तियों के लिए तुम आशा की ज्योति हो। तुम्हारे जीवन से स्फूर्ति मिलती है, उत्साह का संचार होता है। सर्व साधारण के लिए तुम्हारा जीवन एक महान् शिक्षा-ग्रन्थ है। तुम धन्य हो, तुम्हें सादर नमस्कार!

× × × ×

हे महर्षि! कुमार्गगामी कुल में पालित पोषित होने के कारण, तुम्हारे लिए यह स्वाभाविक ही था कि तुम चोरी या लूट मार करके अपना तथा अपने परिवार का निर्वाह करते, और हत्या तथा निर्दयता आदि से कुछ ग्लानि न करते। परन्तु तुम्हारे अन्दर कुछ उच्च भावनायें विद्यमान थीं, उन पर मैल का आवरण चढ़ा हुआ था। आवश्यकता थी कि उसे हटाकर तुम्हारी उच्च भावनाओं का विकास किया जाय। परमात्मा की कृपा से वह सुयोग मिल गया। एक साधू (नारद) तुम्हारी तरफ़ से जारहा है। तुम अपने रोजमर्रा के अभ्यास के अनुसार उसे अपनी क्रूरता का परिचय देने के लिए तत्पर हो। इतने में वह कुछ प्रश्नों द्वारा तुम्हें अपने आचार व्यवहार के सम्बन्ध में विचार करने के लिए

प्रेरणा करता है। वह कहता है, "भाई इतना पाप किस लिए करते हो, क्या तुम्हारे परिवार के आदमी भी तुम्हारे इन दुष्कर्मों का फल भोगने में सहमत होंगे? ज़रा उन से पूछ तो देखो, वे क्या कहते हैं।" तुम घर आकर अपने पिता से पूछते हो, तो वह जवाब देता है कि "तेरे बचपन में मैंने तेरा भरण पोषण किया, अब तुझे मेरी सेवा करनी चाहिये, पर मैं यह तो कभी नहीं कहता कि तू मेरे लिए पाप-कर्म कर। यदि तू कुछ दुष्कर्म करता है तो तू अपने किये का फल भोगेगा। तेरे करे का फल मैं भोगूं, यह कैसे हो सकता है!" पूछे जाने पर, तुम्हारी माता भी इसी प्रकार उत्तर देती है। तुम्हें अपनी अर्द्धांगिनी और आत्मजों से विशेष आशा थी, परन्तु वह भी स्पष्ट कह देते हैं कि "प्रत्येक पाप का दंड वही भुगतेगा, जो उस पाप को करने वाला है" इस तरह तुम्हें सब तरफ से निराश होना पड़ा। सच है, संसार में, बन्धु हों, या मित्र, सब प्रायः सुख के ही साथी होते हैं। तथापि मनुष्यों को यह भ्रम बना रहता है कि अपने जिन आश्रितों का पालन पोषण करने के लिए हम छल प्रपंच आदि कुकर्म करते हैं, वे उनके फल-स्वरूप दुख भोगने में भी हमारा साथ देंगे।

तुम्हारे हृदय में प्रकाश हो गया। तुम्हें अपने पापों का पश्चात्ताप हुआ; भविष्य के लिए तुम अपने जीवन की दिशा बदलने को पूर्ण कटिबद्ध होगये। आत्मोद्धार के लिए तुम तपस्या और आत्म चिन्तन में लवलीन होगये। तुम विशुद्धात्मा बन गये। पीछे, सीता जी का परित्याग किये जाने पर, तुम ही उनके धर्म-पिता और संरक्षक हुए। तुमने

ही उनके पुत्र लव और कुश को वेद, वेदाङ्ग और धनुर्वेद की सांगोपांग शिक्षा दी।

× × × ×

अग्नि में तपाये जाने पर सोने का मैल दूर होजाता है। त्याग और तप का जीवन विताने पर तुम्हारे मनोमन्दिर से अन्धकार दूर होकर, उसमें ज्ञान की ज्योति जग जाना अनिवार्य था। एक दिन तुमने देखा कि एक निषाद ने अपने तीर से एक क्रौंच पक्षी को मार डाला, उस की मादा शोक-विह्वल है। तुम उसकी वेदना से मर्माहत होगये। अनायास तुम्हारी जिह्वा से ऐसे शब्द निकले जो कविता के रूप में थे। जिस श्लोक की तुमने रचना की, वह काव्य जगत का श्री-गणेश माना जाता है। निस्संदेह जो आदमी दूसरों की पीड़ा का सम्यग् अनुभव करता है, और उस वेदना से स्वयं दुखी होता है, या जो त्याग और कष्ट का जीवन व्यतीत करता है, उसी की वाणी कविता के अन्तस्तल तक पहुंचती है, वही वास्तव में काव्य रचना का अधिकारी है।

× × × ×

हे धर्म और नीति के महान् शिक्षक! समुचित तपस्या करने के बाद तुम्हारा राम-चरित लिखने का विचार हुआ, और तुम भारतवर्ष का, नहीं नहीं, संसार का, प्रथम महा-काव्य लिखने में सफल हुए। इसके अध्ययन से प्रत्येक नर नारी, बाल वृद्ध गृहस्थ और सन्यासी, राजा और रंक, नीतिज्ञ और योद्धा अपने अपने विविध क्षेत्रों के अनुसार यथेष्ठ शिक्षा ले सकता है। इस ज्ञान-भंडार के आधार पर भारतवर्ष की ही नहीं, अन्य देशों की भी विविध भाषाओं के

साहित्य की अभिवृद्धि हुई है। इससे असंख्य लोगों का जीवन पवित्र और सदाचारी बनने में सहायता मिली है। स्थान स्थान पर सामाजिक और राष्ट्रीय जीवन के विकास में इसने अद्भुत भाग लिया है। महर्षि ! तुम्हारी कृति अमर है, वह सबको जीवन-सन्देश देने वाली है। तुम धन्य हो।

× × × ×

हे महानुभाव ! अन्यान्य लोगों में भारतीय कवि और लेखक तुम्हारे महाकाव्य का अभिमान करते हैं, परन्तु कितने हैं जो अपने रचना कार्य में तुम्हारे जीवन से समुचित शिक्षा लेते हैं। हमारे अधिकांश आदमी क़लम का धन्दा अपनी भूख प्यास मिटाने, या धन कमाने के लिए करते हैं। हमारे जीवन का कोई उच्च लक्ष्य नहीं। सबकी कीमत है, हम थोड़े या बहुत दामों में बिकने के लिए तैयार रहते हैं। आज एक पैसे-वाला आश्रय देता है, तो हम उसका गुण-गान करने लगते हैं, कल किसी दूसरी जगह से कुछ अधिक प्राप्ति की आशा होजाय, तो हमें अपना सुर बदलने में संकोच न होगा। जिस प्रकार की रचना के, बाज़ार में अच्छे दाम उठ सकें वैसी तैयार करने के लिए हम लालायित रहते हैं। जिस बात के कहने में हमें सत्ता-धारियों की भृकुटि का सामना करना पड़े, उसे हम बड़ी चतुराई से बचा देते हैं।

जब लेखकों की यह दशा है, तो प्रकाशक अपने आपको व्यापारी कहने में क्यों लजाने लगे ? वे प्रायः लोक-रुचि के

पीछे दौड़ रहे हैं। बाज़ार में मांग कैसी पुस्तकों की है, इसी बात को अध्ययन करने की चिन्ता उन्हें सताती रहती है। वे साहित्य क्षेत्र को ऐसी रचनाओं से पाटते रहते हैं जो वास्तव में साहित्य के लिए कलंक-स्वरूप हैं। अनिष्टकारी साहित्य की वृद्धि के लिए लेखकों और प्रकाशकों का वर्तमान सहयोग देखकर समाज का भविष्य चिन्ताजनक प्रतीत होता है। साहित्य से, सेवा का भाव विलुप्त होजाने पर, वह क्या अनर्थ न कर डालेगा ?

× × × ×

हे आदि कवि ! हमारे हृदय में स्वाभिमान और स्वतंत्रता नहीं, मन में क्रान्ति की ज्वाला नहीं, हम शब्द-जाल से, केवल कला के बल पर, दूसरों को जागृत करने का दम भरते हैं। हम संसार के सुधारक बनने की डींग हांकते हैं, पर स्वयं स्वार्थ-अन्धकार में निमग्न हैं। स्वाभाविकता से हम दूर रहते हैं। कृत्रिमता, अलंकार और आडम्बर हमारे साधन हैं, हमें अपने मस्तिष्क का भरोसा है, हृदय भले ही साथ न दें। केवल साहित्य शास्त्री बन कर, विविध ग्रन्थों में बताये नियम उपनियमों को कंठ करके हमारे भाई कविता करने चलते हैं। हे कवि-शिरोमणि! हम भूल जाते हैं कि तुमने महाकाव्य की रचना करने के वास्ते अपने हृदय का भी विकास किया था। तभी तुमने सरस धारा प्रवाहित की थी। हृदय में अपने आप ही उमड़ पड़ने वाली, दूसरों के अन्तःकरण तक पहुंचने वाली उद्गारों की धारा ही तो वास्तव में कविता है।

परमात्मा हमें सुबुद्धि दे ! तुम्हारे चरण चिन्हों को देखकर हम समुचित शिक्षा ग्रहण करें, साहित्य कार्य में हम केवल सौंदर्य के लिए लालायित न रहें; हम कोरे सत्य के भी उपासक न हों। हमारी रचना में इन दोनों सद्गुणों का ऐसा सामिश्रण हो, जो शिवम् अर्थात् कल्याणकारी हो। हम दूसरों का वास्तविक हित साधन कर सकें। महात्मन् ! लेखन कार्य के लिए तप और त्याग की आवश्यकता बतलाने में, तुम हमारे गुरू हो, तुम धन्य हो। तुम्हें सादर प्रणाम !

---

(२)

राम के प्रति

मर्य्यादा पुरुषोत्तम राम ! आज लाखों वर्ष व्यतीत होजाने पर भी तुम अनेक बातों में भारतवासियों के, और जिज्ञासु विदेशियों के पथ-प्रदर्शक बने हुए हो ! क्यों न हो ! अपने विविध कार्यों द्वारा, भिन्न भिन्न क्षेत्रों में, गार्हस्थ जीवन में, सार्वजनिक कार्यों में, राज काज में, और दुष्ट-दल-दलन में, अनेक आपत्तियां सहन करके भी तुमने महान् शिक्षाप्रद आदर्श उपस्थित किया। तुम धन्य हो ! और, धन्य है भारत भूमि, जिसने संसार को तुम्हारे जैसा पुरुषोत्तम प्रदान किया।

× × × ×

भगवन् ! तुमने बाल्यावस्था में ही कैसे उत्तमोत्तम गुण ग्रहण कर लिये थे। माता कौशल्या के संरक्षण में तुमने मृदु भाषण, आज्ञा पालन, स्वच्छता आदि का अभ्यास किया था, तो गुरु वशिष्ठ जी से न्याय, नीति, धर्म और धनुर्वेद की शिक्षा पायी थी। तुमने सदैव सदाचारी और विद्वान् लोगों का सत्संग किया। तभी तो तुमने अपने भावी जीवन में, अपनी शारीरिक, मानसिक और नैतिक योग्यता का सम्यक् परिचय दिया। विश्वामित्र का यज्ञ दूषित करने वालों को तुमने अपने पराक्रम से दण्ड दिया। सीता के स्वयम्वर के समय राजा जनक तथा उपस्थित जनता को जो यह आशङ्का हो चली थी कि पृथ्वी वीर-विहीन होगयी है, उसे तुमने तर्क से नहीं, कार्य से—धनुष तोड़कर—निवारण किया। पश्चात् उत्तेजित परशुराम जी को शान्त करने के लिए तुम में विनय और विवेक की मात्रा भी कुछ कम न थी। इस प्रकार जहां जैसी आवश्यकता हुई, तुम उसके लिए यथेष्ठ गुण-सम्पन्न पाये गये। तुम धन्य हो !

× × × ×

महाराज ! तुमने उस उच्च कुल में जन्म ग्रहण किया था, जिसके विषय में कहा गया है कि—

रघुकुल रीति यहै चलि आयी। प्राण जांय पर वचन न जायी ॥

इस कुल की मर्यादा को तुमने जिस भांति निभाया, उसकी कहां तक प्रशंसा की जाय। तुम्हारे राज्याभिषेक की तैया-रियां हो चुकी थीं; और तुम अपने पिता के प्रस्तावानुसार ही नहीं, समस्त राज्य भर के नागरिकों और कर्मचारियों की

स्वीकृति से राजगद्दी को सुशोभित करने वाले थे। इतने में तुम्हें सूचना मिलती है कि पिता के वचन की रक्षा करने के लिए आवश्यक है कि तुम न केवल राज्य-त्याग करो, वरन् वन में जाकर रहो, सो भी महिने दो महिने नहीं, वर्ष दो वर्ष भी नहीं, पूरे चौदह वर्ष! साधारण मनुष्य के लिए यह सूचना वज्रपात के समान होती। वह राज-विद्रोह की पताका फहरा कर भयङ्कर रक्त-पात का दृश्य उपस्थित करने में कुछ आनाकानी न करता। तुमने ऐसी कोई बात न की, अपने त्याग से संसार को चकित कर दिया। अपने मन में तनिक भी मैल न लाकर, तुम वन के लिए वैसे ही हर्ष और उत्साह से रवाना हुए, जैसे कि कोई राजतिलक के लिए जाता हो। तुम धन्य हो! तुम्हारी यह विलक्षण कर्तव्य-भक्ति, अब भी तुम्हारे चरित्र-पाठकों में अद्भुत् भावनाओं का सञ्चार करती है।

× × × ×

महाभाग! तुम्हारे तो भाई बन्धु और सहधर्मणी सभी का चरित्र विलक्षण है; मुग्धकारी है। लक्ष्मण तुमसे अलग रहना ही नहीं चाहता। तुम्हारी सेवा के लिए वह स्वयं अपने बनवास की याचना करता है। तपस्वी और निर्लोभी भरत तुम्हारी अनुपस्थिति में राज्य को ठुकरा देता है और तुम्हारी पादुकायें राज गद्दी पर रख कर, तुम्हारे एक सेवक और प्रतिनिधि के रूप में राज-काज संभालता है। शत्रुघ्न तुम्हारे वियोग में अलग ही व्याकुल रहता है। ओफ! भ्रातृ-प्रेम का यह दृष्टान्त क्या इसी पृथ्वी पर था? क्या इसी भारत भूमि पर था? भारतवर्ष ने अपनी गोद में सीता

देवी को भी धारण किया, जिसने पति-भक्ति की पराकाष्ठा ही दिखादी। उस देवी के लिए राजमहल के सब सुख विद्यमान हैं, पर वह सबको ठुकराकर, बनवास में भी तुम्हारा साथ देने के लिए व्याकुल है, बेचैन है। किसी के समझाने बुझाने का उस पर कुछ असर नहीं होता। वह अपने कर्तव्य-पथ पर हिमांचल की भांति दृढ़ है, ध्रुव की तरह स्थिर है। वह क्षुद्र मनुष्यों की कल्पना से परे है, वह अपनी उपमा आप ही है। इस प्रकार के सम्बन्धियों के अतिरिक्त तुम्हारे अनन्य सेवक हनुमान जी भी कैसे गुणवान, जितेन्द्रिय, बलवान, और कर्तव्य-परायण थे। तुम इन सब का सहयोग पा सके, तुम भाग्यशाली थे। तुम वन्दनीय हो।

× × × ×

महाराज! तुम महान् थे। तुम्हारा हृदय विशाल था। तुम सबको समान समझते थे। ऊंच-नीच या छूआ-छूत का तुम्हें कैसे विचार हो सकता था? तुम्हारा निषाद के यहां आतिथ्य स्वीकार करना, उसे अपना बन्धु समझना, प्रेम-पूर्वक दिये हुए शबरी के भी बेरों को प्रसन्नता-पूर्वक ग्रहण करना आदि तुम्हारे जीवन की घटनायें कितनी विचारणीय हैं। हिन्दू जाति इनका ठीक ठीक अर्थ समझे, और इनसे समुचित शिक्षा ग्रहण करे तो यहां सङ्गठन और राष्ट्र-निर्म्माण का कार्य कितना सुगम होजाय।

× × × ×

महाराज! तुम्हारे बनवास के समय जब जैसा कर्तव्य उपस्थित हुआ, तुम उसके लिए सदैव तैयार पाये गये। ऋषि मुनियों की रक्षा करना, साधु महात्माओं की

सेवा करना, दीनों का दुःख दूर करना तो तुम्हारा नित्य का कार्य ही था। स्त्री जाति का अनादर तुम कैसे सहन कर सकते थे? सीता जी को हरण करने वाले रावण को दण्ड देकर अन्य आततायियों को शिक्षा देना तुम्हारे लिए अनिवार्य था। वह लङ्कापति है और बहुत पराक्रमी है तो क्या, उसके पास असंख्य सेना और विपुल सैनिक सामग्री है तो क्या? तुमने वहां, अपने राज्य की सहायता से वञ्चित होने पर भी, कुछ थोड़े से वानरों (नर-विशेषों) के आसरे उस पर धावा बोल दिया। भरत से सहायता की याचना करना तुमने अपने स्वाभिमान के विरुद्ध समझा, और स्वयं अपने ही कौशल, सङ्गठन, और बाहु-बल से रावण और उसके सहयोगियों को यमलोक पहुंचा दिया। और हां, यह बात भी तुम्हारी कुछ कम वीरता या उदारता की सूचक नहीं है कि लङ्का जीत कर तुमने न तो उसे अपने भाई बंधुओं के हवाले किया, और न वहां कोई कर ही लगाया, वरन् उसे वहां वालों को ही लौटाना अपना कर्तव्य समझा। क्या संसार के आधुनिक स्वार्थ-लोलुप साम्राज्यवादी तुम्हारे उदाहरण से कुछ शिक्षा लेंगे?

× × × ×

हे आदर्श शासक! तुम्हारा प्रजा-रंजन संसार के इतिहास में अपना अमिट स्थान रखता है। तुमने कहा था कि स्नेह, दया, सुख आदि की तो बात ही क्या, प्रजा के हितार्थ तो यदि प्राण-प्रिय जानकी को भी छोड़ना पड़े तो मुझे कोई आपत्ति न होगी। परीक्षा का समय आया, और तुमने अपने वचन को पूरा करके दिखा दिया। सीता का त्याग तुम्हारे

लिए क्या अर्थ रखता था, वह तुम्हें कितनी कठोर यातना देने वाला था, इसे तुम्हीं जानते थे, या इसे जाना उस सीता देवी ने, जो तुम्हारे हृदय के अत्यन्त निकट थी, जो वास्तव में तुम्हारी अर्द्धांगिनी थी, जो स्वयं बलिदान होकर भी सदैव तुम्हारी कीर्ति बढ़ाने की इच्छुक थी। ओह! राजा के कर्तव्य का पालन करना कितना कठिन और सङ्कट-दायक है; पर उन्हीं के लिए तो, जो तुम्हारी भांति उस पद का महत्व और उत्तरदायित्व समझते हों। तुमने ऋषियों, विद्वानों और ब्राह्मणों की सम्मति से शासन और व्यवस्था का कार्य ऐसी उत्तम रीति से सम्पादन किया कि अच्छा राज्य अब तक 'राम राज्य' कहा जाता है। राजस्व की प्राप्ति और व्यय में, कर्मचारियों की नियुक्ति में, तथा न्याय आदि में तुमने चिरकाल के लिए अनुकरणीय आदर्श उपस्थित किया! तुम्हें सादर नमस्कार!

× × × ×

महाराज! अब तो लीला ही और है, स्वयं तुम्हारे वंशज, तुम्हारे उत्तराधिकारी होने का अभिमान करने वाले भारतीय नरेश भी प्रायः यह सुनना या सोचना नहीं चाहते कि 'जासु राज प्रिय प्रजा दुखारी' की अगली पंक्ति क्या है। अधिकार मद में या अज्ञान-वश होकर अनेक कूटनीतिज्ञ कहते हैं कि राम राज्य का अर्थ है स्वेच्छाचारी, अनियंत्रित, आडम्बर-पूर्ण राज्य, जिसमें निर्वाचन और प्रतिनिधि-प्रथा न हो, व्यवस्थापक सभा न हो, राजा करे सो न्याय हो। संसार में नयी नयी शासन पद्धतियां प्रचलित हैं, पर वास्तविक राम राज्य तो किसी बिरले ही भू-खण्ड में होगा।

स्वाधीन कहे जाने वाले देशों में सर्व साधारण का कुछ कुछ अंकुश होने पर भी पूंजीपति या भूमिपति समय-बे-समय अपना अत्याचार कर ही डालते हैं। फिर पराधीन देशों का तो राम ही बेली है।

× × × ×

महानुभाव ! आज कल अनेक देशों में राजकुमारों से कोई कठिन कार्य कराना उचित नहीं समझा जाता। उन्हें थोडा सा पढ़ना लिखना सिखा कर अपरिमित द्रव्य लुटाते हुए विदेश घुमाया जाता है, जिससे वे तरह तरह की विलासिता और शौकीनी का पाठ पढ़लें। प्रजा से भांति भांति के कर वसूल करने के वास्ते उन्हें कुछ कूट नीति या कानून बता दिया जाता है। और हां, उन्हें यह भी समझा दिया जाता है कि लोगों को ऐसा दबा कर तथा अशिक्षित रखा जाय कि वे अपने अधिकारों को न जानें, और किसी प्रकार के अन्याय या अनीति के विरुद्ध खड़े होने का साहस न कर सकें। परन्तु हे शासक-शिरोमणि ! तुमने अपने जीवन से यह बतला दिया कि आदर्श शासक बनने का यह मार्ग नहीं है। 'राम राज्य' करने की योग्यता तो तभी प्राप्त होगी, जब कोई राम की भांति त्याग और तपस्या का जीवन व्यतीत करले। जब तक राजकुमार अपने राजकीय ठाठ को अलग करके, साधारण नागरिक की भांति समाज की सेवा और सहायता करना न सीखेंगे, वे कदापि योग्यता-पूर्वक राज्य-कार्य करने में समर्थ न होंगे।

× × × ×

भगवन् ! तुम्हारे नाम की महिमा इतनी समझी जाती है, कि हम एक दूसरे को अभिवादन करते समय 'राम राम' कहते हैं, और किसी के मरने पर 'राम नाम नाम सत्य है' का उच्चारण करते हैं। रामनवमी के दिन व्रत उपवास करते हैं, प्रति वर्ष विजय दशमी को धूम धाम और खेल तमाशे भी करते हैं; पर तुम्हारे कर्तव्य-निष्ठ जीवन को नहीं समझते। तुम्हारे नाम पर तरह तरह का धंधा करने वालों की कमी नहीं, रामलीला और नाटक वालों ने तुम्हारे नये नये स्वरूप उपस्थित करने का ठेका ले लिया है, विचित्र विचित्र विदेशी पोशाक पहनाने और खिचड़ी भाषा बुलवाने में प्रत्येक दूसरों का प्रतिस्पर्द्धी है। जैसे निर्बल, नाजुक-बदन या नज़ाकत-पसन्द छोकरे आज कल रामचन्द्र बनते हैं, उन्हें देखकर हमें आश्चर्य होता है कि तुमने सीता के स्वयम्बर में शिव धनुष कैसे तोड़ा, या राक्षसों और गुण्डों को दंड कैसे दिया होगा। हम तुम्हारे सत्य स्वरूप को कब समझेंगे ?

× × × ×

भगवन् ! हमारी दशा बुरी है, क्या क्या कहें ? स्वार्थी शासकों के, बदमाशों और गुण्डों के, दुर्बल और स्वार्थी भक्तों के घट-घट में तुम्हारे महान् जीवन का कर्तव्य-पूर्ण सन्देश समुचित रूप से पहुंचे, तो भारत के दिन फिरने में देर न लगे; नहीं, नहीं, जगत का ही यथेष्ट कल्याण हो। हे सत्य, शील और कर्तव्य के अवतार ! हमें सुमार्ग पर लाओ और उन्नति-पथ के पथिक बनाओ !

(३)

श्रीकृष्ण के प्रति

हे आनन्दकन्द ! तुम्हारे शुभागमन के समय भारतवर्ष कैसी विचित्र स्थिति का अनुभव कर रहा था। स्वतंत्र हिन्दू राज्यों की ऐहिक उन्नति चरम सीमा को पहुंच गयी थी; देश खान पान के ही नहीं आनन्द और उपभोग के, आवश्यकता से अधिक साधनों से सम्पन्न था। तेजस्वी, सती साध्वी और पतिव्रता स्त्रियों के उदाहरण-स्वरूप गान्धारी आदि विद्यमान थीं। युधिष्ठिर जैसे सत्यव्रति, त्याग-मूर्ति भीष्म पितामह जैसे धनुर्धारी, बालक अभिमन्यु जैसे महारथी, और कर्ण जैसे दानी महापुरुषों की भी कमी न थी। परन्तु, दुख की बात यह थी कि राज्य-सूत्रधार चरित्र-भ्रष्ट होगये थे, उनमें दुराचार, विलासिता तथा वाह्याडम्बर आदि दुर्गुण पराकाष्ठा को पहुंच गये थे। प्रजा बडे संकट में थी, चहुंओर से त्राहि त्राहि की आवाज़ आरही थी। ऐसा समय था जब तुमने इस भूतल पर अवतार ग्रहण करके सर्वत्र आनन्द की वर्षा की।

× × × ×

हे गोपाल ! वाल्यावस्था में गौओं की रक्षा और भरण पोषण करके तुमने दर्शा दिया कि दीन, बे-ज़बान और दुर्बलों के प्रति तुम्हारे हृदय में कितनी दया है, उनकी सेवा करने में तुम्हें कितना सुख है। राजवंश, या सम्पन्न कुल आदि का झूठा अभिमान तुम्हें अपने ऐसे पवित्र कर्तव्य के पालन करने से कैसे रोक सकता था ! तुम गौओं की महत्ता तथा

उपयोगिता, और कृषि-प्रधान भारत में उनके 'माता' विशेषण की सार्थकता भली भांति समझते थे, इसलिए गौओं के प्रति तुम्हारी अनन्य भक्ति होना स्वाभाविक था; और, तुम्हारी भक्ति में पूजा का आडम्बर नहीं था, वह सार-युक्त थी, कल्याणकारी थी। तुम वास्तव में 'गोपाल' थे, तुम दीनबन्धु थे, तुम पृथ्वी-पाल थे। तुम धन्य हो।

× × × ×

हे प्रेम-मूर्ति ! तुम्हारी मुस्कान, तुम्हारा मृदु भाषण, तुम्हारी वंशी की मीठी तान तो ग्वाल-बाल और गोपियों आदि नर नारी और बाल वृद्ध की कौन कहे, पशु पक्षियों तक को मुग्ध करने वाली थी। तुम सब से ऐसे हिल मिल कर, ऐसे प्रेम-पूर्वक रहते थे कि वे तुम्हारे लिए सर्वस्व न्यौछावर करने को सदैव तत्पर थे। कोई तुम से अलग रहना ही नहीं चाहता था। तुम्हारी जुदाई सबको बे-तरह व्याकुल करती थी। तुम भिन्न भिन्न प्रकृति वाले सब मनुष्यों के मन को अपनी ओर आकर्षित करने वाले थे, तुम्हारा 'कृष्ण' नाम उपयुक्त ही था। तुम मोहन थे। मुरली-मनोहर थे। गोवर्द्धन धारी होते हुए भी तुम 'वंशीधर' प्रसिद्ध थे। तुमने जैसे अपने कार्यों से, वैसे ही अपने स्वरूप से, अपने भाव, बर्ताव, सम्भाषण आदि से, भक्तों का दुख दूर किया, और उन्हें विशुद्ध उच्च कोटि के प्रेम-पथ का पथिक बना दिया।

× × × ×

हे आदर्श शिष्य ! तुम जगद्-गुरू प्रसिद्ध हुए; पर तभी

तो जब कि पहले विद्यार्थी जीवन में उच्च आदर्श से कार्य कर चुके थे। धन्य है तुम्हारी गुरु-भक्ति ! तुम धन-सम्पन्न होकर भी साधारण स्थिति के युवकों के साथ गुरुकुल में पढ़ते थे, और गुरु की सेवा करने में अपने सहपाठियों से किसी भांति कम न रहते थे। तुम्हारे मन में अहंकार भाव तो था ही नहीं। तुम अपने साथियों को अपना भाई बन्धु समझते थे। अहा ! निर्धन सुदामा के साथ जो प्रेम व्यवहार तुमने दर्शाया, वह आज कल उदारता की डींग मारने वाली बडी बड़ी शिक्षा संस्थाओं के विद्यार्थियों के लिए दृष्टान्त-स्वरूप है।

× × × ×

महात्मन् ! घोर अन्धकार काल में, तुम्हारा शुभागमन तुम्हारे इस कथन का प्रत्यक्ष प्रमाण है, कि जब जब धर्म की ग्लानि होती है, तब तब अधर्म को दूर करने के लिए, धर्म की संस्थापना और सज्जनों की रक्षा करने के लिए, परमात्मा की कोई विभूति अवश्य आती है। उस समय राजा के पद को कंस, जरासंध, शिशुपाल और दुर्योधन आदि कलंकित कर रहे थे। अपने अहंकार मद में, उन्हें प्रजा के हित-चिन्तन का ध्यान ही नहीं रहा था। वे रक्षक के भेष में साक्षात् भक्षक बने हुए थे, दिन दहाड़े स्त्री जाति का सर्वस्व अपहरण करने में, धर्मात्माओं को नाना-विध कष्ट देने में इन्हें लज्जा नहीं रही थी। फिर उनकी देखा देखी, सर्व साधारण मनुष्यों के आचार विचार कलुषित हों, तो आश्चर्य ही क्या ? मनुष्य जाति के मानवी गुणों से, मनुष्यत्व से, वंचित होने में संदेह ही क्या रहा था ? तुम आये और

तुमने समय की दिशा ही बदल दी। नये ही युग का निर्म्माण कर दिया। हे युग-प्रवर्तक! तुम्हें सादर नमस्कार!

× × × × ×

हे धर्म संस्थापक! बहुधा अत्याचारियों को जब यह ज्ञात भी होजाता है कि उन्हें अपने दुष्कर्मों का फल भुगतना होगा, वे अपने अधिकार-मद में अन्धे बने रहते हैं, चेतावनी सुनकर अनसुनी कर देते हैं। कंस आदि की भी यही दशा हुई। उन्होंने अपने कर्म सुधारने की ओर ध्यान ही नहीं दिया। परन्तु, पाप का घड़ा भरजाने पर उसके फूटने का साधन अवश्य ही उपस्थित होजायगा, इस अटल नियम की अवहेलना कैसे हो सकती थी। तुम्हारा आविर्भाव हुआ। अवस्था पाकर तुमने उन दुष्टों की भौतिक लीला का अन्त करके यह दर्शा दिया कि अति दारुण दुखों की भी एक अवधि होती है; काली रात समाप्त होकर सुप्रभात का शुभा-गमन अनिवार्य है। लोगों ने जान लिया कि तुम्हारे जैसे धर्म-प्रेमी अपने किसी सगे सम्बन्धी का पक्षपात नहीं करते, किसी अन्यायी को न्यायोचित दंड देने से नहीं चूकते।

× × × × ×

भगवन्! तुम्हारे जीवन में एक से एक अधिक विचार-णीय बात मिलती है। तथापि एक प्रधान बात है तुम्हारा अहंकारियों को नीचा दिखाना, गिरे हुओं को ऊपर उठाना, और, इस प्रकार संसार को विशुद्ध और व्यापक समतावाद की अनुपम शिक्षा देना। 'गोवर्द्धन' आदि लीला करके तुमने इन्द्र जैसे देवताओं का दर्प चूर्ण किया, और गो वंश की

महिमा बढ़ायी। ग्वालों के साथ हिल मिलकर तुमने सर्व साधारण का मान बढ़ाया। गोपियों को ईश्वर-दर्शन का अधिकारी सिद्ध करके तुमने मनुष्यों की दृष्टि में स्त्री जाति को आदर प्रदान कराया। दुष्ट शासकों को दंड देकर, और स्वयं अपने लिए या अपने वंश (यदुवंश) वालों के लिए राज-पद स्वीकार न करके तुमने प्रजातंत्र के प्रचार को उत्तेजना दी। हे समदर्शी! तुम धन्य हो! तुम्हें सादर प्रणाम!

× × × × ×

हे योगीश्वर! महाभारत में तो तुम्हारी कलाओं का और भी विकास देखने में आया। उस समय जब शान्ति की बातों से काम न चला तो क्रान्ति की आयोजना करने में तुम कब चूकने वाले थे। बस! कौरवों और पांडवों की छिड़ गयी। पर यह क्या? ऐन वक्त पर अर्जुन कैसा हत-बुद्धि होजाता है। वह मामा, चाचा, ताऊ, गुरू आदि को पापी जानते हुए भी, मोह वश, उनके विरुद्ध हथियार उठाने में झिझकता है, वह हिन्सा अहिन्सा के झमेले में पड़ा है, वह हिन्सा के भय से पापी की भी हिन्सा करना नहीं चाहता। तुमने उसकी शंकाएं निवारण कीं। तुम्हारे उपदेश ने उसे धर्म-युद्ध करने के लिए प्रेरित किया। तुमने बतलाया कि जिस प्रकार मनुष्य पुराने वस्त्रों को उतार कर नये पहिन लेता है, उसी प्रकार आत्मा पुराने शरीर को छोड़कर नया धारण करती रहती है। मनुष्य का एक जीवन पूरा होजाने पर वह नया जन्म ले लेता है। इसमें कुछ शोक न होना चाहिये। शरीर नाशमान है, परन्तु आत्मा अमर है। यह अजन्मा और अजर है। इसे

न शस्त्र काट सकता है, न अग्नि जला सकती है; न जल भिगो सकता है, और न वायु सुखा सकती है। इन बातों को सुन्दर रीति से समझाते हुए तुमने बतलाया कि किसी अन्याय को कदापि सहन न करो, सदैव उसका प्रतिकार करते रहो। पापी और आततायियों को दंड देने में अपने पराये का विचार न करो। ये सब सम्बन्ध क्षणिक हैं। कभी मोह या लोभ के वशीभूत न हो। इस प्रकार की, प्रति दिन काम आने वाली, जीवन की ग्रन्थियों को सुलझाने वाली शिक्षा देने वाले, हे योगीश्वर! तुम धन्य हो। तुम्हें सहस्र सहस्र प्रणाम।

× × × × ×

हे कर्मयोगी! अर्जुन के सामने यह समस्या थी, और संसार में सभी के सामने समय समय पर यह समस्या उपस्थित होती रहती है कि कर्म करना चाहिये, या नहीं, अथवा, भिन्न भिन्न कर्मों में से कौनसा करना और कौनसा छोड़ना चाहिये। तुमने बतलाया कि कोई जीवधारी क्षणभर के लिए बिना कर्म किये नहीं रह सकता, शरीर या मन से कुछ न कुछ कर्म हर समय करना ही होता है। यदि कर्म का त्याग सम्भव भी हो तो लोक शिक्षा के लिए, दूसरों के सामने अच्छा अनुकरणीय आदर्श उपस्थित करने के लिए कर्म करना ही उचित है। कर्म-त्याग नहीं करना चाहिये, कर्म करो, हां, निष्काम भाव से। कामना का त्याग करदो। फल की चिन्ता न करो। किसी इच्छा या वासना से प्रेरित होकर, स्वार्थ भाव से कर्म न करो। भूखे नंगों को अन्न वस्त्र दो, अज्ञानियों को विद्या दान दो, आततायियों को समुचित दंड दो, अनाथ दीन

दुखियों की रक्षा करो, रोगियों की सेवा करो, पर सब कुछ निस्वार्थ भाव से; अपना कर्तव्य समझकर, उसका फल ईश्वरार्पण करके। इस प्रकार कर्म का रहस्य समझाने वाले, तुम धन्य हो !

× × × × ×

हे जगद्‌गुरु ! तुम्हारा अमर गीत गीता संसार के साहित्य, नीति और धर्म का कैसा सर्व श्रेष्ठ ग्रन्थ-रत्न है । कितना सुखद ज्ञान भंडार है। विश्व धर्म का तुमने कैसा सहज स्वरूप दर्शाया है। तुमने बतलाया है कि जो जिस भाव से, जिस मार्ग से मेरे पास आता है, मैं उसे उसी भाव और उसी मार्ग से मिल जाता हूं। संसार में धर्म अनेक हैं, भाषा अनेक हैं, अवतार, पीर और पैग़म्बर अनेक होगये हैं, परन्तु विचार कर देखा जाय तो सत्य एकही है, तत्व एकही है । तुम्हारा यह उपदेश विविध मत मतान्तरों के कलहों और रक्त-पात को रोकने के लिए कैसा राम-वाण है। तुमने सब मतों का समन्वय, सब धर्मों का एकीकरण कर दिया। तुमने धार्मिक सहिष्णुता का उच्च आदर्श उपस्थित करदिया। तुम धन्य हो !

× × × × ×

महाराज ! हमें क्षमा करना । हमने तुम्हें ठीक नहीं समझा, या समझकर भी भूल गये । रसिक कुकवियों और कुलेखकों के हाथ तुम्हारे चरित्र की घोर दुर्गति की गयी। हम में से अधिकांश आदमी अब तुम्हारे जीवन की महत्ता पर विचार नहीं करते। तुम्हारे नाम पर रास लीला करते हैं, नाटक करते हैं, व्रत उपवास रखते हैं, और न जाने क्या

क्या करके प्रायः भारत शक्ति और लक्ष्मी का दुरुपयोग करते हैं। कुछ भक्त लोग गीता का पाठ भी करते हैं । कहीं कहीं कुछ आदमी उसका अधूरा सा अर्थ लगाकर गृह-त्यागी, वैरागी बनजाते हैं। पर कितने हैं, जो सच्चा इन्द्रिय-दमन करते हुए, जीवन व्यतीत करते हैं, या जो अपनी देह की, तथा सगे सम्बन्धियों की मोह ममता छोड़कर देश भक्ति या सत्य की सेवा के हेतु, अपना बलिदान करने को सहर्ष तत्पर हों। भगवन् ! अब इस भूमि पर पुनः धर्म की ग्लानि बहुत होरही है। तुम शीघ्र यहां पधारो। पुनः हमें निष्काम कर्म की शिक्षा दो; मानव जनता को विश्व-बन्धुत्व की दीक्षा देकर इस संसार की रक्षा करो। भगवन् हमारी सुधि लो । हमें न बिसारो। तुम्हारी बड़ी प्रतीक्षा है।

(४)

गौतम बुद्ध के प्रति

हे त्याग मूर्ति ! यहां पुनः कैसी शोचनीय परिस्थिति होगयी थी। मानसिक दासता के बन्धन दृढ़ होने लगे थे, जाति पांति का भेद भाव बढ़गया था। यज्ञों में पशु-बध की वृद्धि हो चली थी। शास्त्रों और धर्म के नाम पर विविध भ्रष्टाचार होने लगे थे। ऐसे अवसर पर तुमने यहां पधार कर आर्य जाति की विचार धारा को परिष्कृत किया, कुरीतियों का खंडन किया, सामाजिक और धार्मिक कृत्यों की नींव प्रेम और सदाचार पर रखी। तुम्हें अनेकशः नमस्कार !

× × × ×

हे दया के अवतार ! तुम्हारी महिमा का वर्णन किस प्रकार किया जाय। वास्तविक सुख प्राप्त करने का एक मात्र उपाय यह है कि 'सुख' कहे जाने वाले अनेक सांसारिक सुखों को त्याग दिया जाय; यह बात तुमने अपने उपदेशों से, जितनी उत्तमता से बतलायी, उससे अधिक अच्छी तरह तुमने अपने जीवन के दृष्टान्त से दर्शायी। राज-परिवार में उत्पन्न, अपने माता पिता के इकलौते पुत्र ! तुम्हें कमी ही क्या थी ? विविध उपभोग के पदार्थ तुम्हारी इच्छा मात्र से प्रस्तुत होते थे। तुमने अपनी भरी जवानी में सबको छोड़ दिया। अपनी सुन्दर सुकुमार प्यारी स्त्री को, और नव-जात मोह-बन्धन प्रिय शिशु को भी छोड़ दिया। वर्षों वृक्षों के कन्द मूल फल आदि खाकर रहे, और अनेक बार बिना कुछ

खाये ही रहे। कठिन साधनाओं द्वारा तुमने अपनी वासनाओं को दूर कर दिया। तुमने बतला दिया कि संकल्प शक्ति के सन्मुख मोह ममता, सुखों के प्रलोभन या दुखों की भयंकरता आदि कोई विघ्न नहीं ठहर सकता। अनेक प्रकार के कष्ट सहकर तुमने न केवल अपने लिए, वरन समस्त मनुष्य संतान के वास्ते अनन्त सुख प्राप्त किया। अहा! तुम्हारा यह त्याग, और ऐसी सुख-प्राप्ति धन्य है, स्तुत्य है, अभिनन्दनीय है, और बड़े बड़ों के लिए ईर्ष्याजनक है।

× × × ×

तुम्हारी शिक्षा कितनी सरल और सुबोध है! तुम्हारे उपदेश कितने सुन्दर और कल्याणकारी हैं! सब मनुष्य समान हैं। गोरे, काले, पीले सब बराबर हैं। जाति-पांति से कोई ऊँच नीच नहीं। ये कृत्रिम भेद भाव मान्य नहीं। किसी विशेष देश या विशेष वंश आदि में जन्म लेने के कारण कोई विशेष अधिकारों का अधिकारी नहीं। ऊँचा बनने के लिए, मनुष्य का कार्य उच्च होना चाहिये। हमारे जीवन में सच्चाई, पवित्रता और दया भाव होना चाहिये। दया केवल सजातीय या सवर्ण के लिए नहीं, मनुष्य मात्र के लिए हो। यही नहीं; बेज़बान, भोले-भाले जीव भी हमारी दया और प्रेम के अधिकारी हों। अपने स्वार्थ या मनोरञ्जन के लिए, अपनी उदरपूर्ति या जिह्वा के क्षणिक स्वाद के लिए, पशु पक्षियों की हत्या करना निन्द्य है। धर्म के नाम पर भी बलिदान या कुर्बानी करना अधर्म है। किसी को मत सताओ, सब के तुम्हारी की सी जान है। दूसरों से वैसा ही बर्ताव

करो, जैसा तुम चाहते हो कि वे तुमसे करें। इस सुन्दर और परोपकारी उपदेशामृत की तुमने चहुँ ओर वर्षा की।

× × × ×

तुमने अपना उपदेश उच्च जात्याभिमानियों के लिए, या उनमें भी केवल पुरुषों के लिए सुरक्षित नहीं रखा, तुमने अपने धर्म-धन का ख़ज़ाना नीच समझे जाने वाले शूद्रों, अन्त्यजों, अछूतों और स्त्रियों के लिए भी समान रूप से खोल दिया। तर्क वितर्क और पाण्डित्य की बातें न करके, तुमने जनता की समझ में आने वाली, उस समय की सरल सीधी भाषा में ही लोगों को शुद्ध आचार व्यवहार की महिमा दर्शायी। तुमने प्रत्येक व्यक्ति को दीक्षा लेने और 'श्रमण' (बौद्ध धर्मानुयायी साधु) बनने की अनुमति दी। फिर क्यों न असंख्य आदमी तुम्हारे अनुयायी बनते ? क्यों न बौद्ध धर्म उस पुराने ज़माने में, आने जाने की सुविधाओं के अभाव में भी, एशिया महाद्वीप के भिन्न भिन्न देशों में फैलता ?

× × × ×

हे करुणाकर ! भारतवर्ष में बौद्ध धर्मावलम्बी कहे जाने वालों की संख्या भले ही कम हो, परन्तु कौन यह कहने का साहस कर सकता है कि इस धर्म का भाव (Spirit) यहां से निकल गया ? यहां तुम्हारी गणना विष्णु के चौवीस अवतारों में होती है। अधिकांश भारतवासी दया को धर्म का मूल समझते हैं। 'अहिंसा परमो धर्मः' सिद्धान्त के समर्थक यहां से अधिक संसार के और किसी देश में नहीं पाये जाते। निस्सन्देह तुमने वेद और ईश्वर के नाम पर होने वाले हिंसा कार्य को देख कर इन दोनों के सम्बन्ध में उदासीनता धारण की थी, पर तुम्हारे कुछ अनुयायियों ने

तो तुम्हें हिन्दुत्व-विरोधी ही सिद्ध कर दिखलाया। वे भूल गये कि पुनर्जन्म, मोक्ष या निर्वाण आदि के मूल तत्वों का जैसा तुमने प्रतिपादन किया, वह हिन्दू सिद्धान्तों के अनुकूल ही तो है। उन लोगों की अल्पज्ञता, अदूर्दर्शिता, आलस्य और आचार-हीनता ने यहां के लोगों की बौद्ध धर्म के प्रति सहानुभूति घटा दी। अन्यथा, अहिंसा-प्रधान हिंदू धर्म में, विशेषतया वैष्णव धर्म में, एक प्रकार से बौद्ध धर्म का ही पुनर्जन्म हुआ है। तुम्हारे बहुत से भक्त जन इस विषय को इस दृष्टि से देखने के लिए तैयार नहीं हैं। विचार किया जाय तो अधिकांश हिंदुओं का धर्म उस धर्म से मिलता हुआ सा ही है, जो चीन, जापान, श्याम, लङ्का आदि में है। अहा ! जब इन विविध देशों के आदमी इस तत्व को समझ लेंगे तो इन के धार्मिक क्षेत्र की कैसी काया-पलट होगी।

× × ×

भगवन् ! अज्ञानी या अंध भक्त किस सिद्धान्त का अनर्थ नहीं कर डालते ? अनेक स्थानों या अवसरों पर कुछ आदमी अपनी कायरता को छुपाने के लिए तुम्हारी अहिन्सा की शरण लेते हैं। वे दुष्टों और आततायियों से अपनी मां बहिनों या अनाथों की रक्षा नहीं करते और मातृ-भूमि को पराधीनता पाश में फंसने देते हैं। कुछ अहिन्सावादी कृषि कार्य, हल चलाने आदि से घृणा करते हैं। वे नित्य अन्न खाते हैं, और कृषि-जन्य पदार्थों का सेवन करते हैं, फिर इन चीजों को पैदा करने वालों को ही क्यों पाप का भागी समझते हैं ? वे स्वयं भी तो दोष भागी हैं। शोक का विषय है कि मनुष्यों की रोज़ मर्रा के अन्य आवश्यक कार्यों

शिल्प, कला कौशल, और दस्तकारी आदि में हिन्सा का विचार करके, इन कार्यों को करने वालों को नीच जाति का बताया जाने लगा। यहां तक कि कपड़े धोना, स्नान और मंजन करना, मकानों को साफ करना, उन के जाले झाड़ना आदि स्वास्थ सम्बन्धी बातों की भी अहिन्सा के नाम पर अवहेलना की जाती है, यद्यपि इस से बीमारी बढ़ती है, मृत्यु संख्या (हिन्सा) की वृद्धि होती है। इसी प्रकार तुम्हारे अन्य सिद्धान्तों की भी अनेक आदमी बडी दुर्दशा कर रहे हैं। तुमने झूठे त्याग और झूठी तपस्या के विरुद्ध आवाज़ उठा कर लोगों को सदाचार, सद् व्यवहार की महिमा बतलायी थी। परन्तु समय की बलिहारी है कि हम बहुत से बौद्ध धर्मावलम्बियों को फिर नाना प्रकार के बन्धनों, रीति रस्मों, खान पान और वस्त्र धारण के जटिल नियमों के पालन में ही अपनी अधिकांश शक्ति लगाते हुए पाते हैं।

महानुभाव ! तुम्हारे अनुयायी तुम्हारे उपदेशों को अक्षरशः पालन न करके उनके भाव की रक्षा करने वाले हों, तो संसार को इस समय पुनः अहिन्सा-धर्म की बडी आवश्यकता है। आज कल जीवों की तो बात ही क्या, मनुष्यों की भी अपरिमित हत्या की जा रही है। युद्ध हिन्सा जनता का नाश कर रही है। शान्ति के नाम पर संहारक अस्त्रों के नित नूतन आविष्कार किये जा रहे हैं। तुम्हारी शिक्षा हमें कब मिलेगी ? बौद्ध भिक्षुओं में तुम्हारे समान त्याग, उत्साह और विचार स्वातंत्र्य कब होगा ? संसार को तुम्हारे प्रेमोपदेश की अत्यन्त आवश्यकता है।

---

(५)

शंकराचार्य के प्रति

महान् दार्शनिक ! पुण्य भूमि भारत में, अहिन्सा और समानता का प्रचारक बौद्ध धर्म विकृत हो चला था। यह देश अनेक वेद विरोधी, एवं परस्पर विरोधी भिन्न भिन्न मत मतांतरों का घर बन रहा था। प्रत्येक मत के मानने वाले दूसरों के उपास्य देवों की निन्दा करते, तथा उन लोगों से लड़ते झगड़ते थे। इनका आचार विचार घृणित और सदाचार-नाशक था। हिन्दू समाज निर्बल और खंड खंड होरहा था। ऐसी परिस्थिति में तुम्हारा यहां शुभागमन हुआ। तुमने भारत के विविध स्थानों में पूर्व से पश्चिम, और उत्तर से दक्षिण तक घूम फिर कर, कुमार्ग-गामियों के आचार्यों से प्रबल तर्क और अद्भुत युक्तियों से शास्त्रार्थ करके उन्हें परास्त किया, गम्भीर विचार-पूर्ण कई ग्रन्थों की रचना की, सर्वत्र आस्तिकता और सुधार का नया श्रोत बहा दिया। तुम्हें सादर प्रणाम !

× × × ×

महात्मन् ! तुम्हारा दृढ़ संकल्प, आज भी मनुष्यों को चकित करने वाला है। जिस काम में तुमने हाथ डाला, उसे करके ही छोड़ा। इस सद्‌गुण का परिचय तुमने बाल्यावस्था में ही दे दिया था। तुम्हारे हृदय में वैराग्य भाव का उदय होजाने से तुम घर छोड़कर सन्यास लेने, और आजीवन ब्रह्मचारी रहने के इच्छुक थे। तुम्हारी माता को यह दुखदायी प्रतीत होता था, और वह तुम्हें ऐसा करने के लिए अनुमति

नहीं देती थी। परन्तु तुम्हारे चातुर्य और दृढ़ संकल्प के आगे उनके मोह को पराजित होना ही पड़ा। उन्होंने तुम्हारे अनुपम उद्देश — हिन्दु धर्म के पुनरुत्थान — की पूर्ति के लिए तुम्हारा वियोग सहन करना स्वीकार कर लिया, यद्यपि तुम उनके इकलौते पुत्र थे, और वे बेचारी वैधव्य दुख से भी दुखी थीं।

× × × ×

आधुनिक विचारक बहुधा यह भूल जाते हैं कि तुम्हें समाज की कैसी परिस्थिति का सुधार करना था। बात यह थी कि यहां विदेशी जातियां देश भर में फैली हुई थीं। इन जातियों के आदमी बौद्ध होकर भले ही हिन्दू बन जांय, पर उनके लिए सीधे मार्ग से हिन्दू बनना कठिन था। इस प्रकार भारतवर्ष में अ-हिन्दुओं की दिन दिन वृद्धि होती जा रही थी। तुमने बड़े गम्भीर चिन्तन के पश्चात् इन भिन्न भिन्न आचार विचार वाले आदमियों की पृथक पृथक् जातियां बनाकर, तथा उनके खान पान, विवाह सम्बन्ध, तीर्थ पूजा आदि के नियम निर्धारितकर, सबको हिन्दु जाति के अन्दर लाने की व्यवस्था करदी। तुमने तत्कालीन कठिन समस्या को बड़ी चतुराई से हल करके भेद भाव सूचक राष्ट्रीय संकट का निवारण कर दिया था।

× × × ×

तुमने सर्व साधारण को मानो यह संदेश सुनाया था कि हिन्दू धर्म अनेक कमरों और कोठरियों वाला एक विशाल शान्ति निकेतन है। प्रत्येक व्यक्ति-समूह अपनी अपनी आवश्यकता और परिस्थिति के अनुसार किसी ख़ास कमरे या

कोठरी को चुन सकता है। एक के स्थान में, दूसरे के स्थान से चाहे जितनी विभिन्नता हो, सबको यह स्मरण रखना चाहिये कि हम सब एक ही शान्ति निकेतन के निवासी हैं, एक ही परम पिता की संतान हैं; और परस्पर में धर्म-बन्धु हैं। जब तक हम लोग भेद भावों से विभक्त हैं, हम कोई महान् कार्य नहीं कर सकेंगे। हमें संगठन की अत्यन्त आवश्यकता है। संगठित होने पर, हिन्दू समाज सब प्रकार के कष्टों से मुक्त होजायगा, और भारतवर्ष को पुनः स्वर्गोपम बनायेगा। यही नहीं; वह संसार के सब दुख दारिद्र्य को दूर करेगा। इस प्रकार की कल्याणकारी शिक्षा देने वाले, तुम धन्य हो।

× × × ×

तुम्हारे हृदय की विशालता का परिचय हमें तुम्हारे इन सिद्धान्तों से भली भांति मिलता है, "प्रत्येक मत का आचार्य माननीय है, उसने देश काल और पात्र के अनुसार समाज का हित-साधन किया है। निर्गुण ब्रह्म की उपासना उच्च कोटि की है, पर सर्व साधारण सगुण या साकार ब्रह्म की पूजा कर सकते हैं।" परन्तु भगवन्! समय का चक्र कितना प्रवल है, तुम्हारे अनुयायियों ने इन्हीं सिद्धान्तों का आश्रय लेकर अपने अपने मंदिरों में भिन्न भिन्न मतों की मूर्तियां स्थापित करदीं; वे यह भी भूल गये कि प्रतिमा ध्यान लगाने का एक साधन मात्र है, साध्य नहीं है। वे प्रतिमाओं के वस्त्राभूषण और भोग आदि में असंख्य द्रव्य लुटाने लगे, जिससे उन्हें भी ऐश्वर्य के साधन तथा षटरस भोजन मिल सके। अनेक लोगों ने तो तरह तरह की ऐसी कथायें भी

रच डालीं, जिनसे उनके इष्ट देवताओं की महिमा बढ़े, और दूसरे मत वालों को सर्व साधारण निम्न श्रेणी का मानने लगें। बलिहारि है, इन धर्मात्माओं की ऐसी समझ की !

× × × ×

भगवन् ! अल्पज्ञ या स्वार्थी लोगों ने तुम्हारे अद्वैतवाद और मायावाद का जो अनर्थ किया है, उसे देखकर हृदय को मार्मिक वेदना हुए बिना नहीं रहती। अनेक अनुयायी अपने आपको ब्रह्म मानने लगे। वास्तविक सिद्धान्त को न समझ कर वे कर्म को बन्धन का हेतु, समझने लगे। वे जगह जगह यह उपदेश देने लगे कि न कोई कर्त्ता है, न भोक्ता है, सब झूठा झगड़ा है, संसार मिथ्या है, किसी को कुछ करने धरने की आवश्यकता नहीं है। इस प्रकार के विचारों से देश में अकर्मण्यता का भयंकर प्रचार होगया, अनेक आलसी आदमी साधु संत का बाना पहन कर गृहस्थियों के लिए भार-स्वरूप होगये। सार्वजनिक सेवा और परोपकार करना तो दूर रहा, उन्हें अपना भोजन बनाना भी दूभर होगया। अब बहुत समय तक प्रयत्न होते रहने पर भी कर्मभूमि भारत को इस अकर्मण्यता से छुटकारा नहीं मिल सका है। आपने इस संसार में केवल बत्तीस वर्ष रह कर अपने महान् सुधार, प्रचार, तथा साहित्य-कार्य से जिस कर्मवीरता का दृष्टान्त उपस्थित किया था, उससे आधुनिक साधु सन्यासी समुचित शिक्षा कब ग्रहण करेंगे ?

× × ×

आज दिन भी तुम्हारे नाम पर स्थापित किये हुए मठ विद्यमान हैं। शंकराचार्य भी हैं। उन के पास भक्तों, राजाओं,

ज़मीदारों और सेठ साहूकारों तथा सर्व साधारण की दी हुई अनन्त सम्पति भी है। परन्तु अनेक की दशा शोचनीय है। राजसी ठाठ, अहंकार, और ऐश्वर्य का विलक्षण दुखदायी प्रदर्शन है। वे आडम्बर, अपव्यय, अनाचार, मुक़दमेबाज़ी विद्वेष, कलह के जीते जागते उदाहरण हैं। और अफ़सोस! यह सब कुछ धर्म के नाम पर पालित पोषित हैं। परमात्मा करे, तुम्हारे भक्त जन अपने सार्वजनिक सेवा भाव से तुम्हारी गद्दी की मान मर्यादा रखने वाले तथा आधुनिक काल के लिए भी तुम्हारे नाम की महिमा बढ़ाने वाले हों। वे सदैव स्मरण रखें कि तुमने केरल नरेश की भेंट लौटा दी थी और कहा था, इन्हें हम क्या करें? भोजन के लिए भिक्षान्न मिल जाता है, पहनने के लिए मृग चर्म, और रहने के लिए भूतल है। फिर हमें हाथी घोडे और धनादिक राजसी ठाठ की क्या आवश्यकता है? हमारे लिए तो स्नान संध्यादिक कष्ट-साध्य कार्य ही सब कुछ हैं!" अहा! तुम्हारा त्याग, वैराग्य कितना अनुपम था, अब लोगों ने उसे कैसा भुला दिया है?

× × × ×

महात्मन्! तुम्हारी दिग्विजय कैसी अपूर्व थी! जनता की आध्यात्मिक उन्नति तथा धार्मिक तथा सामाजिक एकता के लिए तुम ने कितना उद्योग किया था। आज दिन तुम्हारे जैसे आन्दोलकों की भारत माता को कितनी आवश्यकता है, और आवश्यकता है किस देश को नहीं? तुम वन्दनीय हो, प्रातः स्मरणीय हो!

(६)

पद्मिनी के प्रति

वीरांगणे ! मनुष्यों का पतन भी कहां तक होजाता है ! दुष्ट नराधम राजगद्दी आदि कैसे भी उच्चासन पर विराज-मान हो जांय, उन का मन सदैव निम्न प्रकार की विषय वासनाओं में फंसा रहता है। उन का धर्म दूसरों की मान मर्यादा का अपहरण करना, मां बहिनों की इज्जत बिगाड़ना, होता है। उन की जाति मनुष्य-रूप होकर भी वास्तव में पैशाचिक, पाशाविक या दानवी होती है। सृष्टि के सौन्दर्य को देख कर उन्हें सर्व शक्तिमान जगदीश्वर की याद नहीं आती। उन्हें तो अपनी क्षुद्र भावनाओं को छल से, बल से, कपट, अनीति या दुर्नीति से, तृप्त करने की फ़िकर रहती है। ऐसे दुर्जनों का एक प्रतिनिधि था, अलाउद्दीन। उस की पाप दृष्टि तुम्हारे रूप लावण्य पर पड़ी थी। पर उसे दमकते हुए स्वर्ण के भीतर की उस अग्नि का बिल्कुल ज्ञान नहीं था, जो ज़रा भी स्पर्श करने वाले को समुचित दंड देकर रहती है। महाराणी ! तुम धन्य हो, तुमने एक अलाउद्दीन को अपने तेज, और पराक्रम, तथा कौशल का परिचय देकर, उस के से स्वभाव वाले सभी को यथेष्ठ शिक्षा दी।

× × × ×

धर्मपरायणे ! अलाउद्दीन ने सोचा था कि मेवाड़ का राज्य है ही क्या ? अपनी विशाल सेना से उसे पराजित

करना, और तुम्हें वश में कर लेना कौन कठिन कार्य है? उसे मालूम नहीं था कि अपनी बहू बेटियों की प्रतिष्ठा पर आघात पहुंचने का प्रसंग आते देख कर सच्चे राजपुत्र सिंह का रूप धारण कर लेते हैं, और पापियों को बात की बात में यम के घाट पहुंचा देते हैं। अलाउद्दीन अपने समस्त पाशविक बल की परीक्षा ले चुका, पर अपनी कुवासना को पूरा न कर सका! अब उसने छल से काम निकालना चाहा। उसने मेवाड़ाधीश से मित्रता करने का ढोंग रचा। वह उस के पास मिलने को आया। भोला भाला राणा उसके छल प्रपंचों को क्या जाने? वह शिष्टाचार के लिए, उस के डेरे पर निहत्था चल दिया। बस, दुष्टों को विश्वासघात के लिए इस से अच्छा अवसर और कब मिलता? अला-उद्दीन ने राणा को कैद कर लिया, और कह दिया कि इसे छुड़ाने के लिए स्वयं महारानी को मेरे पास आना चाहिये। महारानी! ऐसे विकट अवसर पर तुमने अपने धैर्य और चातुर्य का अनुपम परिचय दिया। तुम्हें सभक्ति नमस्कार!

× × × ×

हे राष्ट्र विभूति! तुमने धर्म रक्षा के लिए 'शठं प्रति शाठ्यं' का खूब व्यवहार किया। तुमने उस दुष्ट के पास जाना स्वीकार किया, पर उस से मंजूरी लेकर, तुम पालकियों में बैठा कर, अपनी सखी सहेलियों के रूप में, अस्त्र शस्त्र सुसज्जित सहस्रों वीर योद्धा भी उसके डेरे में लेगयीं; यही नहीं, पालकियों को उठाने वाले कहार भी तो वास्तव में सुयोग्य सैनिक थे। तुम्हारी इन सखियों और कहारों ने अलाउद्दीन और उस की सेना को परेशान कर दिया,

सर्वत्र भगदड़ मच गयी और तुम अपने प्राणनाथ के साथ सकुशल अपने गढ़ में आपहुँची; अनेक हृदयों से आवाज़ निकली, शाबाश शाबाश ! आज भी उस घटना का स्मरण हो आने पर सब तुम्हें धन्य धन्य कहते हैं।

× × × ×

हे महिला-शिरोमणि ! यदि अलाउद्दीन में थोड़ा सा भी विवेक होता, तो वह अपने किये पर पछताता और फिर सदैव के लिए सन्मार्ग पर आजाता; पर ऐसे लोगों के ज्ञान-चक्षु रहते ही नहीं। उसने कुछ वर्ष पीछे फिर चित्तौड़ पर धावा कर डाला। यद्यपि राजपूतों ने इस बार भी अपने प्राणों पर बाज़ी लगा दी थी, परन्तु दिल्लीपति की विशाल सेना के सामने उनकी संख्या बहुत ही न्यून थी। आख़िर, उनके क्षय का अनुभव करके, और यह देखकर दुष्ट दल क़िले में घुसे आरहे हैं, हे महाराणी ! तुमने अन्य राजपूत महिलाओं के साथ चिता में जल कर स्वयं अपने प्राण पखेरू उड़ा दिये। दुष्ट दल-पति इतना नर-संहार करा कर भी अपनी पाप वासना पूरी न कर सका। वह इतिहास का कलङ्क बना हुआ है, तो तुम्हारा अमर चरित्र स्वर्णाक्षरों में अङ्कित है।

× × × ×

अहा ! यही राजस्थान है, जहां मातायें अपने प्राण प्यारे पुत्रों को, कर्तव्य भूमि में भेजने के लिए, स्वयं उत्साहित करती थीं, बहिनें अपने भाइयों को धर्म-रक्षा के लिए सहर्ष मृत्यु-मुख में जाने के लिए विदा करती थीं। वीर पत्नी

रणक्षेत्र में एवं चिता पर अपने प्राणनाथ का साथ देकर अपने सहधर्मिणी पद को सार्थक करती थीं। महाराणी! आज तुम्हारी जन्म-भूमि की क्या दशा है? यहां की महिलायें कैसे अन्धकार में निमग्न हैं! घर की चार दिवारी के बाहर, कहां क्या हो रहा है, इस की इन्हें प्रायः कुछ सुधि ही नहीं है। देश-हित या धर्म-रक्षा के लिए ये क्या त्याग और कष्ट-सहन कर सकती हैं? इन्हें देख कर आश्चर्य होता है, क्या ये उसी राजस्थान की हैं जिस में तुम थीं? तुम्हारी लीला तो एक कहानी सी बन गयी है। परमात्मा करे, आधुनिक स्त्री-जगत तुम्हारे जीवन से समुचित उत्साह, स्फूर्ति और बलिदान के भावों का संचार प्राप्त करे। तुम्हारे अनुपम चरित्र से हम लोग जीने की शिक्षा लें, और मरना भी सीखें। हमारी मृत्यु वीरों की मृत्यु हो, वह कुत्तों, गीदड़ों या राक्षसों की मृत्यु न हो। महाराणी! तुम्हें सहस्र सहस्र नमस्कार!

(७)

कृष्ण चैतन्य के प्रति

हे प्रेम मूर्ति ! 'हरि बोल, हरि बोल' भी कैसा अनुपम मंत्र है। इस में कितना प्रेम है, कितनी भक्ति है, कितनी शक्ति है। जो सामर्थ्य इन चार अक्षरों में है, वह बड़े बड़े शस्त्रों में नहीं, तीर तलवार में नहीं, तोपों और हवाई जहाज़ों में नहीं। सहस्रों गुंडे और बदमाश एक तरफ़, और शुद्ध सात्विक भाव से "हरि नाम" की दीक्षा पाया हुआ एक व्यक्ति दूसरी तरफ़; फिर भी समष्टि के आगे, विजय होती है व्यक्ति की ही। तुम्हारा शुभागमन साढ़े चार सौ वर्ष पहले हुआ था; भारत भूमि के लिए वह समय कैसा विकट था। कई हिन्दू राज्य ध्वंस हो चुके थे। मुसलमान तलवार और धन, भय और लोभ, दोनों के बल से अपने धर्म का प्रचार कर रहे थे। दूसरी ओर हिन्दू जाति कई प्रकार की रूढ़ियों में फंस कर, नीच ऊंच का बेढब विचार रख कर, अ-ब्राह्मणों विशेषतया शूद्रों और अछूतों के प्रति दुर्व्यवहार करके, स्वयं शक्ति हीन होती जा रही थी। ऐसी परिस्थिति में महोदय ! तुम महान् कार्य कर गये। तुम्हें बारम्बार नमस्कार !

× × × ×

महात्मन् ! इस पुण्य भूमि पर धर्म-प्रचार तो समय समय पर अनेक महात्माओं ने किया है। पर तुम्हारा ढंग कुछ निराला ही था। तुम प्रेम-मय थे। तुमने अपने प्रेमा-

लाप से, हंसाते खिलाते ही सब को भक्त बना दिया। तुमने अपने शिष्यों के संकीर्तन से गली गली, और घर घर प्रेम-संदेश भेज दिया। लोग अपने अपने स्थान में ही नाचते गाते 'हरि बोल' के आनन्द में तल्लीन होगये। तुम धन्य हो!

× × × ×

महान शिक्षक! तुम जानते थे कि जो कार्य दूसरों को सिखाना हो, उसे स्वयं करके दिखाना चाहिये। तुमने अपने उदाहरणों द्वारा अपने भक्तों को सर्व साधारण के सन्मुख दीन, विनयी और नम्र रहने की शिक्षा दी। तुमने अपनी भक्ति के दृष्टान्त द्वारा दूसरों का सच्चा भक्त बनने का आदेश किया। स्वयं उच्च कोटि के प्रेमी बन कर औरों को प्रेम-पथ प्रदर्शित किया। आधुनिक नेता, गुरू शिक्षक और उपदेशकों के लिए तुम अपना महान जीवन-ग्रन्थ छोड़ गये हो, उन्हें चाहिये कि वे उसका भली भांति स्वाध्याय करें; और, अपने तईं कुछ वास्तविक कार्य करने वाले बनायें।

× × × ×

अहा! वह घटना भी चिरस्मरणीय है। शक्ति सम्पन्न क़ाज़ी तुम्हारे भक्तों के धार्मिक कृत्यों में बाधा डालता है और, उन्हें अपमानित करता है। पर तुम विचलित होने वाले नहीं। तुम द्विगुण उत्साह से हरि कीर्तन कराते हुए ठीक क़ाज़ी के मकान के आगे से निकलते हो, परन्तु जब कुछ लोग क़ाज़ी के प्रति हिंसक भाव मन में लाते हैं तो तुम उन्हें भी नियंत्रित करते हो। तुम क़ाज़ी के दुर्व्यवहार को बुरा समझते हो, परन्तु उसके व्यक्तित्व को अपने प्रेम से

बांचित नहीं करते। तुम्हारे प्रेमालाप से वह सर्वथा तुम्हारे अधीन होजाता है, वह प्रण करता है कि अब मैं कभी भी वैष्णवों पर अत्याचार नहीं करूंगा; यही नहीं, मेरे वंशजों में भी कोई ऐसा दुस्साहस न करेगा।" क़ाज़ी के वंश में उस प्रण का पालन अभी तक होता आरहा है। अहा! सत्याग्रह और आत्म-बल की विजय का कैसा अनुपम दृष्टान्त है। हे प्रेमाग्रही! तुम धन्य हो! क्या ही उत्तम हो कि तुम्हारे भक्तों में इस बल की यथेष्ट मात्रा हो, और वे अपने विरोधियों पर इस प्रकार प्रेमास्त्र द्वारा विजयी हुआ करें।

× × × ×

भगवन्! भिन्न भिन्न जाति उपजातियों और मत मतान्तरों के हिन्दुओं को ही नहीं, मुसलमान आदि अन्य सब जातियों और धर्मों के लोगों को भी समान रूप से धर्मोपदेश करके, सब के लिए अपने मत की दीक्षा का मार्ग प्रशस्त करके तुमने उनके पारस्परिक भेद भावों को दूर कर डाला। पहले नीच समझे जाने वाले हिन्दुओं को समाज में आदर प्राप्त करने के लिए मुसलमान बनना पड़ता था। तुमने उस प्रवाह को रोक दिया। तुम्हारी कृपा से अब उन्हें हिन्दू रहते हुए ही प्रेम, आनन्द तथा समानाधिकार प्राप्त हो सकते हैं। तुमने यह शुभ संदेश दिया कि

हरि को भजे, सो हरि का होई।
जाति पांति पूछे नहीं कोई॥

× × × ×

अहा! तुमने सब धर्मों का कैसा सुन्दर समन्वय किया

है। निस्संदेह प्रेम-धर्म जाति पांति की पृथक्ता को नहीं मानता और मत मतान्तरों की भिन्नता का लिहाज़ नहीं करता। भिन्न भिन्न धर्मों और सम्प्रदायों में सत्य-रूप जो बहुमूल्य रत्न हैं, प्रेम उन सब की क़द्र करता है। महात्मन्! तुम्हारी ये बातें हमारे मस्तिष्क ने तो धारण करली हैं, परन्तु हृदय में अभी तक नहीं भरी हैं। इसलिए धार्मिक और सामाजिक व्यवहार में हम पद पद पर किं-कर्तव्य-विमूढ़ हो रहे हैं। जो वैष्णव धर्म, भारतवर्ष में मुसलमानों की भयंकर उद्दंडता को रोकने के लिए, और उन्हें प्रेम पूर्वक हिन्दू धर्म में लाने के लिए आविर्भूत हुआ था, वह अपने कुछ दुराग्रही भक्तों की बदौलत शुद्धि और संगठन का विरोधी होकर, हिन्दुओं के ही वंशजों को मुसलमान बने रहने के लिए बाध्य कर रहा है। यह देख कर तुम्हारी महान आत्मा क्या कहती होगी ?

× × × × ×

हे प्रेमावतार! आज दिन हमें अपनी शक्ति में तो विश्वास है ही नहीं, पर दुख तो यह है कि हमें अपने देवी देवताओं की शक्ति में भी विश्वास नहीं रहा। हिन्दू देवी देवताओं की पूजा करने वाले अनेक दलित बन्धुओं को, तथा अन्य धर्मों के अनुयायियों को हम अपने देवालयों में प्रवेश नहीं करने देते। हमें भय है कि उन के छाया दोष से प्रतिमायें अपवित्र न हो जांय। एक ओर जिन्हें हम पतित-पावन कहते हैं, दूसरी ओर उनके ही अपवित्र होजाने की आशंका करते हैं। हमारी धर्म-बुद्धि की बलिहारि है!

× × × × ×

पुण्यात्मन् ! हम में धर्म बल है ही क्या ? हमारा धर्म कच्चे सूत के धागे की भांति दुर्बल है। वह छुई मुई की तरह है। वह खान पान और चौका चूल्हे तक ही परिमित है। किसी के ज़रा से स्पर्श से, हमें उसके बिगड़ जाने का भय रहता है। तुमने जगाई मधाई का उद्धार करके दर्शाया था कि पतित और कुकर्मी भी हमारे संसर्ग में आकर शुद्ध हो जांयगे, अब हमें यही शंका लगी रहती है कि कोई हमें ही धर्म-भ्रष्ट न कर जाय। अनेक दीन बंधुओं से हम इस लिए दूर भागते हैं कि हम ने उन्हें अछूत आदि की संज्ञा दी हुई है। हमें सुबुद्धि कब आयेगी ? हम आधुनिक जगाई मधाइयों को अपने प्रेम भाव से सुयोग्य सत्पुरुष कब बना सकेंगे ? उन के मानसिक विकारों पर क्रोध या घृणा करने की जगह, हम उन्हें अपनी दया, सहानुभूति और सेवा का पात्र कब समझने लगेंगे ?

× × × × ×

ओ हो ! हम तो भगवान कृष्ण को भूल ही चले थे, तुमने हमें उनकी याद दिलाने की कृपा की है। तर्कवाद की उष्णता ने भक्ति प्रवाह को मानों सुखा दिया था, तुमने उस में प्रेम का श्रोत बहाया है। जब सांसारिक व्यवहार में, गार्हस्थ जीवन में हमारा मनुष्य मात्र के साथ, नहीं नहीं, जीवों के साथ भी अपार प्रेम होगा, हम सब पर समुचित दया दर्शावेंगे, किसी से भयभीत न होकर अपने कर्तव्य कर्म का निरंतर पालन करेंगे, तभी हम वास्तव में वैष्णव कहलायेंगे, तभी संसार वैष्णव धर्म की महिमा ठीक तरह समझेगा, इस का स्वागत करेगा और इस की शरण

आवेगा। उस समय यह जगत कितना सुन्दर और आकर्षक होगा; अहिन्सा, मत्सर, क्रोध और ईर्षा आदि दुर्गुणों का नाश करके, मनुष्य परिवार कितना विराट होगा? सम्प्रदाय-वाद, बिरादरी-वाद, रक्त-वाद, रंग-वाद, राष्ट्र-वाद और साम्राज्य-वाद आदि विकारों के दूर होने पर, मत मतान्तरों के नष्ट होने पर, संसार जब एक मत, एक वाद, और एक धर्म अर्थात् प्रेम की पूजा करेगा, तब निस्संदेह यह पृथ्वी देवताओं के योग्य होगी, और मनुष्य ही देवता बन जायगा। प्रभु! ऐसा होने में कितनी देरी है?

——

(८)

राणा प्रताप के प्रति

हे स्वाधीनता के आचार्य ! कौन ऐतिहासिक नहीं जानता कि राजस्थान ने अपने अनुपम धैर्य, साहस और त्याग से चिरकाल तक भारतवर्ष का स्वाभिमान बनाये रखा। इसी पुण्य भूमि का एक भाग मेवाड़ का कर्म क्षेत्र है, जो आत्मोत्सर्ग और बलिदान का जीता जागता कीर्ति-स्तम्भ है। वीरों के हृदय सम्राट महाराणा ! मेवाड़ भूमि ने चिर काल तक स्वातंत्र्य-प्रेम का ज्वलंत उदाहरण उपस्थित किया है तो वीर महिलाओं के अतिरिक्त तुम्हारे जैसे कष्ट-सहिष्णु पुरुष-रत्नों के ही बल पर तो ! तुम्हारे जैसे तप और त्याग करने वालों से ही किसी देश का मस्तक ऊंचा हो सकता है। पृथ्वी माता ने तुम्हारे जैसी लगन वाली वीर सन्तान, अपनी गोद में, बहुत कम खिलायी हैं। हमें तुम्हारा अभिमान है। प्रत्येक विवेकशील सज्जन को तुम्हारे चरित्र से साहस और बलिदान की शिक्षा मिलती है। तुम धन्य हो !

× × × ×

हे भारत गौरव ! तुम ने अपने हृदय पर भली भांति अंकित कर लिया था कि तुम्हें अपने कुल की मर्यादा रखनी है। तुम सूर्यवंशी थे, रघुकुल शिरोमणि श्री रामचन्द्र जी के वंशधर थे। इस वंश में बप्पा रावल, खुमानसिंह, समरसिंह, भीमसिंह, हमीरसिंह, कुम्भा और सांगा आदि अनेक आदरणीय व्यक्ति होगये हैं। इस वंश वालों का—

प्राचीन राजपूतों का–मनोरंजन, शत्रु की खोज करना होता था। वे शिकार करते थे तो ख़रगोश और हिरण जैसे अहिन्सक पशुओं का नहीं, वरन् वनैले सूअरों और भयंकर सिंहों का। उनके आभूषण बहु-मूल्य हीरे जवाहरात या सोने चांदी के न होकर, मातृ-भूमि की सेवा में प्राप्त किये हुए ज़ख्म और चोटें होती थीं। यह बात आज कल प्रायः विस्मृति–गर्भ में पड़ गयी है, पर महाराणा ! तुमने अपने जीवन–इतिहास में इसे अमिट अक्षरों में लिख रखा है।

× × × ×

हे हिन्दू–कुल सूर्य ! तुम्हारे समय से पूर्व मेवाड़ की दशा अत्यन्त शोचनीय थी। तुम्हारे सामने मुख्य प्रश्न यह था कि चित्तौड़ के दुर्ग पर से पराधीनता–सूचक मुग़ल ध्वजा किस प्रकार हटायी जाय, विशेषतया ऐसे समय में, जब कि तुम्हारे भाई बन्धु आदि, राजस्थान के ही बड़े बड़े राजा महाराजा अकबर की अधीनता स्वीकार करने, और उसकी छत्र छाया में रहने में अपनी कुशल समझते हों; और जब कि वे अपनी बहिन बेटियों का सम्बन्ध शाही ख़ानदान में करके, अपनी उदारता का नहीं, वरन् अपने लोभी और कायर होने का परिचय दे रहे हों। स्वतंत्रता–प्राप्ति के उद्योग में तुम्हारी सहायता करना तो दूर, तुम से मौखिक सहानुभूति प्रकट करने में भी लोगों को संकट मोल लेना दिखायी देता था। बहुत से 'समझदार' आदमी तुम्हारी हंसी करते थे, तुम्हें पागल कहते थे। अनेक पतित जीव तुम्हारा विरोध करके ही अपने मन को शान्त किया करते थे। सम्राट अकबर, असंख्य जन धन, और प्रायः

समस्त मुसलमान और हिन्दू नरेश एक ओर, और राणा प्रताप ! तुम और तुम्हारे मुट्ठी भर सरदार दूसरी ओर। ओह ! ऐसा विषम संग्राम भी संसार में बार बार देखने में नहीं आता।

× × × ×

हे स्वतंत्रता के पुजारी ! अपने उद्देश्य की पूर्त्ति के लिए कष्ट किसे नहीं उठाने पड़ते ? पर तुम्हारे कष्टों को देख कर तो पत्थर का हृदय भी रो देता है। तुमने शत्रुओं के प्रहार सहे, प्रिय जनों का वियोग सहा, उस से बढ़कर अपने सगे सम्बन्धियों और भाई बन्धुओं के आक्षेप और उपहास सहे। अहा ! तुम्हारे लिए घास की, जंगली अन्न की, रोटियां बनती हैं, और आक्रमणकारियों से घिर जाने के कारण, उन्हें खाने की भी तुमको सुविधा नहीं होती। ओफ़ ! उदयपुर के महाराणा के बालक एक रोटी के टुकडे के लिए रो रहे हैं, पर महाराणा के पास उन्हें बहलाने का साधन नहीं है। अकबर को ज़रा सलाम कर लिया जाय, उस की मित्रता स्वीकार करली जाय तो ये दिन क्यों देखने पड़ें ? भोग विलास के — ऐश्वर्य और प्रभुता के — सब सामान जुट जांय। पर हे महारथियों की लाज रखने वाले ! तुम्हें तो अपने स्वाभिमान के सन्मुख सब कुछ तुच्छ था, क्षुद्र था। तुम धन्य हो !

× × × ×

हे विजय और पराजय दोनों के वीर ! परिस्थिति को देखते हुए बरबस मानना पड़ता है कि तुमने अद्भुत विजय

पायी। चित्तौड़ गढ़ और मंगल गढ़ को छोड कर सारे मेवाड पर अपना अधिकार कर लिया। निस्संदेह तुम इस से भी कुछ अधिक चाहते थे। परन्तु, यदि तुम्हें समुचित विजय प्राप्त नहीं भी हुई, कुछ पराजय भी हुई, तो उस दशा में भी, हां, उस पराजय में भी, क्या तुम्हारी वीरता का ही प्रमाण नहीं मिला है? तुम्हारी पराजय भी सब सहृदयों को, शत्रु हो या मित्र, समस्त वीरों को मुग्ध करने वाली है; कारण, कि तुम एक सिद्धान्त के लिए लड़ रहे थे, स्वतंत्रता-प्राप्ति तुम्हारा उद्देश्य रहा। इस सिद्धान्त और इस उद्देश्य से तुम कभी तिल भर न डिगे। तुम्हारी प्रत्येक लड़ाई में शत्रु ने तुम्हारा तथा राजपूत जाति का लोहा माना, उससे सब के मन पर तुम्हारे जातीय गौरव की अधिकाधिक धाक जमी। इस प्रकार पराजय में भी तुम्हारी विजय ही रही। तुम धन्य हो!

× × × ×

हे दृढ़ प्रतिज्ञ! सभी महापुरुषों को बड़े कठोर व्रत धारण करने होते हैं। विना तप के कोई सिद्धि नहीं होती। परन्तु तुम्हारी प्रतिज्ञायें तो ग़ज़ब की ही थीं। तुमने निश्चय किया कि जब तक चितौड़ का उद्धार, और देहली पर अधिकार न करलें, तब तक हम डाढ़ी नहीं मुंड़वावेंगे; सोने चांदी के बर्तनों के स्थान में; पत्तों पर खाना खायेंगे; मख़मल आदि की कोमल शय्या के बजाय घास फूंस पर सोया करेंगे; नगारे मेवाड़ की सेना के आगे न बज कर उस के पीछे बजा करेंगे। अहा! कितने कठोर व्रतों का तुमने जन्म भर दृढ़ता-पूर्वक पालन किया!

× × × ×

हे स्वाभिमान की मूर्त्ति! कितने राजपूतों को तुम्हारा वीर सन्देश याद होगा? अन्तिम श्वास लेने के समय, सर्व संहारनी मृत्यु को कुछ समय अपना कार्य स्थगित करने की आज्ञा देकर तुमने अपने पुत्र को आशंकित हृदय से चेतावनी दी थी, "सावधान! विलासिता का जीवन दासता को आमंत्रित करने वाला होता है; और दासता स्वीकार करने की अपेक्षा मर जाना कहीं अच्छा है।" तुम्हारे सरदारों ने शपथ खाकर तुम्हें हर प्रकार शान्ति प्रदान करने की चेष्टा की थी, पर अब तुम स्वर्ग से देख रहे होगे कि तुम्हारी आशंकायें कितनी सत्य थीं! तुम्हारे महान व्रतों का अब कैसा उपहास-जनक अनुकरण किया जाता है!

× × × ×

महाराणा! तुम्हारा भौतिक शरीर अब इस संसार में नहीं है तो क्या; तुम्हारी मातृ-पूजा का अनुपम दृष्टान्त भली भांति विद्यमान है, और सदैव विद्यमान रहेगा। तुम्हारी कीर्ति चिरस्थायी है, जब तक वीर पूजा का भाव मनुष्य जाति में है, तब तक तुम भुलाये नहीं जासकते। जीवन की इच्छा रखने वाले प्रत्येक व्यक्ति, संस्था, समूह और जाति के लिए तुम पूजनीय हो, आदरणीय हो, और अनुकरणीय हो। सादर वन्दे!

———

(१)

शिवाजी के प्रति

हे धर्म रक्षक ! सोलहवीं सत्तरहवीं शताब्दी में सुविख्यात भारत जननि बड़ी दीनता का जीवन बिता रही थी। हिन्दू जाति वीरता से अधिकाधिक वंचित होरही थी, वेद और धर्मशास्त्र अग्नि देव के अर्पित हो रहे थे, देव मंदिर विध्वंस किये जा रहे थे, हिन्दुओं की परम पूज्य गो माता का, स्थान स्थान पर, वध किया जा रहा था, धर्मज्ञ ब्राह्मणों को नाना भांति कष्ट पहुंचा कर, और अनाथों तथा अबलाओं को अपमानित करके मानों जाति की जाति को ही रसातल पहुंचाने का भयकंर षड़ंयत्र रचा जा रहा था। ऐसी स्थिति में, तुमने यहां अवतार लेकर अनुपमेय परिवर्तन किया, तुम्हारे पराक्रम और साहस के उदाहरणों से पद-दलित हिन्दू जाति शत्रुओं से बदला लेने के लिए तत्पर हो गयी, अन्यायियों का गर्व खर्व हुआ, हिन्दू धर्म की रक्षा हो सकी। तुम्हें सादर बन्दे !

× × × ×

महाराज ! तुम्हें अपनी तैयारी और विकास के लिए साधन भी कैसे उत्तमोत्तम मिले। प्रथम तो तुम्हारी माता पूज्य जीजी बाई स्वयं सुयोग्य, स्वाभिमानी, धीर और साहसी थीं। फिर उन्होंने तुम्हें रामायण महाभारत आदि के चरित्रनायकों की कथायें सुनायीं और तुम्हारे हृदय में यह भाव अंकित कर दिया कि तुम्हें अपने भावी जीवन में महा-

पुरुषों के से कार्य करना है। माता जी के अतिरिक्त तुम्हें अनुभवी और राजकार्य-कुशल पिता शाहजी से, तथा उनके सच्चे, लोक-हितैषी और पुराने सेवक दादो जी कोंडदेव से भी यथेष्ट गुणों की प्राप्ति होती रही! इधर महाराष्ट्र के साधु संतों ने जनता को समय समय पर सदुपदेश देकर तुम्हारे लिए क्षेत्र साफ़ कर दिया था। स्वामी रामदास जी ने तो आवश्यकतानुसार तुम्हें भी स्वदेश, स्वराज्य और स्वधर्म के उद्धार के लिए प्रोत्साहित किया। तुम्हें सब सज्जनों की ऐसी सहायता प्राप्त करने का सौभाग्य मिला। तुम धन्य हो!

× × × ×

हे कर्मयोगी! यद्यपि साधारण लोगों की दृष्टि में तुम बहुत विद्वान् नहीं थे, परन्तु विचारशील सज्जन जानते हैं कि तुम्हारा शास्त्र-ज्ञान ऐसे आदमियों से कहीं अधिक था, जो कुछ सूत्र या श्लोक आदि कंठ कर लेते हैं, और समय समय पर उन्हें यंत्र की भांति उच्चारण कर देते हैं। क्या ही अच्छा हो, यदि बालक बालिकायें तुम्हारी भांति वीर धर्मात्मा, कर्मयोगी और तपस्वियों की कथायें सुनकर उन्हें हृदयंगम किया करें। तुमने शस्त्र विद्या भी अच्छी तरह सीख ली थी। तभी तो तुमने किशोरावस्था से ही शत्रुओं को अपने पराक्रम और कौशल से चकित करना आरम्भ कर दिया। तुमने एक के बाद दूसरा दुर्ग विजय किया, और विरोधियों के विविध षड़यन्त्रों का खूब सामना किया।

× × × ×

महामहिम क्षत्रपति! तुमने युद्ध-नीति को खूब समझ

लिया था। इतिहास के अनुशीलन से तुम ने जान लिया था कि यह भारत भूमि विशेषतया दया और करुणा की अति के कारण शत्रुओं की शिकार हुई है। ग्यारहवीं शताब्दि से शत्रुओं ने यहां वालों की अत्यन्त क्षमा-शीलता से अनुचित लाभ उठाना आरम्भ किया। जब कभी वे परास्त होगये और पकड़े जाकर राजपूत या अन्य हिन्दू सेनापति या शासक के पास लेजाये गये, उन्होंने दीनता पूर्वक अनेक प्रतिज्ञायें करके मुक्ति प्राप्त की, और फिर अवसर पाते ही उन प्रतिज्ञाओं को भंग कर, अपने छल-कौशल का परिचय दिया। बारबार ऐसी घटनायें हो चुकने पर भी 'दयालु', 'भोले भाले' हिन्दुओं की बुद्धि ठिकाने नहीं आयी थी और अन्यान्य कारणों में इसी लिए भी उन्हें बुरे दिन देखने पड़े। तुमने निश्चय कर लिया कि पूर्व हिन्दू नरेशों की तरह भूल नहीं करेंगे, देश काल के अनुसार 'शठं प्रति शाठ्यं' की नीति का व्यवहार करना होगा। तुम धन्य हो!

× × × ×

महाराज! तुम्हारे शुभागमन से पूर्व जो हो चुका था, वह तो अमिट ही था; पर आगे के लिए, घटनाओं का क्रम तुमने एक दम बदल दिया। शत्रु परेशान था, यह क्या होने लगा? दर्शक देखते थे, क्या था क्या हो गया! विशाल मुगल सेना को तुमने ललकार कर कह दिया कि बस! अब और अनर्थ नहीं होने पावेगा, तू आगे नहीं बढ़ेगी; यही नहीं, तुझे उलटे पांव लौटना पड़ेगा। प्रचंड प्रतापी औरंगज़ेब समझता था कि यह कोई पागल का प्रलाप है, या कोई स्वप्न की सी बात है, इसमें कोई तथ्य नहीं। वह आंखें मलता था,

चाहता था कि देखूं असल में बात क्या है। अन्त में, बड़ी हुज्जत, परेशानी और अत्यन्त दुःख के साथ, उसे तुम्हारी सत्ता का अनुभव करना पड़ा, उसने समझ लिया कि अब होतव्यता उसके विरुद्ध है, जिसे वह अपमान-पूर्वक 'पहाड़ी चूहा' कहता था, वह तो समय की बागडोर संभाले हुए है, उसके आगे स्वयं औरंगज़ेब की कुछ हस्ती नहीं। अहा! उसका मद चूर्ण करने वाले तुम ही थे। जिस प्रचंड मुग़ल सेना का हिन्दुस्थान और मध्य एशिया में आतंक छाया हुआ था, जिसके प्रबल पराक्रम से अफ्रीका महाद्वीप का उत्तर भाग तथा योरप का दक्षिण भाग व्याकुल था, वह तुम्हारे तेज के सामने हत-वीर्य होगयी। तुम धन्य हो!

× × × ×

हे आर्य संस्कृति के गौरव! तुमने देश काल का विचार केवल राजनैतिक क्षेत्र में ही परिमित न रखा, वरन सामाजिक विषयों में इसका प्रयोग कर अपनी दूरदर्शिता का कल्याणकारी परिचय दिया! जहां तुमने हिन्दुओं को विधर्मी होने से बचाया, वहां विधर्मी बने हुए हिन्दुओं के पुनरपि हिन्दू धर्म की शरण में आने का भी मार्ग प्रशस्त कर दिया। तुमने प्राचीन मर्यादा के अनुसार, अपने समय में शुद्धि का उदाहरण देकर दूरदर्शिता का उत्तम परिचय दिया।

× × × ×

हे महाभाग! तुम महान थे, तो क्षुद्र लोगों ने तुम्हें समझने में अनर्थ भी बहुत अधिक किया है। कुछ इतिहास लेखक तुम्हें चोर, लुटेरा और धोखेबाज़ आदि कहते हैं।

परन्तु वे यह नहीं सोचते कि किसी काम का अच्छा या बुरा होना तो बहुत कुछ इस बात पर निर्भर है कि वह किस स्थिति में किया गया है। कोई व्यक्ति चोरों से अपना माल छीन न सके तो उन की आंख बचाकर उसे लेलेने में क्या पाप है? जो आदमी धोखे से हमारी हत्या करने के लिए आया है, उसकी आंखों में धूल झोंकना, अथवा उस पर हाथ चलाने में क्या दोष है? पर जो लेखक आदि, पक्षपात से अन्धे हैं, उनसे न्याय की आशा करना व्यर्थ है।

× × × × ×

हे राष्ट्रनिर्म्माता! तुमने अनेक आपत्तियां उठाकर महाराष्ट्र प्रान्त की बिखरी हुई शक्ति को संगठित किया। तुम्हें विजातियों के विरोध का ही नहीं, स्वयं अपने निकटवर्तियों के सामाजिक अन्ध विश्वासों का भी सामना करना पड़ा। तो भी तुम हमारे लिए ऐसी बहु-मूल्य विरासत छोड़ गये। अहा! तुम्हारे सिद्धांत कितने उच्च थे! तुम उस महान धर्म की दीक्षा लिये हुए थे, जो किसी को हानि पहुंचाने का आदेश नहीं करता, जिसके अनुसार वसुधा भर ही अपना कुटुम्ब माना जाता है। तुम्हारा विरोध किसी व्यक्ति विशेष या जाति विशेष से नहीं था, वरन् केवल उसकी बुराइयों से था। तुम तत्कालीन शासकों के विरुद्ध खड़े हुए तो इसलिए कि वे अपने राज-मद और धर्मान्धता के वशीभूत होकर प्रजा को सताते थे; न्याय नीति का अवलम्बन न कर पक्षपात से काम लेते थे। तुमने राजा बनकर यह बतला दिया कि वास्तव में शासक का व्यवहार किस प्रकार का होना चाहिये। तुमने राज्य तो समर्थ गुरु रामदास को देदिया, स्वयं एक त्यागी

तपस्वी का जीवन व्यतीत किया, प्रजा की तन मन से सेवा की। तुम्हारा कोई कट्टर से कट्टर शत्रु भी यह कहने का साहस नहीं कर सका कि तुमने कभी दूसरे धर्म का अपमान किया या तुमने कुरान, मसजिद, मुसलमान स्त्रियों या किसी मौलवी आदि का अनादर किया। इतिहास इस बात का प्रबल साक्षी है कि तुम उस भारतीय राष्ट्र का उत्थान चाहते थे जिसमें मुसलमानों तथा अन्य जाति वालों के भी सुख-समृद्धि के लिए वैसा ही ध्यान रहे जैसा हिन्दू नागारिकों के कल्याण का। क्या मुसलमान इन आदर्शों का आदर न करेंगे ? कौन सच्चा धर्मावलम्बी तुम्हारी प्रशंसा न करेगा ?

× × × ×

महाराज ! तुम महान थे, छिद्रान्वेषियों को क्षमा करना। इनकी संख्या अब घटती जारही है ! आशा है कि समय आवेगा, और आरहा है, जब सत्य का यथेष्ट प्रचार होगा और समस्त भारत ही नहीं, संसार तुम्हारी महान विभूति का अभिवन्दन करेगा, तुम्हारे सद्गुणों का आदर करेगा, तुम्हारे चरित्र से समुचित शिक्षा लेगा। महानुभाव ! सादर नमस्कार !

———

(१०)

गुरु गोविन्दसिंह के प्रति

हे धर्मयोद्धा ! हमें ज्ञात है कि पंजाब की भूमि अपने उपजाऊपन के लिए ही प्रसिद्ध नहीं है, उसने अनेक कर्मवीर, धर्मवीर और युद्धवीर आदि महापुरुषों को जन्म देकर भारतीय इतिहास में भी एक महत्व-पूर्ण स्थान प्राप्त किया है। यहां ही सिख (शिष्य) धर्म का प्रादुर्भाव हुआ। अहा ! अन्यान्य सिखों में गुरु तेगवहादुर जी को अपना धर्म पालन करने के लिए कितना कष्ट उठाना पड़ा। उन्हें मुसलमान बनने के वास्ते बहुत भय और प्रलोभन दिखाया गया, पर सब व्यर्थ प्रमाणित हुआ। अन्ततः उन्होंने क़ैद की विविध यातनाओं, और फांसी का सहर्ष सत्कार करके 'सिर दिया पर सार न दिया'। ऐसे वीरात्मा पिता के वीर पुत्र ! तुम्हें बारम्बार नमस्कार !

× × × ×

हे राष्ट्र-निर्म्माता ! तुम बाल्यावस्था से ही अपने भावी कर्तव्य का पालन करने की तैयारी में लग गये थे। युद्ध विद्या, तीरंदाज़ी, घोडे की सवारी, बंदूक़ तलवार चलाना, कुश्ती लड़ना आदि विविध कलाओं को तुमने खूब सीख लिया था। अपने पिता के बलिदान के समय तुमने जो धीरता गम्भीरता और दूरदर्शिता दर्शायी वह अच्छे अच्छे राजनीति-पंडितों के लिए भी शिक्षाप्रद है। तुमने अच्छी तरह समझ लिया कि बदला लेने के लिए बड़े भारी संगठन और प्रबन्ध की आवश्यकता है। जल्दबाज़ी से, क्षणिक जोश से, सब काम बिगड़

आयगा। तुम शक्ति संचय में जुट गये। वीर पूजा की आयोजना हुई। तुमने घोषणा करदी कि भेंट में अब सोना चान्दी आदि की आवश्यकता नहीं, अब तो अस्त्र शस्त्र, भाला, बर्छा, कटार, गोली बारूद, घोड़े खच्चर हाथी आदि युद्ध-सामग्री चाहिये। इस घोषणा का, तुम्हारे वीरता-जनक उपदेशों का, धार्मिक कथाओं और सम्मेलनों का यथेष्ट फल होकर रहा। तुम्हारी सेवा में, धर्म सेवा में, तन मन अर्पण करने वालों की संख्या बढ़ती गयी, और युद्ध सामग्री का संग्रह होता गया।

× × × ×

तुम्हारी साधना विलक्षण थी। साथ ही तुम्हारी, अपने भक्तों की परीक्षा लेने की शैली भी अनुपम थी। तुमने विराट हवन किया। सर्व साधारण के मन में श्रद्धा का भाव पैदा किया। चमचमाती नंगी तलवार दर्शाते हुए, तुमने उपस्थित जनता से कहा कियह दुर्गा जी है, इस शक्ति की आराधना करके तुम अवश्यमेव विजयी होगे। तुमने अपने शिष्यों से ललकार कर प्रश्न किया कि तुम में से कौन कौन गुरु के लिए, धर्म और देश के लिए, बलिदान होने को तत्पर हैं। पहले, दयाराम क्षत्री ने अपना सिर देना स्वीकार किया। तुमने उसे तम्बू में ले जाकर बिठा दिया और एक बकरे का बलिदान कर दिया। अस्त्र-प्रहार के शब्द सुनकर, तथा तम्बू के भीतर से बहकर आयी हुई रुधिर धारा देखकर, लोगों ने समझा कि दयाराम वास्तव में मारा गया। तुम्हारे पुनः पूर्वोक्त प्रश्न करने पर क्रमशः धर्मा जाट, हिम्मत कहार, मोहकम दर्ज़ी, और साहब नाई ने बलिदान होना स्वीकार किया। इन्होंने इस बात का ज्वलंत उदाहरण उपस्थित कर दिया कि त्याग

और वीरता किसी जाति विशेष की बपौती नहीं है। हे सैनिक धर्म के आचार्य ! इन पांच प्यारों को वीर वेष में उपस्थित कर तुमने सर्व साधारण को जतलाया कि मातृ-भूमि को इस प्रकार के, वीर गति के लिए सदैव तत्पर रहने वाले, शिष्यों की ही आवश्यकता है।

× × × ×

महान् सुधारक ! हिन्दुओं की छूत-छात के भाव को दूर करने के लिए तुमने नियम बनाया कि "सिख लोग जाति-पांति का बखेड़ा दूर कर परस्पर में प्रेम-पूर्वक खान पान करें। क्षात्र तेज की वृद्धि के लिए जुए या तमाखू आदि के व्यसनों से दूर रहें; कड़ा, कच्छा (जांघिया), केश, कंघी और कृपाण (तलवार) इन 'पांच ककार' को सदैव धारण करें, अपने नाम के साथ 'सिंह' शब्द का उपयोग करें। धर्मात्मा तथा ईमानदार हों, और दीन दुखियों की रक्षा में सदैव तत्पर रहें। घुड़सवारी, तलवार चलाना आदि सैनिक कार्यों की शिक्षा पावें और युद्ध से कभी विमुख न हों। एक परमात्मा (सत्य श्री अकाल), गुरु ग्रन्थ साहब और गुरु ख़ालसा की उपासना करें। लोगों की धारणा थी कि सिख चिड़िया हैं और मुग़ल बाज़ हैं।" इस सम्बन्ध में तुम्हारी यह उक्ति प्रसिद्ध है कि 'चिड़ियों से मैं बाज़ मराऊँ, तब गुरु गोविन्दसिंह कहलाऊँ।' तुमने अपना नाम सार्थक कर दिया।

× × × ×

तुम्हारे उपदेश और उदाहरण से दूसरे आदमियों में तेज और ओजस्विता का सञ्चार हुआ था। फिर तुम्हारे पुत्रों में इन गुणों की पराकाष्ठा का परिचय मिलना स्वाभा-

विक ही था। अहा ! यह दृश्य भी याद रहेगा; क़िले में मुट्ठी भर सिख मुगल सेना से घिरे हुए हैं। शत्रु पक्ष की बहुत क्षति होजाने पर भी उसके पास सैनिक, और युद्ध सामग्री अपरिमित है। किले में परामर्श होता है कि चुने हुए निशानेबाज़ सिख बाहर निकल कर शत्रु-संहार करें। तुम्हारा अठारह वर्ष का पुत्र तुम्हारी अनुमति ले शत्रु सेना में विकराल मूर्ति धारण करके घुस पड़ता है। अनेक सैनिकों को मौत के घाट उतारता है, अपनी तलवार के जौहर दिखाकर हंसता हंसता, 'वाह गुरु की फ़तह' कह कर वीर गति प्राप्त करता है। इस पर उसका छोटा भाई जुझारसिंह, केवल चौदह वर्ष का बांका छोकरा, शत्रु के रक्त से अपनी तलवार की प्यास बुझाने जाता है। दर्शक उसे पागल समझते हैं, परन्तु वह पागल तो कमाल कर देता है। प्रहार पर प्रहार सहता है और अन्त में मृत्यु के मुख में चले जाने पर भी हाथ में तलवार और चेहरे पर तेजस्विता धारण किये हुए है।

× × × ×

हे महानुभाव ! तुम्हारे इन दो युद्ध-वीरों की भांति ही अन्य दो पुत्रों ने भी कुछ कम प्रशंसाजनक उदाहरण उपस्थित नहीं किया। वे तो निरे अबोध बालक थे; एक नौ वर्ष का, दूसरा सात का। पर इससे क्या ? सिंह के बच्चे में गुण तो सिंह के ही मिलेंगे। तुम्हारे ज़ोरावरसिंह और फ़तहसिंह से, शत्रु के हाथ में पड़ जाने पर, यह कहा जाता है कि या तो मुसलमान धर्म स्वीकार करो, जिसके साथ सब ऐश्वर्य और सम्पत्ति मिलेगी; अथवा तुम्हें अनेक

यातनाएँ सहनी होंगी, जिनका अन्ततः परिणाम कष्टजनक मृत्यु होगी। वाह ! भला अग्नि या सूर्य कहीं अपना धर्म त्याग सकते हैं ? तुम्हारे सुपुत्रों ने सब कुछ सहन किया, पर सिखों के यश को बट्टा न लगाया। उनकी वीरता का परिचायक निम्नलिखित गीत अनेक मुर्दा-दिलों में हौसला भरता है:—

चित्त चरण कमल के आसरा,
चित चरण कमल संग जोडिये।
बांह जिन्हां दी पकडिये,
सिर दीजिये, बांह न छोडिये।
गुरु तेग बहादुर बोलिया,
धर पइये, धर्म न छोडिये॥

× × × ×

अनेक अबलाओं, दीनों, और अनाथों के अतिरिक्त, तुम्हारे इन अबोध बालकों पर किये हुए अत्याचार किसी भी विवेकशील से यह भविष्यवाणी करा सकते थे, कि ऐसा शासन अब थोडे दिन का मेहमान है। इसका मूलोच्छेद हुए बिना न रहेगा। वास्तव में अत्याचारों का परिणाम अन्ततः अत्याचारी के लिए ही घातक होता है, जो व्यक्ति बलिदान होते हैं, वे अपने उत्तराधिकारियों के विकास और उन्नति का मार्ग प्रशस्त करते हैं। शहीदों के रक्त से ही वह मसाला तैयार होता है, जिससे नवीन राष्ट्र-मन्दिर की स्थापना होती है।

× × × ×

तुम्हारे संगठन-कौशल से सिखों में नव-जीवन का

संचार होगया। दल के दल युवक आ आ कर अमृत (शर्बत) पान करके 'अकाली शिष्य' (अमर सिख) वनने लगे। सिखों के त्याग, शौर्य और कष्ट-सहन की गाथा विस्तृत और मन-मोहक है। अनेक सिख—वालक, युवा, तथा, वृद्ध—धर्म के हेतु हंसते हंसते अपने प्राण दे गये; अथवा, उससे भी बढ़कर, निरन्तर कष्ट-मय जीवन व्यतीत करते रहे। अभी थोड़े ही समय की वात है अकाली सिखों की वीरता और दृढ़ता ने सव को चकित कर दिया था। वास्तव में, अपने ऐसे ही नागारिकों पर देश को अभिमान होता है, वे संसार में उस का मस्तक ऊंचा रखने वाले होते है।

× × × ×

हे सिखों के अन्तिम गुरु! इस धर्म के आदि प्रर्वतक गुरु नानक ने प्रचार कार्य वरावर होते रहने के लिए एक योग्य सज्जन को अपना उत्तराधिकारी वनाया था। इसी परम्परा के अनुसार तुम दसवें गुर थे। तुम ने विचार किया कि लोगों को स्वाधीन चिन्तन का अभ्यास होना चाहिये, अपनी बुद्धि किसी एक मनुष्य के अधीन करके अन्ध विश्वासी नहीं बनना चाहिये। इस लिए तुमने अपना कोई उत्तराधिकारी नियत न किया और आगे के लिए ग्रन्थ साहव को ही गुरु की पदवी प्रदान की; साथ ही तुमने योग्य पुरुषों की समिति वनादी जो सव धार्मिक विषयों में परामर्श दिया करे। इन वातों से तुम्हारी दूरर्शिता, उदारता तथा बुद्धिमता का परिचय मिलता है। तुमने तत्कालीन अत्याचारी मुगल शासन की नींव को गहरा धक्का पहुंचाया, नवीन राज्य की स्थापना की, हिन्दुओं का सामाजिक और धार्मिक

सुधार-कार्य अग्रसर किया। तुम अपने रण कौशल के लिए, देशोद्धार व्रत के अनुष्ठान के लिए, अटल-प्रेम और प्रचंड तेज के लिए चिर, स्मरणीय हो। आवश्यकता है कि भारत-वासी, विशेषतया सिक्ख समुदाय, तुम्हारे द्वारा उपस्थित किये हुए विविध उदाहरणों और दृष्टान्तों से समुचित शिक्षा ग्रहण करे। तुम्हें बारम्बार नमस्कार !

---

(११)

अहिल्याबाई के प्रति

श्रद्धास्पद देवी ! पिछले दिनों भारतवर्ष की धार्मिक, सामाजिक और राजनैतिक आदि अवनति होजाने से हिन्दू समाज में अनेक कुरीतियों और अन्ध परम्पराओं ने घर कर लिया। महिलायें ऐसी दुर्बलताओं का शिकार बन गयीं कि प्रायः इस में संदेह होने लगा कि कोई हिन्दू नारी कभी शासन अधिकार प्राप्त कर सकती है। क्या वह एक बड़े राज्य की सुयोग्य शासिका होसकती है, विशेषतया अशान्ति के ज़माने में, और बहुत समय तक ? इस प्रश्न का, जिन देवियों ने हिन्दू जाति के लिए अभिमानजनक उत्तर दिया है, उनके उदाहरण स्वरूप देवी अहिल्ये ! तुम्हें सादर प्रणाम !

× × × ×

कर्तव्यनिष्ठ देवी ! तुमने इतने सांसारिक दुःख सहन किये, पर कभी अपने कर्तव्य की अवहेलना नहीं की। युवावस्था में ही प्राण-धन पति का बिछोह, गुरुवत् पूज्य स्वसुर का स्वर्गवास, एक मात्र प्यारे पुत्र का वियोग, सुपुत्री का वैधव्य और अन्ततः उसका सती होना। इन दुखों से अनेक स्त्रियां सहसा किं-कर्तव्य-विमूढ़ होजाती हैं, परन्तु तुम तो दूसरों को धैर्य और कर्तव्य पालन की शिक्षा देने के लिए ही आयी थीं। तुमने दर्शा दिया कि पुत्र-हीन महिलायें तनिक विचार करें, तो अपने वात्सल्य का श्रोत एक ख़ास सीमा में, अपनी संतान में, परिमित न रखकर उसे अन्य बालक बालिकाओं के लिए, हां, जीव मात्र के लिए प्रवाहित कर सकती हैं। उनका हृदय विशाल होजायगा, उन की भेदमूलक बुद्धि का संशोधन होकर उनका कर्म-क्षेत्र व्यापक बन जायगा। तब वे अपने शक्ति को सार्वजनिक सेवा में अर्पण करती हुई, दिन रात अपने महान कर्तव्य का पालन करती हुई, मानवी रूप में साक्षात देवी की आत्मा का परिचय दे सकती हैं। वे जीवन-मुक्त होजांयगीं, पीछे संसार उनकी पूजा वन्दना करके, उनके सद्‌गुणों को सादर स्मरण और अनुकरण करके, कृतार्थ होगा।

× × × ×

प्रातः स्मरणीय देवी ! क्षुद्र बुद्धि मनुष्य सोचते हैं कि राजगद्दी को सुशोभित करने वाला तो प्रजा के जन, धन का स्वामी होता है। वह खूब मज़े की ज़िन्दगी व्यतीत करे, अच्छे से अच्छा षटरस भोजन, दो वक्त नहीं, इच्छानुसार चार पांच समय खाये, बढ़िया से बढ़िया वस्त्राभूषण से अपने

शरीर का शृंगार करे, बड़े ठाठ बाठ और नाज़ नख़रे से रहे। जनता उसकी भोग्य सम्पति है, उसके सुख के लिए है। शासक का उसके दुखों और कष्टों, उसके मरने या जीने से क्या सरोकार ? इस प्रकार के भाव होते हैं जिनकी साधारण आदमी कल्पना करते हैं, और जिन की पुष्टि, संसार के दुर्भाग्य से अनेक अधिकारी समय बेसमय करते रहते हैं। बहुधा सहृदय सज्जन भी ऐसे विचारों के प्रवाह में सहज ही बह जाते हैं। पर देवी ! तुम्हें तो मनुष्यों को नये प्रवाह का अनुभव कराना था, तुमने दुर्गम पथ की यात्रा करना स्वीकार किया। तुमने अपनी अधिकार-गत सम्पत्ति का तनिक भी तो अभिमान नहीं किया, उसका स्वार्थ-साधन में उपयोग न किया, सब दान धर्म में खर्च करती रहीं सदैव सादगी का जीवन व्यतीत किया, सादे भोजन और सादे वस्त्र का व्यवहार किया। आडम्बर और विलासिता से घृणा की। चापलूसी करने वालों को कभी पास नहीं फटकने दिया। अपने को प्रजा का सेवक समझा, सदा अपने आश्रितों का हित-चिन्तन किया, स्वयं उनकी शिकायतें सुनीं, और उनके कष्टों को दूर करने का प्रवन्ध किया, उनकी उन्नति के विविध उपायों को सोचा और कार्य में परिणित किया।

× × × ×

हे सुयोग्य शासिका ! तुम्हारी नीतिमत्ता की हम कहां तक प्रशंसा करें। जहां तक बन सका तुम ने युद्ध का अवसर न आने दिया, और अपनी या शत्रु की प्रजा का व्यर्थ रक्त पात न होने दिया। तुमने अन्य राज्यों के स्वामियों का कभी केवल इस लिए विरोध न किया कि वे अन्य धर्म के

अनुयायी हैं, तुमने जिस धार्मिक सहिष्णुता का परिचय अपने राज्य के भीतर दिया था, उसे तुमने पर-राष्ट्र-नीति में भी भली भांति स्मरण रखा। तुम्हारी राजनीति सदैव धर्मनीति रही, उसमें छल, कपट और विश्वासघात आदि को कभी स्थान न मिला। देवी ! यह तुम्हारा ही पुण्य, प्रताप और उद्योग था कि अठारहवीं शताब्दी की बेढब लूट-मार के ज़माने में इन्दौर अन्य स्थानों के लोभी और स्वार्थी शासकों और आक्रमणकारियों से रक्षित रह सका और वहां की प्रजा सुख शान्ति तथा समृद्धि का उपभोग कर सकी। क्या ही उत्तम हो, यदि भारतीय एवं विदेशी नृपतिगण तुम्हारी तरह हर समय यह स्मरण रखें कि उन्हें अपने शासन सम्बन्धी हर एक काम के लिए परमात्मा के सामने जवाब देना होगा।

× × × ×

हे धर्म रक्षिका ! तुम्हारे सत्कर्मों से सब जातियों और सब मतों के आदमियों को सुख-लाभ हुआ। तुमने उदारता पूर्वक सर्वत्र दान पुण्य किया, सब प्रान्तों के तीर्थों की सुधि ली। अब भी सुदूर उत्तर, दक्षिण, पूर्व और पश्चिम में कहीं कोई घाट, कहीं कोई मंदिर, कहीं कोई क्षेत्र या धर्मशाला आदि तुम्हारे व्यापक कर्म-क्षेत्र की घोषणा कर रहा है। समस्त भारत में, हिन्दू संस्कृति के पुनरुज्जीवन में तुमने जो भाग लिया है, वह इतिहास में अमर है।

× × × ×

हे विश्व विमोहिनी देवी ! तुम हिन्दू धर्म का मर्म अच्छी तरह समझी थीं, तुमने केवल मनुष्यों की ही सुधि

नहीं ली, वरन् आकाश में विचरण करने वाले अहिंसक पक्षियों के, स्थलभाग पर रहने वाले बेज़बान पशुओं के, और जल में जीवन व्यतीत करने वाली मछलियों और कछवों आदि के निर्वाह के लिए भी यथेष्ठ साधन जुटाने की ओर समुचित ध्यान दिया। इस प्रकार तुमने मनुष्य जाति तथा इतर जातियों के भेद भाव को भुला कर, अहं भाव को सर्वथा विलुप्त कर दिया और हिन्दू धर्म की निस्सीय उदारता—वास्तविक और क्रियात्मक विश्व बंधुत्व—की घोषणा की। अहा ! तुम्हारी तरह अपने आप को अखिल ब्रह्मांड के साथ समरस कर देने वाले शासक इस संसार में, किसी भी युग में कुछ विरले ही होते हैं। उच्च आदर्श प्रेमी मानव संतान तुम्हें कभी भुला नहीं सकती।

× × × ×

देवी ! तुम किसी स्थान विशेष या जाति विशेष की नहीं, भारतीय राष्ट्र की पूज्या हो। तुमने अपने त्याग और वीरता से, दान पुण्य और कर्तव्य-परायणता से, भारत के बड़े संकट के दिनों में जन्म भूमि का मस्तक ऊंचा रखा है। तुम्हारी पुण्य स्मृति इस समय भी हृदयों में उत्साह और अभिमान का संचार करती है। तुम्हारे सद्गुणों का आदर्श हमारे सामने सदा उपस्थित रहे। तुम्हारे जैसी देवियां इस भूमि को, और हां, प्रत्येक देश को समय समय पर कृतार्थ कर आवश्यकतानुसार कर्तव्य—निष्ठा का संदेश सुनाया करें। तुम्हें सभक्ति प्रणाम !

(१२)

राम मोहन राय के प्रति

महान सुधारक ! अठारहवीं शताब्दी के घोर अन्धकार के स्मरण मात्र से भी जी घबराता है। भारतीय समाज परिवर्तन और संस्कार की महिमा भूल गया था। बाल विवाह, कन्या बध, सतीदाह आदि कुरीतियां कब क्यों आरम्भ हुई, इसे कोई नहीं सोचता था। सब अपने मान मर्यादा की रक्षा के नाम पर अपनी बहिन बेटियों को उनका शिकार बनाते चले जा रहे थे। धर्म के नाम पर अधर्म हो रहा था। चहुं ओर अविद्यांधकार था। ऐसे काल में, प्रकाश की छटा दिखाने के लिए तुम इस पुण्य भूमि पर पधारे थे। तुम धन्य हो !

× × × ×

तुमने सुकुमार अवस्था में ही, अपनी महत्ता से लोगों को चकित कर दिया था। पूरे पन्द्रह साल के भी न होने पाये थे कि तुमने अनेक कष्ट उठा कर अरबी, फ़ारसी और संस्कृत का अच्छा ज्ञान प्राप्त कर लिया और गूढ़ धार्मिक विषयों के चिन्तन में लग गये । मूर्ति-पूजा के सम्बन्ध में तुमने कितने ही पंडितों से खूब वाद विवाद किया। तुम्हारी इस विषय की रचना से सब तुम्हें बुरा भला कहने लगे, पर तुम्हारे तर्क का किसी से कुछ जवाब देते न बना। तुम्हारे पिता ने तो तुम्हें घर से निकाल देना ही अपना परम कर्तव्य समझा। पर तुम भी विचलित होनेवाले न थे।

भारतवर्ष में जगह जगह भ्रमण करके, भिन्न भिन्न भाषायें सीखकर, विविध धर्म ग्रन्थों का अवलोकन करते रहे। पीछे, इस देश की सीमा पार कर, दुर्गम हिमालय को लांघ कर, तुम तिब्बत में पहुंचे और अनेक कठिनाइयों में बौद्ध धर्म का ज्ञान प्राप्त किया। अहा! अबसे लगभग डेढ़ सौ वर्ष पहले, रेल आदि यात्रा के साधनों के अभाव में, राज-नैतिक और धार्मिक पराधीनता तथा सामाजिक अन्धकार के वायु मंडल में, एक सोलह वर्ष के बालक के इस साहस की कौन मुक्त कंठ से प्रशंसा न करेगा? राम मोहन! निस्संदेह ऐसे उदाहरण संसार में विरले मिलेंगे। तुम धन्य हो

× × × ×

चार वर्ष घर से बाहर देश विदेश में, और पश्चात् अपने घर में, अनेक कष्ट उठा कर भी तुमने अपना अन्ध विश्वास–विरोधी स्वर मन्द न किया, दृढ़ता–पूर्वक आन्दोलन जारी रक्खा। तुम जानते थे भारतवर्ष धर्म–प्रधान है, यहां सामाजिक कार्यों में भी धर्म का बड़ा नियंत्रण हैं। तुमने धार्मिक–सुधारों की ओर यथेष्ठ ध्यान दिया। ब्रह्म–प्रति–पादक ग्रन्थों की रचना तथा अनुवाद किया, और उनका सर्व साधारण में प्रचार किया, जिससे वे स्वार्थी पंडितों के बहकाये में न आवें, और स्वयं यह जानलें कि मूल शास्त्रों के अनुसार तथा, युक्ति से भी, एक ईश्वर ही उपास्य देव है। साथ ही अन्य धार्मिक विषयों के सम्बन्ध में भी तुमने स्पष्ट कर दिया कि हिन्दू शास्त्रों की वास्तव में क्या आज्ञा है, और व्यवहार में कहां तक उन के विपरीत कार्य हो रहा है। तुम्हारे प्रबल उद्योग से, तुम्हारे तर्क–

युक्त शास्त्रार्थ से जहां बड़े बड़े पंडितों की बुद्धि ठिकाने आयी, वहां झूठे आक्षेप करने वाले विधर्मियों पर भी कुछ कम प्रभाव नहीं पड़ा। प्रत्यक्ष रूप में न सही, अपने मन में तो वे हिन्दू धर्म की महत्ता मानने लग ही गए। फिर उनकी वाणी के बल का ह्रास हो जाना स्वाभाविक ही था। कौन कह सकता है कि यदि तुम इस महान कार्य में आगे न बढ़ते तो हिन्दू समाज के भावी सुधारकों को स्थिति कितनी अधिक शोचनीय मिलती। महोदय ! नमस्कार !

× × × ×

हे भारतवर्ष के आधुनिक युग के आदि प्रवर्तक ! तुमने जान लिया कि समाज सुधार के लिए मातृ शक्ति का उत्थान, स्त्री जाति का उद्धार, करना है। तुम इस कार्य में जुट गये। तुमने देखा कि सती प्रथा से, वास्तव में विधवाओं का, अधिकांश में उन की इच्छा के विरुद्ध, बलिदान किया जाता है। उफ़ ! लोकाचार के कारण बहुधा लोग कैसे अविवेकी और निर्दयी होजाते हैं ! पुरुष अपनी बहिनों और माताओं को जीते जी आग में जलते हुए देखते थे और इसके विरुद्ध आवाज़ उठाने का साहस न करते थे। प्रायः वे स्वयं ही उन्हें सती होने के लिए प्रेरित करते थे। यही नहीं, यदि कोई स्त्री आग में जलते समय की यंत्रणा न सह सकने का भाव दिखाती थी, तो धर्म और लोकचार के के ठेकेदार—उस स्त्री के सगे सम्बन्धी ही—इससे अपने वंश की मर्यादा भंग समझकर उसे ज़बरदस्ती जलने के लिए विवश करते थे।

× × × ×

दयालु राम मोहन ! तुम्हें यह कांड बहुत रोमांच-कारी प्रतीत हुआ। तुम इस भयानक प्रथा को उठाने पर तुल गये। तुम ने इस के लिए शास्त्रीय प्रमाण-युक्त लेख और पुस्तकें लिख कर, और उन का प्रचार करके लोक मत तैयार किया। साथ ही तुम ने सरकार को भी यह समझाया कि यह प्रथा शास्त्र विहित नहीं है, और इसे बन्द कर देना जनता के धर्म में हस्तक्षेप करना नहीं है। तुम्हारी दृढ़ता, परिश्रम, और स्वार्थ-त्याग का ही यह फल हुआ कि अन्ततः सन् १८२९ ई० में यह प्रथा क़ानून द्वारा उठा दी गयी। स्त्रियों के उद्धार के विषय में तुम इसी बात से सन्तुष्ट नहीं होगये। तुमने मनुष्यों के बहु-विवाह रोकने, कन्या-विक्रय और कन्या-बध बन्द करने, स्त्रियों के दायाधिकार के सुरक्षित रखने में भी महान प्रयत्न किया। इन कार्यों में तुम्हें अन्ध विश्वासी, और पुरातन-रूढ़ि-प्रेमियों का भयंकर विरोध सहना पड़ा, पर तुम सदैव निर्भीकता-पूर्वक अपने कर्तव्य का पालन करते रहे। कृतज्ञ हिन्दू जनता इन उपकारों को कभी न भूलेगी। तुम वन्दनीय और चिर स्मरणीय हो !

× × × ×

तुम्हारे तत्कालीन विचार उस समय की अपेक्षा कितने आगे बढ़े हुए थे, तुम कितने दूरदर्शी थे, इसका स्पष्ट प्रमाण हमें इस बात में मिलता है, कि तुम्हारे सुझाये हुए कितने ही विषय ऐसे हैं, जिन के लिए, अब सौ वर्ष बीत जाने पर भी, आन्दोलन करना अभीष्ट है। धार्मिक और सामाजिक विषयों के अतिरिक्त, राजनैतिक आदर्श स्थिर करने में भी तुम निस्सन्देह महान थे। शासन और न्याय

विभागों के पृथक्करण, शासन कार्य के लिए भारत सरकार के भारतीय जनता के प्रति उत्तरदायी होने, भारतवर्ष के, ब्रिटिश साम्राज्य में, स्वाधीनता-प्राप्त उपनिवेशों के समान पद पाने; और भारतवर्ष की आर्थिक अवस्था का सम्यग् सुधार होने, आदि की आवश्यकता तुम सौ वर्ष पहले अनुभव कर चुके थे। अंगरेज़ों को इस आवश्यकता का ज्ञान कराते हुए, तुमने इंगलैंड में ही प्राण विसर्जन किये थे। दुःख का विषय है कि ब्रिटिश साम्राज्य के अनेक सूत्रधार अब बीसवीं शताब्दी के इतने वर्ष व्यतीत होजाने पर भी, संसार के रंग मंच पर बड़ी बड़ी उथल पुथल मचाने वाली घटनाओं का नाटक देख लेने पर भी, उन बातों का महत्व यथेष्ट रूप से नहीं समझ पाये। इस प्रकार तुम इन लोगों से कितने आगे की बात सोचने वाले थे, यह स्पष्ट है। भारतीय इतिहास में तुम्हारा विशेष स्थान है। अन्य देशों के निवासी भी भविष्य में तुम्हारा महत्व अधिकाधिक समझेंगे, ऐसी आशा है।

× × × × ×

तुम्हारे द्वारा स्थापित ब्रह्म समाज के अन्य सिद्धान्तों में, सार्वभौमिक उपासना का भाव कितना सुन्दर है, कितना उदार है! चाहे जिस जाति, सम्प्रदाय, धर्म, समाज या पद वाले क्यों न हों, परमेश्वर की उपासना करने का, सब को समान अधिकार है; यह विचार कुछ नया नहीं है, हिन्दू शास्त्रों के अनुसार ही है, तथापि तुमने इसे उस अन्धकाल में स्मरण कराया, यह बात तुम्हारे लिए कुछ कम यश की नहीं है। तुम धार्मिक समानता और स्वतंत्रता के द्वारा भारतवर्ष को, और यथा सम्भव संसार

को एक प्रेम सूत्र में संगठित करना चाहते थे, प्रार्थना विधि में कुछ विदेशीय भावों का समावेश करने, और भारतवर्ष में अंगरेज़ी शिक्षा के प्रचार में विशेष रूप से सहायक होने में भी तुम्हारा उद्देश्य पूर्व को पश्चिम से, पश्चिमी ज्ञान, विज्ञान और सभ्यता से, परिचित कराना था। तुम पूर्व और पश्चिम का सम्यग् समन्वय करना चाहते थे। यह इच्छा, यह आदर्श महान है, और इतना महान है, कि संसार की वर्तमान स्थिति में, इसे अव्यवहारिक कहा जा सकता है। तथापि तुम्हारे शुभ विचारों का प्रभाव विशेपतया भारतीय जागृति में, और, थोड़ा बहुत इस देश के बाहर भी, अवश्य पड़ा है; मार्ग कुछ तो प्रशस्त हुआ ही है।

× × × ×

और लोग, अन्य धर्मावलम्बी तथा विदेशी तुम्हें चाहे जितनी देर में समझें और चाहे जितना कम समझें, भारतवासियों को, और उन में भी तुम्हारे अनुयायी बनने का दम भरने वाले ब्रह्म समाजियों को तो तुम्हारे हृदय की विशालता का, तुम्हारे उद्देश्यों की महत्ता का हर दम ज्ञान रहना चाहिये। ऐसा न हो कि वे भारतवर्ष के अन्य अनेक, आवश्यकता से अधिक, पन्थों में एक पन्थ और बढ़ाने वाले हो जांय। परमात्मा हमें सुबुद्धि दे, हम तुम्हारी बात की केवल लकीर पीटने वाले, तुम्हारे शब्दों की बाल की खाल निकालने वाले, व्यर्थ वाद-विवाद करने वाले न हों। हम तुम्हारा वास्तव में, भाव में, लक्ष्य में, अनुकरण करने वाले बनें। महात्मन् ! तुम महान थे ! तुम्हें सादर प्रणाम !

(१३)

दयानन्द के प्रति

भगवन् ! उन्नीसवीं शताब्दी के आरम्भ में, भारतीय समाज में, जागृति के कुछ साधन जुट जाने पर भी कैसा अन्धकार छाया हुआ था ! चिर काल की राजनैतिक पराधीनता ने राष्ट्र की आत्मा पर ऐसा गहरा रंग जमाया हुआ था, और कूटनीतिज्ञ शासकों की शिक्षा नीति का ऐसा दुष्प्रभाव होरहा था कि भारतीय युवक सामाजिक और धार्मिक विषयों में, प्रत्येक बात में विदेशी आदर्श की खोज करते थे, उन्हें स्वदेश किसी योग्य प्रतीत ही नहीं होता था। साधारण युवकों की कौन कहे, बड़े बड़े दिल व दिमाग़ रखने वाले, हृदय से सुधार का बीड़ा उठाने वाले भी पाश्चात्य प्रवाह में बहे जा रहे थे । बड़ी आवश्यकता थी कि कोई वीरात्मा जागृत होती हुई भारत-सन्तान को इस प्रकार के कुसंस्कारों से रक्षित रख कर उसे नवीन जीवन प्रदान करे। इस महान कार्य की सिद्धि के लिए तुमने इस देव-भूमि पर पधारने की कृपा की। तुम धन्य हो !

× × × ×

तुम्हें अपने उद्देश्य की पूर्ति का आरम्भ से ही विचार था। इसी लिए तुमने गृहस्थ आश्रम में प्रवेश नहीं किया, और सांसारिक बन्धनों, घर परिवार आदि को, जल्दी ही छोड़ दिया। तुमने ज्वलन्त वैराग्य रखा, और कठोर तपस्या की। आदर्श स्थिर करने के लिए तुमने भारतीय संस्कृति

और परम्परा का ही ध्यान रखा । वेदों और वैदिक धर्म -ग्रन्थों को बड़े परिश्रम से अध्ययन और मनन किया । पाश्चात्य शिक्षा और सभ्यता पर मुग्ध न होकर तुमने अपने स्वदेशाभिमान और दूरदर्शिता का अपूर्व परिचय दिया । अपनी गम्भीर गवेषणा से तुमने यह जान लिया, और दूसरों के प्रति सिद्ध कर दिया कि संसार के समस्त देशों में भारतवर्ष ने ही सब से पूर्व धर्म का सम्यक् मर्म समझा था, यहां के समान ब्रह्म-विद्या का भंडार और कहीं नहीं है । हां, समयानुकूल संस्कार न होते रहने के कारण उस धर्म पर, अन्धकार-काल में कुछ आवरण चढ़ गया है, उसे दूर करने पर वह पुनः देदीप्यमान होजायगा । फिर, अल्पज्ञों या विरोधियों को उस पर कोई आक्षेप करने का अवसर न रहेगा । सब इसके सामने, नत-मस्तक होने में अपना सौभाग्य और गौरव समझेंगे ।

× × × ×

स्वामिन ! तुमने स्थान स्थान पर, विशेषतया पंजाब, संयुक्त प्रान्त, बम्बई, और राजस्थान में, निर्भय होकर अनेक व्याख्यान दिये, अनेक आर्य समाजें स्थापित कीं । इन संस्थाओं ने वैदिक धर्म और हिन्दू सभ्यता का डंका बजा दिया, विशुद्ध और सत्य सनातन (प्राचीन) धर्म का प्रचार किया, अनेक सामाजिक और धार्मिक दुर्गुणों को हटाने का घोर आन्दोलन किया । धर्म के नाम पर किये जाने वाले विविध पाखंडों और अत्याचारों का भंडा-फोड़ करके तुमने अपनी क्रियाशीलता का अच्छा परिचय दिया । पहले अनेक हिन्दू, अपने धर्म में शंका रखने के कारण

अन्य धर्मों की शरण जा रहे थे। आर्य समाज की बदौलत उनका भ्रम दूर हुआ। अन्य मतावलम्बियों की भी यह धारणा जाती रही कि धार्मिक विषय में हिन्दू निर्बल और परावलम्बी हैं। फिर तो उन्हें, भारत भूमि से बाहर जन्म लेने वालों को भी, हिन्दू धर्म ग्रहण करके इसका उदार संदेश सुनने का अवसर मिलने लगा। तुमने हिन्दू धर्म को विलोप की दिशा से हटा कर, अभ्युत्थान की ओर लगा दिया। उस में अन्तर्राष्ट्रीय धर्म बनने की क्षमता प्रदान कर दी। तुम धन्य हो!

× × × ×

अन्यान्य बातों में तुमने यहां की मातृ-शक्ति जागृत की। तुमने बतलाया कि स्त्रियों को मनुष्यों की अर्द्धांगिनी कहा जाता है, तो वे वास्तव में इसके योग्य होनी, और बनायी जानी, चाहियें। नन्हीं नन्हीं बच्चियों के विवाह बन्द करने होंगे, उन के लिए शिक्षा-प्राप्ति के साधन प्रस्तुत करने होंगे। अविद्यान्धकार उन के लिए वैसा ही हानिकारक है, जैसा पुरुषों के लिए। पुनः उन्हें पर्दे की चार-दीवारी में बन्द न रख कर, उन के शरीर और मस्तिष्क को स्वास्थकर वायु देनी चाहिये। बाल विधवाओं का होना समाज के रोगी होने का चिन्ह है। और किसी स्त्री को वैधव्य जीवन व्यतीत करने के लिए बाध्य करना अन्याय है। महिला जगत तुम्हारे उपकारों को सदैव कृतज्ञतापूर्वक स्मरण रखेगा। महिलाओं के अतिरिक्त, तुमने शूद्रों और अछूत कहे जाने वालों को मनुष्योचित अधिकार दिलाने

की ज़बरदस्त वकालत करके उन के साथ, नहीं नहीं, समस्त समाज के साथ, अपनी असीम सहानुभूति का परिचय दिया।

× × × ×

कौन जानता है, कि यदि तुम्हारा शुभागमन न हुआ होता, तो भारतवर्ष का इधर का इतिहास कैसा होजाता? स्वदेशी भाषा, भेष और भाव, गुरुकुल शिक्षा प्रणाली, ब्रह्मचर्य, वर्णाश्रम धर्म मर्यादा, शुद्धि, संगठन, दलितोद्धार, गोरक्षा, आदि राष्ट्रीय जीवन के जिस पहलू की ओर भी हम आंख उठाकर देखते हैं, उस पर ही तुमने अपनी एक खास छाप लगादी है, तुमने जाति को व्यापक रूप में देखा। तुम्हें उसके सम्पूर्ण शरीर का इलाज करना था, राजनैतिक जैसे महत्व-पूर्ण विभाग की ओर तुम उदासीन कैसे रह सकते थे? तुमने अपने ग्रन्थ 'सत्यार्थ प्रकाश' में इस विषय का भी यथेष्ठ विवेचन किया है। इतने वर्ष पूर्व तुमने विविध प्रश्नों पर जो विचार प्रकट किये थे, उन की सच्चाई अब अधिकाधिक स्पष्ट होती जा रही है। तुम्हें बारम्बार नमस्कार!

× × × ×

महर्षि! तुम्हरे द्वारा संस्थापित कल्याणकारणी आर्य समाज की शक्ति का हिसाब केवल इस बातसे नहीं लगाया जा सकता कि इसके रजिस्टरों में, सदस्यों की नामवाली कितनी बड़ी है। यह भी तो देखना होगा कि उस के क्षेत्र से बाहर उन लोगों की संख्या कितनी तेज़ी से बढ़ती जा रही है,

जो सोलहों आना नहीं, तो रुपये में दस बारह आने अवश्य आर्य समाजी हैं, जो अपने दैनिक व्यवहार में, मौन भाषा में, हे महर्षि ! तुम्हें सभक्ति श्रद्धाञ्जलि अर्पित करते हैं।

× × × ×

महात्मन ! अब हिन्दुओं के अतिरिक्त अन्य धर्मों के अनुयाइयों के कार्य व्यवहार से भी तुम्हारी विजय की सूचना मिल रही है। तुम ने उपदेश दिया था कि जिस बात को बुद्धि ग्रहण न करे, जो बात केवल रूढ़ि परम्परा या अन्ध विश्वास के आधार पर स्थित हो, उसे त्याग दो, उसे कभी मत मानो। इस बात की पहले बहुत हंसी उड़ाई गयी, फिर कठोर विरोध किया गया, परन्तु अब यही सर्व मान्य होती जारही है। जिन लोगों के धर्म का मूल सिद्धान्त ही यह था कि मज़हब में अक्ल को दख्ल नहीं, उनके आचार्य आज इधर उधर झांक रहे है। उनके अनुयाइयों में विद्रोह और क्रान्ति मची हुई है। वे अपने धर्म-ग्रन्थों की नये ढंग से, वैज्ञानिक अर्थ युक्त, तर्क-संगत व्याख्या कर रहे हैं। उन्हें अब यह धारणा होचली है कि प्रगति के साथ साथ न चलेंगे, तो हम कहीं के न रहेंगे। हे इस युग के बुद्धिवाद के संदेश-वाहक ! वैदिक (बुद्धि संगत) शिक्षा प्रचारक ! हम तुम्हारा कहां तक गुणगान करें, तुम वास्तव में भविष्य द्रष्टा थे, और भविष्य के योग्य पथ-प्रदर्शक थे।

× × × ×

हे महान उपदेशक ! तुम अपनी मृत्यु से भी हमें महान शिक्षा दे गये। तुम्हारी ऐहिक लीला की अन्तिम घटना

तुम्हारे विरोधियों तक के मुंह से तुम्हारी प्रशंसा कराती है। अहा! तुम्हें विष देने वाला तुम्हारे सन्मुख है, तुम चाहो तो सहज ही उसे उसके किये का फल चखा सकते हो। परन्तु यदि तुम ऐसा करते, तो फिर तुम्हारी विशेषता क्या होती? तुमने जन्म भर उदारता की शिक्षा दी थी, अन्त समय तुम उस की शिक्षा देने से कैसे चूकते? तुम हत्यारे को चुप चाप निकल भागने का रास्ता बताते हो, उसे उसका वाञ्छित धन देते हो और कहते हो मैं किसी को बन्धन में डालने नहीं आया, मैं तो सब को मुक्त करने के लिए आया हूं। महोदय! तुम धन्य हो!

× × × ×

हे आर्य समाज के आदि प्रवर्तक! आर्य समाज ने देश और धर्म के लिए जो आहुतियां दी हैं, वे इस महान संस्था के सर्वथा योग्य हैं। गुरुदत्त विद्यार्थी, लेखराम, श्रद्धानन्द, लाजपतराय आदि पुरुष-रत्नों का भारत सदैव कृतज्ञ रहेगा। तथापि जी चाहता है कि आर्य समाज से और अधिक सुधारक और अधिक सच्चे उपदेशक मांगे जांय। इस समय बहुत से सुधारक और उपदेशक तुम्हारे प्रति अधिकांश में मौखिक श्रद्धा रखते हैं, वे तुम्हारे मार्ग का वहीं तक अनुकरण करते हैं जहां तक उनके, तथा उनके परिवार के सांसारिक सुख, आराम, और मान प्रतिष्ठा आदि में कोई बाधा उपस्थित न हो। वे अपने बाल बच्चों को तुम्हारी बतायी हुई शिक्षा संस्थाओं में नहीं भेजते, वे स्वदेशी भाषा, भेष और भाव का उतना आदर तथा व्यवहार नहीं करते, जितना तुम्हारी आत्मा उन से आशा करती होगी। वे व्यव-

हार में जाति पांति का भेद मानते हैं, घृणित दलबन्दियों में समय और शक्ति नष्ट करते हैं। इन सब बातों का शीघ्र अन्त होना आवश्यक है। तुम्हारे नाम पर बहुत सी संस्थायें हैं, परन्तु उन में से अनेक में आदर्श कार्यकर्त्ताओं का अभाव खटकने वाला है। साधारण योग्यता वाले पुरुष नेता बनने की फ़िकर में हैं। तुम्हारे समय में खंडन मंडन की आवश्यकता रही होगी, तो यह कोई पर्याप्त कारण इस बात का न माना जाना चाहिये कि इस समय भी लेखों या भाषणों में असहिष्णुता की छटा विद्यमान रहे। तुमने देश को, सेवा और सुधार का उद्येश रखने वाली, एक आर्य समाज की भेंट की थी अब इस संस्था से संसार को बहुत से फलों की आवश्यकता है। आर्य समाज बताये, वह कितने दयानन्द और श्रद्धानन्द आदि दे सकता है। हे महर्षि! हमें आशा है, समाज इस प्रश्न को हल करने में लगेगा, और दिन दिन तुम्हारी कीर्ति और यश की अधिकाधिक घोषणा होगी। सादर वन्दना!

---

(१४)

लक्ष्मी बाई के प्रति

वीराङ्गणे! बहुधा कहा जाता है कि स्त्रियां तो मूर्ख और कायर होती हैं, वे राजनीति या युद्ध-नीति आदि की बातें क्या जानें। उनका कार्य-क्षेत्र घर की चार-दीवारी के अन्दर

होता है। इस प्रकार की पक्षपात-पूर्ण बातें सुनने के हम आदी होगये हैं। परन्तु पिछली शताब्दी के, केवल सत्तर वर्ष पहले के, तुम्हारे समुज्वल दृष्टान्तों की अवहेलना कौन कर सकता है ? उनकी प्रमाणिक कथा तो अमिट अक्षरों में लिखी जा चुकी है; अनुदार इतिहास-लेखकों के कुटिल प्रयत्नों से वह छिप नहीं सकती। स्वयं अंग्रेज़ों से तुमने लोहा लिया था; वे भी तो तुम्हारी वीरता के साक्षी हैं। कौन गुण-ग्राही, कौन वीर-पूजक तुम्हारे प्रति श्रद्धा-भाव नहीं रखेगा ?

× × × ×

देवी ! यद्यपि तुम ब्राह्मण वंशोत्पन्न और स्वभाव से कोमल, दयालु और धर्मात्मा थीं, राजमहिषी का पद प्राप्त करने पर, तुम उसके भी सर्वथा योग्य सिद्ध हुईं। आरम्भ से तुम्हारा नाम मन्नू बाई था, परन्तु झांसी में आने पर प्रजा तुम्हारे गुणों पर मुग्ध होकर तुम्हें लक्ष्मी बाई कहने लगी। सन् १८५६ ई० की बात है। तुम्हारे पूज्य पति ने, बीमार पड़ने पर अपने दत्तक पुत्र को राज्य का अधिकारी बनाना चाहा था। पीछे, उनके स्वर्गवास के पश्चात् तुमने बहुतेरा अनुनय विनय किया कि गोद लिए बालक का अधिकार सुरक्षित रहे, और तुम्हें राज्य कार्य चलाने की अनुमति हो। संधि की शर्तें, मित्रता के नियम, सरकार को दी हुई सहायता, गोद लेने के सम्बन्ध में हिन्दुओं का प्राचीन रीति रिवाज आदि सब तुम्हारे पक्ष में थे। तथापि इन सब की अवहेलना करके, अन्य कई देशी राज्यों की भांति झांसी भी ब्रिटिश राज्य में मिलाली गयी।

× × × ×

इस से तुम्हें बड़ी वेदना हुई। तुम ब्रिटिश रेज़ीडेंट से मिलीं और उससे कहा 'मेरी झांसी मुझे न दोगे?' तुम्हारे इस तेज-पूर्ण वाक्य से वह अधिकारी बहुत चकित हुआ। तथापि कोई प्रतिकार न किया गया। पर तुमने भी इसे साधारण अबलाओं की भांति सहन करना पसन्द न किया। यह जानते हुए भी, कि सच्चाई और न्याय का पक्ष लेना, अनेक आपत्तियों को मोल लेना होगा, तुम अपने कर्तव्य का पालन करने से तिल भर न डिगीं। तुम धन्य हो!

× × × × ×

सन् १८५७ ई० का — भारतीय स्वतंत्रता के विफल युद्ध का — समय आया। तुमने अपने क्षेत्र में, यथा शक्ति अंग्रेज़ों का उपकार ही किया था। तथापि, अफ़सोस! जब उन पर संकट आया, जब उनके सताये हुए अनेक अन्य आदमियों ने उनके विरुद्ध तलवार मियान से निकाली, जब और सब उनसे बदला लेने के लिए मरने मारने को तैयार होगये, उस समय उनका तुम्हारे प्रति भी सन्देह हो गया। तुम उनसे शत्रुता करना नहीं चाहती थीं, पर उनका सन्देह तो किसी भांति मिटाये नहीं मिटता था। उनके निष्कारण सन्देह ने, उनके द्वारा किये हुए अपमान ने, तुम्हारे हृदय पर कड़ी चोट पहुंचायी। तुम्हारी शान्त मूर्ति आवश्यकतानुसार तेजयुक्त रण-नायिका बनगयी।

× × × ×

बड़े बड़े मर्दों को भी चकित करनेवाली, मर्दानी राणी! तुम अपने दत्तक पुत्र को अपनी पीठ पर बान्धकर, तीर की तेज़ी से घोड़ा दौड़ाये जा रही थीं, उस समय तुम्हारी आकृति

कितनी विलक्षण थी ! तुम्हारा दर्शन मुर्दों में संजीवनी शक्ति का संचार करनेवाला था, और शत्रुओं के लिए काल-स्वरूप था। ओह ! दर्शक तुम्हें देखते थे और चकाचौंध होजाते थे। उन्हें अपनी आंखों पर विश्वास नहीं होता था। ऐसा वीर, साहसी और तेजवान युवक कौन है, पुरुष है या स्त्री ? मानवी है, या देवी ? कौन कल्पना कर सकता था कि राजकुल में पालित पोषित, राज सिंहासन को सुशोभित कर चुकने वाली महाराणी की ऐसी वेष भूषा हो सकती है। भारतवर्ष के विविध युद्धों ने इतिहास को अनेक वीर-रस-पूर्ण पृष्ठ प्रदान किये हैं, पर तुम्हारा उदाहरण अपनी तरह का कुछ निराला ही है। तुम धन्य हो !

× × × ×

हे वीरता की अनोखी प्रतिमा ! अंगरेज़ जाति का इतिहास कुछ पुराना नहीं है। वास्तव में इस जाति के निर्म्माण और स्वतंत्र जीवन को अभी पूरे एक हज़ार वर्ष भी नहीं हुए। पर उन्हें अभिमान है कि हम ने बड़े बड़े सेनापतियों के कौशल और शौर्य को देखा है। परन्तु क्या उन्हों ने कभी स्वप्न में यह सोचा होगा कि भारतवर्ष की एक विधवा नारी साधारण सी सेना लेकर, इतने समय तक उनके सामने डटेगी, और हां, उनके दांत खट्टे करेगी। रात रात भर घूम फिर कर रण क्षेत्र के प्रत्येक भाग की निगरानी करना, थके हुओं को ढाढ़स बंधाना, गिरे हुओं को उठाना, युद्ध में आहत और अनाथ हो चुकने वालों की समुचित व्यवस्था करना, और हां, स्वयं भयंकर शस्त्र-प्रहारों से बेचैन होने पर, मृत्यु की गोद में जाते जाते भी आक्रमणकारी को धराशायी कर देना,

ऐसी बातें हैं जो तुम्हें सदा के लिए अमर कर गयी हैं। ओह ! यदि तुम्हारे साथी तुम्हारी बुद्धि और महिमा को उतना समझ सकते, जितना तुम्हारे शत्रुओं ने समझा था, और यदि तुम्हारे पक्ष वालों में से कुछ घर के भेदी न बन जाते तो घटनाओं की दिशा कुछ और ही होती, इतिहास कुछ और ही तरह लिखा जाता।

× × × × ×

मातेश्वरी ! कुछ भी हो, तुम अपना काम कर गयीं। तुम ने भली भांति सब को दर्शा दिया कि माधुर्य और सौंदर्य के साथ तेज और शौर्य का सहयोग होना सर्वथा सम्भव है। कमल की कोमलता और वज्र की कठोरता का एकही देह-धारी में सम्मिश्रण हो सकता है। अपने आश्रितों की माता के समान रक्षा करने और अपने शत्रुओं पर भूखी सिंहनी की तरह झपटने में एक ही समय सफलता प्राप्त की जा सकती है। जहां सुदक्ष पुरुषों की बुद्धि काम नहीं करती, वहां कभी कभी नारी मस्तिष्क सहज ही समस्या हल कर डालता है। गुणों की क़दर करने वाले निष्पक्ष, विवेकशील पुरुष और स्त्रियां क्यों न तुम्हें श्रद्धा और भक्ति से स्मरण करें ! तुम्हारी स्मृति से आधुनिक महिलाओं की नसों में वीरता का संचार होता है। तुम कर्तव्य-परायणता और निर्भीकता की जीवित जागृत प्रतिमा थीं। तुम्हारा स्मारक बनाना इन सद्‌गुणों का आदर करना है। आओ मां ! हमारे हृदयासन पर विराज-मान हो। तुम्हारे साहस और बलिदान से हमें अपने आदर्श स्थिर करने में, अपना जीवन निर्माण करने में प्रोत्साह और स्फूर्ति मिले।

{(१५)}

तिलक के प्रति

हे राष्ट्र-सूत्रधार ! भारतवर्ष की आधुनिक राजनैतिक जागृति में तुम्हारे प्रयत्नों का बड़ा भाग है। तुम्हारे त्याग और कष्ट-सहन से पूर्व यहां 'स्वराज्य' और 'वन्देमातरम्' शब्दों का उच्चारण मात्र एक भयंकर अपराध माना जाता था, उत्कट देश-भक्ति, राज-द्रोह समझी जाती थी। अधिकारी इस यत्न में रहते थे कि भारतवासियों को स्वाधीनता की वायु न लगे, यह स्वर्ण-भूमि अनन्त काल तक उनके लिए काम धेनु बनी रहे; चाहे यहां की सन्तान दूध और अन्नादि के अभाव में अस्थि पिंजर क्यों न रह जावें। ऐसे कठोर समय में तुमने यह घोषणा ही नहीं की कि 'स्वराज्य हमारा जन्म-सिद्ध अधिकार है, और हम इसे लेकर रहेंगे' वरन् देश के आबाल, वृद्ध, वनिता प्रत्येक व्यक्ति को इस मंत्र की दीक्षा भी दी। आज दिन भारतवासी जो अपने इस जन्म-सिद्ध अधिकार की प्राप्ति के लिए प्रत्येक प्रकार की तपस्या कर रहे हैं, वह बहुत कुछ तुम्हारे आशीर्वाद का फल है। सभा-सोसायटियां तुम्हारी जय-नाद करते हुए, तुम्हारे प्रति अपनी भक्ति भावना की साक्षी देती हैं। तिलक महाराज ! परमात्मा हमें बल दे कि हम तुम्हारे सिद्धान्तों की विजय घोषणा कर सकें।

× × × ×

हे महान् नीतिज्ञ ! कूट-नीति-निपुण अधिकारियों ने

अपना अधिपत्य चिरस्थायी करने के लिए यहां के भावी नागारिकों को यह शिक्षा दी कि "भारतवर्ष एक देश नहीं है, यहां सैकड़ों भाषाएं, हज़ारों जातियां और नाना प्रकार के परस्पर-विरोधी मत मतान्तर हैं। यहां के निवासी हमेशा आपस में लड़ते झगड़ते रहे हैं। यदि हम यहां सुव्यवस्था न रखें तो भिन्न भिन्न जातियों और सम्प्रदायों के आदमी आपस में कट मरें, और अन्य देश वाले इस भूमि पर अधिकार कर लें।" इस प्रकार की घातक शिक्षा ने यहां घोर अनर्थ किया है। इसे ग्रहण कर भारत सन्तान का आत्म-सम्मान तथा विचार-स्वातंत्र्य एक दम लुप्त होजाना स्वाभाविक ही था। अपने पूर्व संस्कारों के कारण, यदि हजारों में से कोई एकाध व्यक्ति अपनी प्रतिभा का परिचय देने भी लगता था, तो दमन-चक्र उस की सब स्फूर्ति का अन्त कर देता था, उसका हौसला जल्दी ठंडा होजाता था। हे महापुरुष! नशीली तथा विषैली शिक्षा की लम्बी घूंट पी कर भी, तुम उसके दुर्गुणों से परिचित रहे, और नवयुवकों को देश सेवा के लिए तैयार करने के वास्ते कई वर्ष अवैतनिक रूप से राष्ट्रीय शिक्षा का प्रचार करते रहे, यह बात तुम्हारी अथाह बुद्धिमत्ता की सूचक है। तुम धन्य हो!

× × × ×

हे करुणा-मूर्ति! दीन दुखियों की सेवा करने का तो मानो तुमने व्रत ही लिया था। स्वयं सेवकों और सेवा समितियों ही के लिए नहीं, बड़े बड़े नेताओं तक के वास्ते तुम्हारा दृष्टान्त शिक्षा-प्रद है। बम्बई प्रान्त में प्लेग और अकाल का भीषण प्रकोप हो रहा है। बड़े बड़े आदमी अपने व्यक्ति-

गत हित की चिन्ता में हैं, वे बीमारी के स्थानों को छोड़ रहे हैं, और दूर दूर की जगहों में, अपने रहने का प्रबन्ध सुगमता पूर्वक कर लेते हैं। ऐसे विकराल समय में तुम अपना स्वास्थ्य भगवान् के भरोसे छोड़ देते हो, और प्लेग के केन्द्रीय स्थानों में रह कर ग़रीबों के प्राण बचाने में तन्मय हो। उन की झोंपड़ियों में उन के रोगनिवारणार्थ औषधि पहुंचाते हो, साथ ही उन की क्षुधा की चिन्ता करके, दो दो रोटियां भिजवाने का भी आयोजन करते हो। तुम जगह जगह सस्ते अन्न की दुकानें खुलवाते हो। समर्थ लोगों से तो दीन अनाथों को सहायता दिलवाते ही हो, साथ में, अपने लेखों और भाषणों से सरकार को भी इस ओर यथेष्ट ध्यान देने के लिए विवश करते हो। धर्म मूर्ति ! तुम धन्य हो !

× × × ×

भारतवर्ष को पराधीनता से मुक्त करने का अमोघ उपाय असहयोग और बहिष्कार है, यह बात तुम ने वर्षों पहले घोषित कर दी थी। तुम अपने सम्पादकीय लेखों में, और सार्वजनिक भाषणों में बराबर गर्जना करते थे कि "यदि सरकार लोगों के कष्टों की ओर ध्यान न दे तो उसे टैक्स या लगान आदि न दिये जांय। हमारा भविष्य हमारे हाथ में है, जिस दिन हम स्वतंत्रता-प्राप्ति का संकल्प करेंगे, जिस दिन हम सरकार को राज्य करने में सहायता करना बन्द कर देंगे, उसी दिन, बिना हथियार उठाये, बिना रक्त-पात किये, हम स्वतंत्र होजांयगे। हमें स्वावलम्बी बनना चाहिये, राजनीति में भिक्षांदेही की नीति अपमान-कारक है, प्रार्थना-पत्रों की आवश्यकता नहीं; आत्म-संयम, आत्म-बल तथा

त्याग की आवश्यकता है। इन गुणों से युक्त जाति को कोई सांसारिक शक्ति स्वाधीन होने से नहीं रोक सकती"। हे भविष्य द्रष्टा! सादर प्रणाम!

× × × × ×

तुम्हारी निर्भीकता और अधिकारियों का व्यवहार आदि अब ऐतिहासिक बातें हो गयी हैं। तुम्हारे ऊपर लगाये हुए अभियोग के विचार के वास्ते जूरी नियत की जाती है, उसके नौ व्यक्तियों में से सात होते हैं योरपियन। वे बेचारे उस भाषा को भी तो नहीं जानते, जिसमें लिखे हुए तुम्हारे लेखों पर आपत्ति की जाती है। मुक़द्दमे का फ़ैस-ला सुनाया जाता है रात को दस बजे। सज़ा सुनाने से पूर्व जज रीति पूरी करने के लिए पूछता है कि क्या तुम्हें कुछ और कहना है। तुम धैर्य-पूर्वक उत्तर देते हो, "यद्यपि जूरी ने मुझे अपराधी ठहराया है, मेरा अन्तःकरण मुझे पूर्ण रूप से निर्दोष बताता है। संसार का चक्र ऐसी बड़ी शक्ति चला रही है, जिसके आगे मनुष्य की कुछ गिनती नहीं। परमात्मा की इच्छा यही जान पड़ती है कि मेरे संकट सहने से ही मेरे किये हुए आन्दोलन का बल बढ़ेगा।" अहा! इन शब्दों में तुम्हारा अपने सिद्धान्त में, और परमात्मा में कितना विश्वास झलकता है।

× × × ×

लोकमान्य! पराधीन देशों के आदमी प्रायः परम्परा-पूजक बन जाते हैं। अन्यान्य बातों में हम पुराने त्यौहारों और उत्सवों को जैसे तैसे मनाते आरहे है, किसी नये की कल्पना नहीं करते। तुम राष्ट्र को जीवन प्रदान कर रहे थे, ऐसी स्थिति से कैसे सन्तुष्ट होते! तुमने गणपति-उत्सव की

कितनी सुन्दर आयोजना की है । इसमें व्याख्यानों द्वारा जनता में कितना ज्ञान प्रचार होता है, खेल कूद आदि द्वारा कैसी शक्ति-वृद्धि होती है, परस्पर मिलने जुलने से कैसा संगठन होता है, इसे वे ही जानते हैं जो महाराष्ट्र के भिन्न भिन्न स्थानों में इस उत्सव को मनाये जाते हुए देख चुके हैं । क्या ही उत्तम हो, यदि हम अपने पुराने त्यौहारों को मनाने की विधि में, देश काल का विचार कर, समुचित संशोधन करते रहने के साथ साथ, आवश्यकतानुसार नये नये उत्सवों की सृष्टि का भी ध्यान रखें ।

× × × ×

हे विद्वद्वर ! राजनीति के कंटकाकीर्ण मार्ग में अपनी बहु-मूल्य शक्ति लगाते हुए भी तुमने साहित्य क्षेत्र में जो गम्भीर गवेषणा का कार्य किया है, उससे हर कोई यह जान सकता है कि तुम असाधारण थे, असाधारण तत्व के बने हुए थे । तुम्हारे 'ओरायन' और 'आर्कटिक होम इन दि वेदाज़' ग्रन्थ देशी विदेशी बड़े विद्वानों को चकित करते हैं, किसी को कल्पना भी नहीं हो सकती कि इस प्रकार के दलित और पीड़ित देश का निवासी, अधिकारियों से निरन्तर लड़ाई लड़ते हुए भी इस प्रकार की रचना प्रस्तुत कर सकता है । भारत माता अपने गये गुज़रे ज़माने में भी तुम्हारे जैसा सुविख्यात चिर-स्मर्णीय, बहुजन पूजनीय, पुत्र-रत्न उत्पन्न कर सकती है, इस से इस देश की श्रेष्ठता का सम्यक् प्रतिपादन होता है ।

× × × ×

हे कर्मयोग शिक्षक ! भारतवासी भगवान श्रीकृष्ण की शिक्षा का अनर्थ करके झूठे वैराग्य और अकर्मण्यता में अपना

जीवन नष्ट करने लग गये थे। अनेक नवयुवक जीवन-संग्राम में वीर सैनिक की भांति प्रवेश न कर के, उस में उत्साहहीन, निराशावादी अधमरे आदमी की भांति पद पद पर ठोकर खा रहे थे! तुमने भगवद्गीता का वास्तविक अभिप्राय समझाने के लिए 'गीता रहस्य' नामक महान् ग्रन्थ की रचना का विचार किया। इस का तुम्हें सुअवसर तथा अवकाश भी मिला तो जेल में जाकर। तुम संसार को ऐसी चीज़ दे गये, जो अनन्त काल तक अनेक भूले भटकों को सन्मार्ग में प्रेरित करती रहेगी, अन्यायियों को दमन करने के लिए उत्साही सज्जनों को आमंत्रित करती रहेगी। हे विशाल बुद्धि, तपस्वी! तुम्हें प्रणाम!

× × × ×

महामान्य! तुम्हारी गुणावली और कार्यावली विस्तृत और अथाह है। हम तुम्हारे दर्शन किस किस रूप में करें; महान आचार्य के रूप में या निष्काम कर्मयोगी के रूप में? धर्म और ज्योतिष के दिग्गज विद्वान के रूप में, या राजनीति के प्रकांड पंडित के रूप में? कानून के मर्मज्ञ के रूप में, या वेदों सम्बन्धी अन्वेषक के रूप में? दीन दुखियों की सेवा करने वाले के रूप में, या अधिकारियों को अपना कर्तव्य पालन करने की चेतावनी देने वाले रूप में? शिक्षा-प्रेमी अवैतनिक अध्यापक के रूप में या विद्या-भंडार के अनथक जिज्ञासू के रूप में? तुम्हारे सभी रूप आदरणीय और अनुकरणीय हैं। हे बिना मुकुट के शासक! हे हृदय सम्राट! तुम्हें बारम्बार नमस्कार!

तीसरा खण्ड

प्रत्येक सुशिक्षित स्त्री तथा पुरुष का यह फर्ज़ है कि वह संसार भर के धर्म ग्रन्थों को सहानुभूति के साथ पढले। यदि हम दूसरों के धर्मों की उतनी ही इज्ज़त करना चाहते हैं जितनी कि हम चाहते हैं कि वे हमारे धर्म की करें, तब संसार के सभी मतों को प्रेम भाव के साथ अध्ययन कर लेना एक पवित्र कर्तव्य होजाता है। हमको इस बात से डरने की कतई ज़रूरत नहीं है कि दूसरे मज़हब हमारे सयाने बालकों पर अपने असर डाल देंगे।

— म० गांधी.

---

(१)

सुक़रात के प्रति

महात्मन ! तुम ने अब से चौबीस सौ वर्ष पहले, योरप के, शिक्षा और सभ्यता के केन्द्र, यूनान देश में जन्म लिया था। तुम्हें आरम्भ में गाने और कसरत करने की शिक्षा मिली। पीछे तुम ने रेखागणित और ज्योतिष सीखी। तदनन्तर कुछ समय इतिहास और धर्मशास्त्र का अध्ययन करके तुम अपना पैत्रिक कार्य — मूर्ति-निर्म्माण — करने लगे। परन्तु जल्दी ही तुम्हें यह मालूम होगया कि तुम लोगों का अज्ञान दूर करने आये हो। तुम अपने उद्देश्य की पूर्ति में लग गये। तुम्हें सादर नमस्कार !

× × × ×

हे सत्य-धर्म प्रचारक ! तुमने किसी विशेष धर्म का प्रचार नहीं किया, किसी धर्म-पुस्तक की रचना नहीं की। तथापि तुम ने उस बात का प्रचार किया जो प्रत्येक सद्धर्म का आधार है। जन्म भर सत्य का प्रचार करके, सत्य के लिए अपना बलिदान करके, तुमने सत्यता के प्रेमियों के लिए उच्च आदर्श उपस्थित कर दिया। तुम्हारा एथेन्स-वासियों से अत्यन्त प्रेम था, परन्तु वह प्रेम भी सत्य की सीमा का अति-क्रमण नहीं कर सकता था। तुम्हें उन की जहां जो बात अनुचित और असत्य प्रतीत हुई, उस का तुमने तत्काल स्पष्ट रूप में खंडन करने में कभी आनाकानी न की। सड़कों पर, बाज़ारों में, और गलियों में, जहां अवसर मिला, तुमने उनका भरसक विरोध किया। इससे तुम्हारे अनेक प्रेमी जन भी तुम्हारे शत्रु बन गये, पर तुम अपने कर्तव्य से विचलित होने वाले न थे। सब प्रकार के कष्टों को

सहन करते रह कर भी तुमने अपने अभीष्ट कार्य को जारी रखा। तुम धन्य हो !

× × × ×

हे तर्कवाद के आचार्य ! मूर्खों का अज्ञानान्धकार दूर करने के लिए तर्क तुम्हारा महान अस्त्र था। प्रत्येक बात की जांच तुम तर्क की तुला पर करते थे। जब तक तर्क की कसौटी पर खरी न उतरे, कोई वात तुम्हारे लिए मान्य न थी। प्रायः सब लोगों ने, हां तुम्हारे साथियों ने भी, तुम्हारा साथ छोड़ दिया, पर तुम्हें तो तर्क का सहारा ही पर्याप्त था। अन्यायी क़ानून के दंड की तनिक भी चिन्ता न कर, तुम तर्क की रक्षा करने में, दत्त चित्त रहे। सुख और स्वार्थ की हानि हो तो हुआ करे, पर तर्क की ओर उदासीनता न हो। वह तो तुम्हारा प्राण था, नहीं नहीं, प्राणों से भी प्रिय था। तुम्हें सादर वन्दना !

× × × ×

हे ज्ञान के प्रेमी ! संसार में भिन्न भिन्न सज्जन पृथक् पृथक् बुराइयों को दूर करने का प्रयत्न करते हैं, परन्तु तुमने तो उन सब के मूल कारण की ही खोज की। तुमने जान लिया कि मनुष्यों में जो कुप्रथायें, कुविचार, और कुवासनायें हैं, वे सब अज्ञान-वश होती हैं। मनुष्य जो दुष्कर्म करते हैं, उन से छुटकारा पाने का उपाय यही है कि उन्हें सम्यग् ज्ञान प्राप्त होजाय। दुनिया में वहुत से आदमी अपने आप को ज्ञानवान बुद्धिमान समझते हैं, परन्तु वास्तव में उन्हें ज्ञान नहीं होता। ये स्वार्थ-वश लोगों के सामने अपना पाण्डित्य दर्शाया करते हैं, पर असल में ये पाखंडी और मूर्ख होते हैं। एथेन्स के ऐसे गुरुओं और शिक्षकों की तुमने खूब पोल

खोली। तुमने बतलाया कि मूर्ख और विद्वान में यह अन्तर होता है कि मूर्ख अपने आप को ज्ञानवान समझ कर अभिमान करता है, विद्वान अपने आपको अल्पज्ञ समझ कर ज्ञान की खोज में लगा रहता है।

× × × ×

हे महान शिक्षा प्रचारक! तुमने लोगों को अविद्यान्धकार से निकालने का भरसक प्रयत्न किया। तुम्हारी शिक्षा शैली भी विचित्र, मनोरंजक और प्रभावशाली थी। तुम प्रश्नोत्तर अर्थात् सवाल जवाब से अपने सिद्धान्तों का प्रचार करते थे। तुम जानते थे कि जिन बातों को कोई आदमी अच्छी तरह समझता हो, उस ज्ञान का उपयोग कर के ही उसे अज्ञात वस्तुओं को क्रमशः थोड़ा थोड़ा ज्ञान कराना सहज और सफल होता है। इस तत्व को ध्यान में रख कर तुमने उस प्राचीन काल में लोगों को महान शिक्षा दी। तुमने समझाया कि आत्मा अमर है। मृत्यु के पश्चात् मनुष्य दूसरा देह धारण कर लेता है। मृत्यु से कभी भयभीत न होना चाहिये, वह तो एक थके हुए जर्जर शरीर के विश्राम और नवजीवन-प्राप्ति की अत्यावश्यक और अत्युपयोगी अवस्था है। ऐसी बातें समय समय पर अनेक आदमी कह दिया करते हैं, पर कितने हैं जो तुम्हारी भांति इन की सत्यता अपने जीवन-व्यवहार में, राज सभा में, रण-क्षेत्र में, और अन्त में मृत्यु के समय, अपनी निर्भीकता से सिद्ध करते हों! महात्मन्! तुम धन्य हो!

× × × ×

महोदय! तुम्हारे शत्रुओं ने, सत्य-विद्वेषियों और स्वार्थियों ने तुम पर अभियोग लगाया कि तुम नगर के प्राचीन

देवताओं में विश्वास न करके नये नये देवी देवताओं को मानते हो, तुम नगर के नौजवानों को अपने व्याख्यानों से पथ-भ्रष्ट कर रहे हो। इस अभियोग की सफ़ाई देते हुए तुम ने खूब खरी खरी बातें सुनायीं, दया की प्रार्थना नहीं की। तुम दोषी ठहराये गये, तुम्हारे लिए मृत्यु दंड निश्चित हुआ। पर तुम इस से घबराने वाले न थे। जेल में बराबर अपने मित्रों से आनन्द पूर्वक बातें करते, तथा उन्हें ज्ञानोपदेश देते रहे; अन्ततः, मन में तनिक भी मैल लाये बिना, सहर्ष विष का प्याला पीकर तुम स्वर्ग सिधार गये। महात्मन्! तुम्हारी शिक्षा अमर है। तुम अमर हो!

× × × ×

महानुभाव! उस प्राचीन काल में, अनेक उच्च कोटि के वक्ता, कवि, लेखक, राजनीतिज्ञ, कला-कोविद और शिल्पकार आदि ने सौन्दर्योपासक यूनान की शोभा बढ़ायी थी। भिन्न भिन्न गुणों वाले बहुत से महापुरुष तुम्हारे समकालीन थे। तुम्हारे पश्चात् प्लेटो (अफ़लातून) और उसके शिष्य अरिस्टोटल (अरस्तू) ने, तथा अन्य विद्वानों ने यूनान को सब विद्याओं की खान बना दिया। यूनान ने यह ज्ञान रोम को दिया और वहां से यह समस्त योरप में फैल गया। इस ज्ञान का ही यह प्रभाव था कि जब रोम ने यूनान पर आक्रमण करके विजय प्राप्त की, तो वह स्वयं उसके सामने नत-मस्तक होकर रहा। यूनान पराजित होकर भी अपने विजेताओं को शिक्षा और सभ्यता सिखाने वाला रहा। हे यूनान के, संसार के, महापुरुष! तुम धन्य हो! तुम्हें सहस्र प्रणाम!

---

(२)
ईसा मसीह के प्रति

हे प्रेम मूर्ति ! दो हज़ार वर्ष पहले यहूदी समाज की कैसी बुरी दशा थी ! दुराचार, अहंकार, अनीति, वृथाडम्बर और पाखंड का साम्राज्य था। धर्म की मूल बातों का वास्तविक अर्थ भुला दिया गया था, धर्म के नाम पर नाना प्रकार की कुरीतियों और अत्याचारों का प्रचार होरहा था। धर्माधिकारियों का जीवन-व्यवहार निन्दनीय था। वे रक्षक के रूप में भक्षक होरहे थे। यहूदी समाज का इस पतन से उद्धार करने के लिए जूडिया के निकट बेथलम ग्राम में तुम्हारा शुभागमन हुआ।

× × × ×

एक साधारण श्रमजीवी परिवार में तुमने जन्म ग्रहण किया। तुम्हारे होनहारी के लक्षण देख कर धर्माध्यक्ष राजा ने तुम्हें मारना चाहा परन्तु तुम्हारे द्वारा तो वहुत काम होना था। तुम्हारी माता तुम्हें उसके राज्य से बाहर ले गयीं। इस प्रकार तुम उस के अत्याचार से बच गये। अनेक कष्ट उठाकर तुमने जहां तहां ज्ञान प्राप्त किया, और पीछे बारह मछुओं को अपना शिष्य बना कर धर्म प्रचार का कार्य आरम्भ कर दिया। तुमने अपने प्रेम संदेश से, सेवा सुश्रुषा भाव से, निर्भीक कार्यों से, बेढब हलचल मचादी। पुरोहितों और राज कर्मचारियों द्वारा विविध विघ्न उपस्थित होते हुए भी तुम्हारे सिद्धान्तों का प्रचार होने लगा। तुम्हारे शिष्यों और अनुयायियों की संख्या बढ़ती चली गयी, वे तुम्हें 'यहूदियों का राजा' कह कर तुम्हारी जयजयकार करने लगे। तत्कालीन सत्ताधारियों को यह सहन न हुआ, उन्हों ने तुम्हारे विरुद्ध अभियोग लगा कर, न्याय का ढोंग रच कर, तुम्हें सूली पर

चढ़ा दिया। परन्तु तुम अपने उच्च भावों और शुभ कार्यों के कारण आज भी जीवित हो, और अनन्त काल तक जीवित रहोगे! तुम धन्य हो!

× × × ×

हे अहिन्सा और सेवा के अवतार! तुम्हारे जीवन की विविध घटनाओं के विवेचन से दुखियों को अपने दुख के दिन काटने में सुविधा मिलती है; धनवान अपनी सम्पत्ति का सदुपयोग करते हैं। तुम्हारे नाम पर अनेक स्थानों में मिशन अस्पताल, मिशन स्कूल और कालिज आदि संस्थायें बहुत सेवा कर रही हैं। सचमुच, यदि तुम्हारे शुभ संदेश का प्रचार न हुआ होता तो अनेक आदमी मनुष्यत्व से बहुत दूर होते।

× × × ×

भगवन्! तुम्हारे अनुयायियों का विश्वास और उपदेश है कि तुम मरने के बाद फिर ज़िन्दा हुए थे। इस तर्कवाद के युग में, विशेषतया तुम्हारे समकालीन पुरुषों के प्रमाणिक पत्र व्यवहार को देखने से, यह बात ठीक नहीं जंचती। * कुछ अन्वेषकों का यह भी मत है कि तुमने अपने जीवन का बहुत सा समय भारतवर्ष में व्यतीत किया था, और तुम यहां के ही शिष्य थे†। परन्तु तुम्हारे सदुपदेशों की महत्ता और अनुपम बलिदान की महिमा से कौन इनकार कर सकता है?

× × × × ×

* देखो Crucifixion by an Eye-witness.

† देखो 'भारतीय शिष्य ईसा'! यह एक अंगरेजी पुस्तक का अनुवाद है, जो स्वयं एक फ्रांसीसी पुस्तक का अनुवाद है।

हे महाभाग ! तुम्हारी अमर आत्मा अपने अनुयायियों और भक्तों की गति मति का अवलोकन करती होगी। क्या तुम इन में से बहुत-सों के कारनामों से संतुष्ट होगे ? क्या इस बात से तुम्हें कुछ कष्ट न होता होगा कि जिह्वा से तुम्हें 'प्रभु' 'प्रभु' कहते हुए, सिद्धान्त से अपने आपको तुम्हारे नाम पर मर मिटने वाला समझते हुए भी, ये व्यवहार में, तुम्हारे बतलाये सन्मार्ग से सर्वथा विपरीत जा रहे हैं। पहाड़ी पर दिये हुए सुन्दर उपदेश में तुमने कहा था कि अपने शत्रुओं से भी प्यार करो आज दिन इसाई राष्ट्र अपने मित्र-राज्यों से भी छल, कपट, कूट नीति का बर्ताव कर रहे हैं। तुमने उपदेश दिया था कि जो तुम्हारे दांये गाल पर चोट करे, तुम अपना दूसरा गाल भी उस की तरफ़ कर दो, परन्तु अब इसाई कही जाने वाली शक्तियां संसार की निर्दोष भोली भाली जातियों को अपने अधीन करने के लिए नाना प्रकार के अत्याचार कर रही हैं। तुम ने बतलाया था कि विनयी पुरुष इस दुनियां के उत्तराधिकारी होंगे, परन्तु तुम्हारे नाम की पूजा करने वाले तो इस के उत्तराधिकारी बनने के वास्ते तोप बन्दूक़ और हवाई जहाज़ों तथा विषैली दवाओं का दिन-दिन अधिक व्यवहार करते जाते हैं। तुम्हारे इस प्रकार के अनुयायी तुम्हारे द्वारा प्रचारित धर्म को विवेकशील सज्जनों की दृष्टि में अधिक आदर का पात्र नहीं बनाते; वे, उल्टा, उस की प्रतिष्ठा को धक्का पहुंचाते हैं।

× × × × ×

महाभाग ! तुम्हारे बाद, तुम्हारे सहस्रों अनुयायियों ने नाना प्रकार के कष्ट उठाते हुए, पाशविक शक्ति का विरोध किया और एक विशाल साम्राज्य को परास्त कर इसाई

धर्म को प्रतिष्ठित किया। अब इस समय संसार भर के भिन्न भिन्न देशों में गोरे काले पीले आदि सब आदमियों में से लगभग आधे ऐसे हैं जो प्रत्यक्ष या गौण रूप से अपने तईं तुम्हारा अनुयायी कहने का अभिमान करते हैं, परन्तु उनमें तुम्हारे सिद्धान्तों के सच्चे अनुयायी कम ही पाये जाते हैं। वे ऐसे साम्राज्यों के समर्थक और सूत्रधार बने हुए हैं, जो प्राचीन काल में नष्ट किये हुए साम्राज्य से भी अधिक अत्याचारी, और हिंसक हैं। बहुधा एक इसाई राष्ट्र दूसरे इसाई राष्ट्र का भी विरोधी पाया जाता है। धार्मिक एकता होने पर भी उन में परस्पर में कलह और द्वेषभाव होता है। तुम्हारे अनेक अनुयायियों के ऐसे जीवन व्यवहार को देख कर तो कुछ निष्पक्ष आदमी निराशा-पूर्वक यह पूछने लगे हैं कि क्या इस धर्म ने मनुष्यों को अधिक स्वार्थ-त्यागी, और परोपकारी बनाया है!

× × × ×

खेद है कि अनेक पादरी बड़े बड़े राष्ट्रों से आर्थिक तथा अन्य प्रकार की सहायता पाकर केवल तुम्हारे नाम-लेवाओं की संख्या बढ़ाने में लगे रहते हैं। वे दूसरे धर्म वालों के प्रति दया दर्शाना अपना कर्तव्य नहीं समझते। बहुधा काली पीली या अन्य रंग वाली जातियों के आदमी तुम्हारे मत की दीक्षा ले लेने पर भी उन के प्रेम के पात्र कम ही बनते हैं। यह विषमता या भेद भाव क्यों?

× × × ×

तुम्हारे शुभ जन्म के उपलक्ष्य में प्रति वर्ष २५ दिसम्बर को बड़े दिन का उत्सव मनाया जाता है। खूब खेल तमाशा खान पान, भेंट पुरस्कार और डालियां आदि का आयोजन

होता है । परन्तु तुम्हारे ऐसे अनुयायी कितने हैं जो उस दिन तुम्हारे पवित्र उपदेशों पर गम्भीरता पूर्वक विचार करके अपने आपको सुधारने की फ़िकर करते हैं ? अहा ! संसार को उस धर्म की कितनी आवश्यकता है जो मनुष्य को औरों के सुधार की अपेक्षा स्वयं अपने चरित्र की ओर दृष्टि-पात करने की प्रेरणा करे, अपने दूषणों को दूर करने की शिक्षा दे; प्रत्येक जाति, प्रत्येक देश, प्रत्येक रंग, और हां,प्रत्येक धर्म के मानने वालों से, तथा जीवों या पशु-पक्षियों से भी बन्धु भाव रखने का आदेश करे। निस्सन्देह संसार का स्थायी धर्म विश्व-प्रेम होगा, जिस में स्वार्थ के शासन का नाश होगा, अथवा परमार्थ ही स्वार्थ माना जायगा।

× × × ×

हे प्रभु के सुपुत्र ! इसाइयत यह मान कर चली थी कि ईश्वर की इच्छा है कि प्रत्येक व्यक्ति को स्वतंत्रता , बन्धुत्व समानता और जीवन की प्राप्ति हो । और, तुमने अपने जीवन तथा मृत्युसे यह प्रयत्न किया था कि पृथ्वी पर प्रभु की इच्छा उसी प्रकार पूर्ण हो जैसी कि वह स्वर्ग में पूरी होरही है। ऐसा कब होगा ? पृथ्वी पर नारकीय शासन का अन्त होकर स्वर्गीय जीवन की प्रतिष्ठा कब होगी ? धन और अधिकारों के लिए, राष्ट्रों के, श्रेणियों के, व्यक्तियों के पारस्परिक संघर्षों से मुक्ति कब मिलेगी ? सर्वत्र प्रेममय व्यवहार का दृश्य कब दिखाई पड़ेगा ? कब ? कब ?

(३)
मोहम्मद साहब के प्रति

हे इस्लाम धर्म के प्रवर्तक ! चौदह सौ वर्ष हुए, अरब में घोर अन्धकार छाया हुआ था। वहां के आदमी तरह तरह के अनेक देवताओं की पूजा में लगे थे। वे आपस में खूब लड़ते झगड़ते और मरते मारते थे। उन में कोई संगठन न था, वे एक दूसरे के प्रति किसी प्रकार का कर्तव्य न समझते थे। महिलायें प्राय: भोग विलास की वस्तु मानी जाती थीं। दुराचार, अत्याचार और स्वार्थ पूर्ति का जीवन बिताते हुए मनुष्य असभ्यता और जंगलीपन में, मानों पशुओं से प्रतियोगिता कर रहे थे। ऐसी स्थिति में परमात्मा ने वहां तुम्हारे रूप में एक महान उपदेशक और सुधारक भेज कर उन लोगों की सुधि ली। तुम्हारे द्वारा अरब को सांसारिक उन्नति, वैभव, धन सम्पदा ही नहीं, जातीयता भी प्राप्त हुई। इस समय करोड़ों आदमी तुम्हारे अनुयायी हैं।

× × × ×

हे वीर विजेता ! तुमने बचपन में माता पिता का सुख न पाया, अन्य सम्बंधियों ने तुम्हारा पालन पोषण किया, उन्हों ने तुम्हें कुछ शिक्षा दी और काम सिखलाया। भेड़ों को दूहना और चराना आदि साधारण से कार्यों को करने के लिए तुम तत्पर रहते थे। तुम्हारा भोजन और रहन सहन सादा था। विवाह होने से पूर्व तुम्हारी आर्थिक अवस्था भी अच्छी न थी। तुम्हारे जीवन का एक ख़ासा हिस्सा बीत गया था, और तुम्हारे व्यवहार में कोई विशेषता नहीं पायी गयी थी। परन्तु तुम एक महान उद्येश्य के लिए इस भूतल पर पधारे थे।

तुम में धर्म भाव-जागृत हुआ। मक्के वालों की विकृत मूर्ति-पूजा और अन्य निन्दित कर्मों से तुम्हें घृणा हुई। ईश्वर की एकता का प्रचार करने, तथा देशवासियों की दशा सुधारने के लिए तुम कटिबद्ध होगये। तुमने उपासना रूपी अस्त्र, श्रद्धा और विश्वास रूपी कवच, और वैराग्य रूपी वस्त्राभूषण, तथा सन्तोष रूपी ऐश्वर्य ग्रहण किया। तुम धन्य हो !

× × × ×

महान उपदेशक ! तुमने अरब के कट्टर, लड़ाकू तथा महा मूर्ख लोगों के उद्धार का भरसक प्रयत्न किया। उन में जागृति और जीवन का संचार करने के लिए तुमने अपने सुख और विश्राम तक को तिलाञ्जली दी। तुम अकेले थे, तुम्हारा साथ देने वालों का सर्वथा अभाव था, तथापि तुमने निर्भय होकर 'ला इलाह एलिल्लाह' (ईश्वर एक मात्र, और अद्वितीय है), इस सच्चाई की घोषणा की। अपने पुराने विचारों के प्रतिकूल, यह वाक्य सुनकर, तुम्हारे विरुद्ध मदान्ध तथा क्रोधान्ध लोगों का बड़ा समूह खड़ा होगया। और तो और, तुम्हारे सगे सम्बन्धी भी तुम्हें नाना प्रकार के कष्ट और यंत्रणायें देने ल●। तरह तरह के षड़यन्त्र रचे गये। पर तुमने किसी की परवाह न करके, अपने असीम पराक्रम, धैर्य और सहनशीलता का परिचय दिया; अपना सिंहनाद जारी रखा। ऐसा भी प्रसंग आया कि तुम्हें अपने स्थान से भाग कर बाहर दूसरे नगर में शरण लेनी पड़ी। पर तुम अपने मार्ग से विचलित नहीं हुए। अन्ततः तुमने विजय पायी। नास्तिकों ने भी तुम्हारे मत में विश्वास किया, तुम्हारे धर्म की दीक्षा ली। तुम्हें वध करने का इरादा रखने

वाले ही तुम्हारे अनुचर वन गये ! पीछे, धीरे धीरे तुम्हारा संदेश दूर दूर तक जा पहुंचा। तुम्हारे उत्तराधिकारियों ने एशिया, योरप और अफ्रीका तक के बहुत से देशों को बहुत कुछ अपना वना लिया।

× × × ×

हे समतावादी ! तुमने अपने अनुयायियों में संगठन का जो बीज बोया, वह अद्‌भुत है। सब मुसलमान समान हैं, उनमें कोई ऊंच नीच या छोटा बड़ा नहीं; गरीब अमीर सब एक स्थान पर सम्मिलित होकर खान पान कर सकते हैं। तुमने उनमें जाति पांति का कोई भेद नहीं रखा, सबकी एक बिरादरी क़ायम की। असभ्य लोगों के हृदयों में घर करने तथा उनमें समानता, और बिरादराना मोहब्बत का भाव भरने के लिए तुमने और तुम्हारे भक्तों ने अपनी जान जोखम में डालकर, हर समय सिर पर कफ़न बांधे हुए, जो महान प्रयत्न किया वह वस्तुतः प्रशंसनीय है, अनुकरणीय है। तुम धन्य हो !

× × × ×

परन्तु, हे प्रचंड आन्दोलक ! तुम्हारे वाक्यों को बहुत से आदमियों ने केवल कंठ कर लिया है। तुम्हारे बहुत से अनुयायी यह भूल रहे हैं कि किसी विशेष समय और परिस्थिति के लिए एक विशेष प्रकार के मत की आवश्यकता होती है, जहां और जब लोग अधिक सभ्य और सुशिक्षित हों, उनके लिए अधिक उन्नतशील मत होना चाहिये। अब तर्कवाद का युग है। सृष्टि-नियमों को समझने की

ज़रूरत है। सामाजिक रहन सहन और व्यवहार के लिए बुद्धि-संगत क़ायदे कानून होने चाहियें। यदि अरब के तत्कालीन अन्धकार युग के लिए, मनुष्यों को चार विवाह करने की अनुमति देने में कुछ सुधार समझा गया था, तो क्या इस बदले हुए देश काल में वह उचित ठहराया जा सकता है? क्या इस समय स्त्रियों के पर्दे में रहने का कोई समझदार आदमी समर्थन कर सकता है? यदि प्रचीन काल में किसी जगह धर्म-प्रचार के लिए तलवार का आश्रय लिया गया था, तो क्या अब भी ज़ोर जुल्म जारी रखना जायज़ माना जा सकता है?

× × ×

महोदय! यदि मुसलमान भिन्न भिन्न देशों में वहां की राष्ट्र-भाषा तथा सुगम लिपियों का उपयोग करने लगें, तो हर्ज क्या है? क्या तुम्हारे मतानुयायियों का हर स्थान में एक खास भेष होना अनिवार्य है? इस अन्तर्राष्ट्रीयता के युग में, धार्मिक विषयों में, ऐसी कठिन कसौटी से काम लिया जायगा, तो क्या बहुत से स्वतंत्रता-प्रेमियों के लिए कुछ ज़्यादती न होगी? क्या किसी आदमी को यह कहना शोभा देता है कि परमात्मा को केवल कोई ख़ास ज़बान या ख़ास लिबास प्यारा है? क्या परम पिता इन बाहरी बातों की अपेक्षा हमारे हृदयों को नहीं देखता, और, नहीं जानता? फिर हम अपनी शक्ति और समय इन वाह्य आडम्बरों में ही क्यों व्यय करें? क्यों न हम अपने आन्तरिक सुधार की चेष्टा करें? और हां, हे महान सुधारक! अमानुल्लाखां, बेग़म सुरैया, और कमाल पाशा जैसे उन्नत और सुधारक विचार रखने वालों

का विरोध क्यों होता है ? क्या जात्युन्नति और देश-सुधार के लिए मतवाला बन जाने को इसलाम धर्म अपराध या जुर्म समझता है ?

× × × ×

हे महापुरुष ! क्या तुम्हारे अधिकांश अनुयायियों के व्यवहार को देख कर, अन्य धर्मों के मानने वालों के हृदय में तुम्हारे मत के प्रति कुछ श्रद्धा बढ़ रही है ? अफ़सोस ! बहुत से आदमी समझते हैं कि इसलाम धर्म का अर्थ गाय की कुर्बानी करना, मसजिदों के आगे बाजे न बजने देना, पुरानी बातों और कुरीतियों तक का अन्धाधुन्ध अनुकरण करना, तथा सुधार के नाम तक से अप्रसन्नता प्रकट करना है। यदि इसलाम धर्म का अर्थ यही हो तो इस कथन में बहुत कुछ तथ्य समझना होगा कि यह ख़तरे में है। बुद्धि-वाद के सामने अन्ध विश्वास कब तक ठहरेगा ? ज्ञान सूर्य का उदय हो जाने पर अविद्या-अन्धकार कितनी देर टिकेगा; ज़ोर और जुल्म को अपनी आधार-शिला मानने वाला धर्म सभ्य सुशासन में कैसे रक्षित रहेगा; वह इस लोक या परलोक के कुछ क्षुद्र अस्थायी प्रलोभनों के बल पर कैसे पनपेगा ? परन्तु वास्तव में विचार कर देखा जाय तो इसलाम धर्म की शिक्षा कहीं उदार है, और अधिकाधिक समझदार मुसलमान अपने व्यवहार से इसकी उदारता का प्रमाण दे रहे हैं।

× × × ×

भारत के बहुत से मुसलमानों को यहां अपने अल्प संख्यक होने का भय सताता रहता है। उन में से कुछ भाई

समय-बे-समय अपने विशेषाधिकारों का आन्दोलन करके नागरिक सिद्धान्तों की अवहेलना करते हैं। क्या ही उत्तम हो कि ये यहां के पारसियों से इस विषय में समुचित शिक्षा लें, जो संख्या में इन से कहीं कम होते हुए भी बहु-संख्यक जातियों से वृथा भयभीत नहीं होते, जो राष्ट्रीय कार्यों में समानता का सिद्धान्त मानते हैं, और, जो योग्यता की विजय पर विश्वास रखने के कारण, झूठी और क्षणिक रियायतों और पक्षपात की मांग उपस्थित नहीं करते। निस्सन्देह वे मुसलमान अपने मज़हब की सच्ची ख़िदमत करने वाले हैं, जो अपना समय और शक्ति औरों से वाद विवाद करने, लडने-झगडने, और तरह तरह की कूट चालें चलने में न लगा कर, अपने बन्धुओं के लिए शिक्षा, व्यापार, कला-कौशल समाजोन्नति आदि के उपयोगी कार्य करने में दत्त-चित्त रहते हैं। अहा! इसलाम धर्म के ऐसे निस्वार्थी निडर और त्यागी उपदेशक कब पर्याप्त संख्या में आवेंगे, जो इस में मिलायी हुई कुरीतियों और अन्ध विश्वासों का खण्डन कर, इसे देश-कालोपयोगी बनावेंगे तथा इस की ज्योति का चहुं ओर प्रकाश फैलावेंगे?

(४)

देवी जोन के प्रति

हे स्वतंत्रता की प्रतिमा ! कैसे समय में फ्रांस को स्वाधीन करने के लिए तुम्हारा शुभागमन हुआ था। पन्द्रहवीं शताब्दी का मध्यान्ह काल था, चहुं ओर अन्ध विश्वासों कुरीतियों और कुप्रथाओं का बाहुल्य था। 'जिस की लाठी, उस की भैंस' थी। इंगलैंड के राजा ने ख्वामख्वाह अपने पड़ौसी राजा के सिंहासन का दावेदार बनना उचित और आवश्यक समझा। उसने प्रभुता-मद में, अपनी सैनिक शक्ति के भरोसे, उस पर धावा बोल ही तो दिया। फ्रांस के सपूतों ने यथा शक्ति रण-क्षेत्र में अपनी आहुतियां प्रदान कीं, परन्तु यथेष्ट साधनों के अभाव से, तथा कुछ घर के भेदियों के कारण, वे मातृ-भूमि को स्वाधीन न रख सके; अंगरेज़ों का उस पर अधिकार होगया। चिर काल स्वतंत्रता का उपभोग करने वाले फ्रांसीसियों को पराधीनता का जीवन बिताना पड़ा। उनका दम घुटने लगा। वे मुक्त होने के लिए छटपटा रहे थे। कौन उनका संगठन करके, नेतृत्व ग्रहण करे, कौन उन्हें नवजीवन प्रदान करे ?

× × × ×

मातेश्वरी ! मनुष्यों की स्मरण शक्ति कितनी निर्बल होती है। अनेक बार देख सुन कर भी वे भूल जाते हैं कि सर्व शक्तिमान परमात्मा की सृष्टि में दुर्बल प्रतीत होने वाले व्यक्ति भी बहुत महान कार्य कर गुज़रते हैं। महान

विभूतियों के अवतार के लिए यह आवश्यक नहीं कि वे किसी जन-मान्य वंश आदि में ही जन्म लें, या पुरुष वेश में ही पधारें। देवी ! तुमने अपने उदाहरण से ये बातें पुनः स्मरण करायीं। तुम गांव की रहने वाली थीं, साधरण किसान की लड़की थीं, तुम घर का काम काज करती थीं, खेती बारी करने तथा पशुओं को चराने में भी तुम कुशल थीं। घोड़े की सवारी करना भी तुम्हें आता था। बस, इतनी ही बातें तुम्हारे बारे में प्रत्यक्ष थीं। परन्तु इस के अतिरिक्त तुम शुद्ध-हृदया थी, शूरवीर थी, कोमल स्वभाव वाली और दयालू थीं। तुम्हारे अन्तःकरण में प्रेरणा हुई, और तुम्हें यह विश्वास हो गया कि तुम मातृ-भूमि की पराधीनता की बेडियां काट सकती हो। तुमने अपने महान उद्देश्य की पूर्ति का साहस किया। तुम धन्य हो !

× × × ×

वीराङ्गणे ! तुमने उस काम का बीड़ा उठाया जो बडे बडों से न हो सका था। सब के मना करने पर, और अनेक आदमियों के तरह तरह के विघ्न उपस्थित किये जाने पर भी तुम फ्रांस के पदच्युत बादशाह के पास जा पहुंची, और, उस से कहा कि ईश्वर ने मुझे तुम्हारा राज्याभिषेक कराने के लिए भेजा है। दर्शक हंसी करते थे, बादशाह खुद तुम्हारी बातें सुन कर हैरान था। जैसे तैसे तुम्हें अस्त्र शस्त्र और कवचादि मिल पाये। परन्तु, ओह ! तुम्हारा सैनिक-भेष में तैयार होना था, कि फ्रांसीसियों के मुर्दा दिलों में नयी जान आगयी। अंगरेजों के छक्के छूट गये। तुम एक के बाद दूसरी विजय प्राप्त करती गयीं। और

आखिर, तुम अपने उद्देश्य को पूरा कर के रहीं। बादशाह को तुमने गद्दी पर बैठा दिया। तुम धन्य हो!

× × × ×

अफ़सोस! तुम्हारी इस विजय से अनेक तुम्हारे ही आदमी, फ्रांसीसी सेनापति ही, तुम से ईर्षा करने लगे। फिर, शत्रु क्यों न कहें कि "तुम्हें अपने साहस का अपनी सफलता का मूल्य चुकाना पडेगा। अपने प्राण देने पड़ेंगे?" इस के लिए तो तुम तयार ही थीं। स्वार्थमय संसार के बाज़ार में कौन वस्तु विना मूल्य मिल सकती है? स्वतंत्रता देवी का दर्शन करने के लिए अनेक देशों को अपने असंख्य नर-रत्नों से हाथ धोना पडा है। यदि रण क्षेत्र में, शत्रु से दो हाथ करते हुए तुम्हारे भी प्राण पखेरु उड़ गये होते तो कोई विशेप आश्र्वर्य या दुःख की बात न थी। पर बलिहारी है, तत्कालीन धार्मिक भावों की! तुमने युद्ध में आक्रमण-कारियों के छक्के छुटाये थे; अब, अवसर पाने पर जब तुम संयोग से उनके हाथ पड़ गयीं तो वे तुम से ब्याज सहित बदला लेने में कब चूकने वाले थे? उन्होंने निर्दयता को, अन्ध विश्वास को, प्रतिहिंसा को धर्म का रूप दिया और धर्म शास्त्र से उन्हें जायज़ और आवश्यक ठहराया। उन्हों ने तुम पर अभियोग लगाया कि तुम जादूगरनी हो; तुमने स्त्री होकर सैनिकोचित पुरुप वेप धारण किया है। न्याय का भयंकर प्रहसन किया गया। तुम्हें 'अपराध' की स्वीकृति के लिए, और आत्म समर्पण करने के लिए जेल में नाना प्रकार की यंत्रणायें दीं गयीं।

× × × × ×

देवी ! क्षुद्र हृदयों ने तुम्हें अपराधी ठहराया। कोई उन से पूछे कि जिन लोगों ने बिना कारण फ्रांस को पद-दलित करके अनेक युवाओं को यमलोक पहुंचाया, तथा बालकों और स्त्रियों को अनाथ बनाया, क्या वे अपराधी नहीं हैं ? परन्तु इस तर्क को कौन सुनता है ? तुमने आक्रमण-कारियों के अत्याचार को चुप चाप सहन क्यों नहीं किया; आत्मरक्षा क्यों की ? बस, यही तुम्हारा पाप है। अहा ! पाप पुण्य की परिभाषा, सब एक तरह नहीं करते। अत्याचारी और बलवान् इन शब्दों का-और प्रत्येक शब्द का, मनमाना अर्थ कर सकते हैं।

× × × × ×

ओफ ! आख़िर, उन अन्यायियों ने तुम्हें ज़िन्दा ही जला देने का निश्चय कर लिया। तुम चिता में बैठ गयीं। पर तुम्हारी आकृति में क्रोध नहीं था, गम्भीरता थी और दया थी; मानों तुम अपने ऊपर अन्याय करने वालों की अज्ञानता का अनुभव करके, ईसा मसीह की भांति, परमात्मा से उन्हें क्षमा करने की प्रार्थना कर रही थीं, और साथ ही यह याचना कर रहीं थी, कि प्रभु ! तुम मेरे दुखी देश की सुधि लेना, शीघ्र इस का उद्धार करना। देवी ! फ्रांस के अधिकांश और इंग-लैंड के थोड़े से आदमी तो तुम्हें उस समय भी सन्त समझते थे, और अब तो सभी तुम्हें पूज्य समझते हैं; और, तत्कालीन सत्ताधारियों की काली करतूतों पर आंसू बहाते हैं। जो हो; तुम अपना काम कर गयीं। फ्रांस ने तुम्हारा स्वाधीनता का संदेश पा लिया और वह शीघ्र ही स्वाधीन होकर रहा। तुम धन्य हो !

× × × × ×

देवी ! आज तुम्हारा भौतिक शरीर संसार में नहीं है। पर इस से क्या ! तुमने भू-मण्डल के प्रत्येक देश की महिला-जगत का स्थान ऊंचा किया है। तुम इतिहासमें अमर रहोगी, न केवल अपने बलिदान के लिए, वरन् अपने जीवन, उदारता, और सद्विचारों के लिए भी। अहा ! अन्यान्य बातों में, तुमने रणक्षेत्र में आहत शत्रुओं के साथ भी सहानुभूति दर्शा कर मातृ-शक्ति के वात्सल्य का कैसा अनुपम और अनुकरणीय दृष्टान्त दिया है। अपनों से सभी प्रेम करते हैं, पर तुम तो माताओं की प्रतिनिधि थीं, सब को अपनी सन्तान समझती थीं और स्वयं कष्ट उठाते हुए भी दूसरों के दुखों की चिन्ता रखती थीं। तुम धन्य हो ! हम तुम्हें धन्यवाद देने योग्य हों !

× × × ×

देवी ! तुमने फ्रांस को अंगरेज़ों के पंजे से स्वाधीन करने के लिए अपना बलिदान किया था। अब फ्रांस ही साम्राज्य-वादी राष्ट्रों में से है, वह उन देशों में से है जो, स्वार्थवश दूसरों को पराधीन बनाये हुए हैं। अहा ! आधुनिक साम्राज्यों के कितने स्थानों में स्वतंत्रता-प्राप्ति के शान्ति-मय उपाय विफल हो रहे हैं, और आन्दोलनकारी 'अपराधी' समझे जाते हैं ? हां, इतना अन्तर अवश्य हो गया है कि अब वे 'अपराधी' तुम्हारी तरह 'धर्म' के नाम पर बलिदान नहीं किये जाते, अब इन्हें राजनीति, सुव्यवस्था, शान्ति, क़ानून आदि के नाम पर कुर्बान किया जाता है। मातेश्वरी! इन बातों में सुधार कब होगा ?

———

(५)

मार्टिन ल्यूथर के प्रति

महान् सुधारक ! तुमने मध्यकालीन योरप के धार्मिक क्षेत्र से कितना मैल हटा कर उसे निर्मल और पवित्र करने का उद्योग किया, इस बात का अनुमान अब तुम से चार सौ वर्ष पीछे के संसार में रहने वाले मनुष्य सहज ही नहीं कर सकते। उस समय 'विशप', 'एबट' आदि अनेक रोमन कैथोलिक धर्माधिकारी नवाबों, रईसों और बादशाहों का जीवन व्यतीत करते थे। वे अपने धार्मिक कर्तव्यों को भूल कर सांसारिक माया जाल में फंस गये थे। जनता में तरह तरह के अन्ध विश्वास और कुरीतियां प्रचलित थीं, उन की ओर वे ध्यान नहीं देते थे। लोगों में अन्यान्य बातों में यह भ्रम फैला दिया गया था कि 'पोप' को दान दक्षिणा देने से सब प्रकार के पापों से मुक्ति मिल सकती है। 'मुक्ति पत्र' की क़ीमत बहुत कुछ पापी की हैसियत के, तथा पाप की श्रेणी के अनुसार होती थी। ऐसे धर्मान्धकार के सर्वव्यापी वातावरण में, महात्मा ल्यूथर ! तुमने रण-भेरी सुनादी और इस प्रकार संकट के आह्वान में तुमने इस बात को सोचने का अवसर ही नहीं निकाला कि तुम्हारे साथी कौन होते हैं, और कहां तक तुम्हें अकेले ही इस कंटकाकीर्ण मार्गपर अग्रसर होना पड़ेगा। तुम्हें सादर नमस्कार !

× × × ×

महात्मन् ! तुमने जर्मनी के एक ग्राम में जन्म लिया था। तुम एक निर्धन किसान की सन्तान थे। बाल्यावस्था में तुम्हें

पेट भर भोजन पाने के लिए भी बड़े कष्ट सहन करने पड़ते थे। तुमने अपने परिश्रम और अध्यवसाय से जल्दी ही लेटिन भाषा और दर्शन शास्त्र आदि की शिक्षा प्राप्त कर ली। तुम्हारे पिता की इच्छा तुम्हें क़ानून के व्यवसाय में लगाने की थी। परन्तु परमात्मा ने तुम्हें दूसरे ही उद्देश्य की पूर्ति के लिए भेजा था। यों तो पहले से ही तुम्हारी रुचि धार्मिक विषयों की ओर थी, पर एक आकस्मिक घटना ने तुम्हें इस ओर विशेष रूप से आकर्षित कर दिया। बिजली के गिरने के कारण, अपने एक प्रिय मित्र की मृत्यु होते देख कर तुम्हें सांसारिक सुखों की अनित्यता का यथेष्ट अनुभव होगया। तुमने निश्चय कर लिया कि अब मैं जीवन भर धर्म का वास्तविक रूप समझने, और अन्य लोगों के हृदय से धर्म सम्बन्धी अज्ञान दूर करने का प्रयत्न करता रहूंगा। तुमने धार्मिक साहित्य का खूब अनुशीलन किया; व्रत उपवास, जप तप में भी कुछ कमी न की। इन बातों से यथेष्ट सान्त्वना प्राप्त न होते देख, तुमने बाइबल का स्वाध्याय किया। निदान तुमने यह मालूम कर लिया कि जो धर्म सर्व साधारण में इसाई धर्म के नाम से प्रचलित है, वह वास्तव में बाइबल की शिक्षा के अनुसार नहीं है; इसमें बहुत ख़राब मिलावट होगयी है। और यह जान लेने पर तुमने निर्भय होकर अपने विचारों का प्रचार करना आरम्भ कर दिया।

× × × ×

महानुभाव! तीर्थ यात्रा तो असंख्य आदमी करते हैं, पर कितने हैं, जो आंख खोलकर, वास्तविक शान्ति प्राप्त करने के लिये यात्रा करते हैं; और तीर्थ स्थान में अनाचार या छल

कपट आदि का व्यवहार देखकर तुम्हारी तरह उसका सम्यग् सुधार करने के लिए कटिबद्ध होजाते हैं। पोप के गढ़ में--रोम में--पाप और दुराचार-प्रधान वातावरण पाकर तुम कितने दुखी हुए, और धर्म मंदिर का सुधार करने, तथा उसके अधिष्ठाता को सन्मार्ग पर लाने के लिए तुम कैसे बेचैन हो उठे, इसे तुम ही जानते थे। और हां, बड़े बड़े सम्राटों तक को मन माने नाच नचा सकने वाले पोप की दुर्दमनीय शक्ति का लेखों से, और भाषणों से सामना करना भी तुम्हारे जैसे महापुरुष का ही काम था। पोप को धन का अभिमान था। उसे असंख्य जनता के अन्धविश्वास-जनित सहयोग का आसरा था। जिस किसी ने विरोध करने का दुस्साहस किया वह जीते जी अग्नि की आहुति बनाया जाता था। इसलिए पोप हंसता था कि एक ल्यूथर ही मेरा क्या कर सकता है। वह तुम्हारे विशुद्ध वादानुवाद और तर्क को सुनने में अपना अपमान समझता था। उसने अपना आदेश-पत्र जारी कर दिया कि या तो तुम अपने व्यक्त किये हुए विचारों को वापिस लो, या नास्तिकों के लिए नियत की हुई सज़ा — जीवित ही अग्नि में जलना — स्वीकार करो। पर, तुम भी मृत्यु से डरने वाली, प्राणों का मोह करनेवाली आसामी न थे। सहस्रों पुरुषों की भरी सभा में तुमने पोप और उसके समर्थकों को ललकार कर वीरता-पूर्वक अपने सिद्धान्त की रक्षा करने का अनुपम परिचय दिया। किन शब्दों में तुम्हारी स्तुति की जाय!

× × × ×

तुमने बहुत समय तक, प्रति क्षण अपने प्रांण संकट में

रखे, अनेक कष्ट उठाये, पर पोप के, तथा तत्कालीन अन्ध-विश्वासों के विरुद्ध गर्जना करना न छोड़ा। इसी का यह परिणाम हुआ कि प्रोटैस्टेंट सम्प्रदाय की स्थापना होगयी। इस मत के अनुयायी ईश्वर की निराकार रूप में ही उपासना करते हैं, अपने गिरजाघरों में उसकी प्रतिमा तथा उससे सम्बन्ध रखने वाले धूप दीप वस्त्राभूषण आदि अन्य विविध पदार्थ नहीं रखते। ये इस बात को भी नहीं मानते कि पोप किसी आदमी को स्वर्ग या नरक भेजने का अधिकारी है। इसाइयों यह मत ऐसा है, जैसा हिन्दुओं में आर्य समाज है, और तुम योरप के ऋषि दयानन्द कहे जा सकते हो। तुम्हें सादर वन्दना !

× × × ×

अहा ! तुम्हारे समय में तथा उसके बाद, इसाई धर्म के दो सम्प्रदायों में — रोमन कैथलिक और प्रोटैस्टेंट में, पुराने और नये में — कितना विरोध रहा है ! सच है, एक ही धर्म के दो मतों में जितना वैर विरोध होता है, उतना तो उन दो धर्मों में भी देखने में नहीं आता, जो एक दूसरे से सर्वथा भिन्न हों। ओफ़ ! कितने प्रोटैस्टेंटों को, अपने भाई बन्धु रोमन कैथलिकों की ज़्यादतियों के कारण विवश अपनी जन्म-भूमि से दूर जाकर विदेशों की ख़ाक छाननी पड़ी है, कितनों को अपने प्राणों से हाथ धोने पड़े हैं; रण में, उत्सव में, खेल तमाशों में कितने अनायास, अकस्मात् मौत के घाट उतारे गये हैं, कितने अपने नन्हे बच्चों और अनाथ स्त्रियों को बिलखते छोड़कर इस संसार से असमय विदा होने के लिए बाध्य किये गये हैं। इसकी स्मृति मात्र से रोमांच होजाता है। धर्म के नाम पर ऐसी क्रूरता ! ऐसी निर्दयता ! यह तो

मनुष्यत्व को लज्जित करनेवाली, सभ्यता को कलंकित करने वाली रही। पर धन्य है उन नर-रत्नों को, जो सहर्ष बलिदान होगये, पर अपने स्वाभिमान, अपने धर्म की आन पर डटे रहे, जिन्होंने अग्नि में भस्म होते होते भी यह सूचना दी कि 'हम स्वर्ग में ऐसा दीपक जलायेंगे' जिससे समस्त संसार प्रकाशित होजायगा'। यह संदेश तो सत्य होना ही चाहिये था। ठीक ही तो कहा गया है, 'धर्म-प्राण महात्मा का शरीर नष्ट हो सकता है, परन्तु जिस सच्चाई के लिए वह प्राण त्याग करता है, वह तो उसके बलिदान से और भी अधिक प्रभा-युक्त होजाती है।' इन बलिदानों के प्रभाव से संसार में प्रोटैस्टेंट मत का प्रचार बहुत जल्द होगया। इस मत के आदि प्रचारक ! तुम धन्य हो !

× × × ×

महोदय ! तुम्हारे अनुयायियों की संख्या और शक्ति अब काफ़ी बड़ी है। पर क्या उनमें से अधिकांश अपने महान उत्तरदायित्व को समझते, और उसे पालन करते हैं ? क्या ये तुम्हारे अनुपम आदर्शों को अपने जीवन में समुचित रूप से व्यवहृत करते हैं ? क्या ये संसार का अज्ञान और अन्ध विश्वास हटाकर वास्तव में मनुष्य मात्र का हित साधन कर रहे हैं ? क्या इन्हें स्मरण है कि जिन महा पुरुषों और संतों के ये अनुयायी या उत्तराधिकारी हैं, उनके नाम पर इन्हें कितना अधिक स्वार्थ-त्याग और परोपकार करने की आवश्यकता है।

× × × ×

महात्मन्! दुःख का विषय है कि संसार तो तुम्हारे भक्तों से प्रेम और दया की आशा करे, और, वे प्रायः रक्त-पात के उत्तरदायी पाये जांय। बहुधा एक प्रोटेस्टेंट राष्ट्र दूसरे प्रोटेस्टेंट पर भी आक्रमण करते देखा जाता है। यह ठीक है कि युद्ध का स्वरूप अब धार्मिक न होकर आर्थिक या राजनैतिक बताया जाता है। पर इससे क्या? युद्ध के लिए नित्य नये घातक साधन जुटाने में इतने दिमाग़ और हाथ लग रहे हैं, क्या यह कुछ शोचनीय नहीं है? और हां, अब एक नयी बात और होने लगी। प्राचीन काल में इसाई धर्माचार्य युद्धों से प्रायः उदासीन रहते थे, अब ये भी अपने अपने राज्य की विजय के लिए प्रार्थना करते हुए मिलते हैं। कहां हैं वे निर्भीक, निष्पक्ष आचार्य जो युद्ध छिड़ने पर अपने या पराये राज्य का विचार छोड़कर, जी खोलकर न्यायी का समर्थन और अन्यायी का विरोध करते हों? हे महापुरुष! बड़ी आवश्यकता है कि कोई तुम्हारे जैसी महान आत्मा लोगों के हृदय में ज्ञान का दीपक जलाये, और धार्मिक जगत के अन्याय, अत्याचार, स्वार्थ और अन्धकार को दूर करे। वीर श्रेष्ठ ल्यूथर! सादर प्रणाम।

---

(६)

गेलिलियो के प्रति

हे सरस्वती के भक्त ! इस संसार में बहुत कम महापुरुषों का, उनके जीवन काल में, यथेष्ट आदर हो पाता है। बहुधा ज्ञान-प्राप्ति का मार्ग प्रशस्त करने वालों से, उदासीनता ही नहीं, निष्ठुरता और निर्दयता का व्यवहार किया जाता है। पीछे, जब वे मर खप जाते हैं तो लोगों को मालूम होता है कि वे अपने त्याग और तप के फल-स्वरूप कितनी बहु-मूल्य सम्पत्ति छोड़ गये हैं। तब सर्व साधारण उन के अन्वेषणों और आविष्कारों से लाभ उठाते हैं, और उनके गुण गाते हैं। ऐसी ही एक महान् विभूति, महामति गेलिलियो ! तुम थे। हम तुम्हें सभक्ति अपनी श्रद्धाञ्जलि अर्पित करते हैं।

× × × ×

महात्मन् ! सन् १५६४ ई० में तुम्हारा शुभ जन्म इटली के पीज़ा नगर में हुआ था। तुम्हारे पिता साधारण स्थिति के थे। धनाभाव के कारण वे तुम्हें यथेष्ट शिक्षा नहीं दिला सके। उनकी इच्छा थी कि तुम वैद्यक आदि का काम करो जिससे द्रव्योपार्जन हो। पर बाल्यावस्था से ही तुम्हारी अभिरुचि यंत्र-विद्या की ओर थी। तुम तरह तरह के छोटे छोटे यंत्र बनाते रहे। पीछे भी जब तुम गणित विद्या सीखने लगे, और तुम्हारे पिता का इस विषय में कुछ मत-भेद मालूम हुआ तो तुमने उन से छुपा कर ही ज्यमिति

आदि की पुस्तकों का अध्ययन किया। तुम धुन के पक्के थे। तुम धन्य हो!

× × × × ×

अपनी उम्र के वीसवें वर्ष में ही तुमने सूक्ष्म निरीक्षण और प्रयोग-कौशल का अच्छा परिचय दिया। गिरजाघर में एक लैम्प छत से लटक रहा था। उसे जलाने के लिए वह एक तरफ़ हटाया गया था, पीछे थोड़ी देर हिलने के बाद, वह अपनी असली हालत में आगया। ऐसी घटना तुम से पहले हज़ारों व्यक्तियों ने देखी होगी, पर यह विचार करना तुम्हारा ही काम था कि एक लटकी हुई चीज़ की ऐसी हरकतें (Oscillation)—वे छोटे वृत्त (दायरे) में हो या बड़े में—समान समय पर होती है। तुमने हरकतों का समय से निश्चित सम्बन्ध होने का अनुमान किया, और प्रयोगों द्वारा उस की सत्यता की परीक्षा करली। तुम्हारी इस खोज का ही यह सुपरिणाम है, कि आज दिन समय का प्रमाण बताने वाली असंख्य घड़ियां बन गयी हैं, जिन की सहायता से मनुष्य अपने एक एक क्षण और एक एक मिनट को नियमित रूप से व्यतीत कर सकते हैं, और इस प्रकार अपने जीवन को अधिकाधिक उपयोगी बना सकते हैं। ऐसे कल्याणकारी सिद्धान्त का अन्वेषण करने वाले! तुम धन्य हो!

× × × ×

अपनी योग्यता के कारण, तुम पच्चीस वर्ष की उम्र में ही गणित के प्रोफ़ेसर नियत हो गये। पश्चात गति-विज्ञा

सम्बन्धी एक प्रयोग दिखा कर तुमने तत्कालीन विद्वद्-मंडली तथा धर्माधिकारियों में खूब हलचल मचादी। लोगों ने देखा कि एक नवयुवक प्रोफ़ेसर एक गिरजाघर की ऊंची मंज़िल पर खड़ा है। वह अपने हाथों में दो गेंद लिये हुए है। एक गेंद वज़न में दूसरे से सौ गुणी है। दोनों गेंद एक साथ नीचे छोड़ी जाने पर एक साथ ही ज़मीन पर गिरती हैं। उन की आवाज़ एक ही समय सुनायी पड़ती है। परन्तु उन दर्शकों को अपनी आंखों और कानों का विश्वास नहीं हुआ। उन्हों ने इस के विपरीत बात अपने धर्म-ग्रन्थों में पढ़ी थी, या धर्माधिकारियों तथा बडे बूढ़ों से सुनी थी। वे आश्चर्य से कहते हैं कि भिन्न भिन्न वज़न वाले पदार्थ, पृथ्वी पर एक साथ कैसे गिर सकते हैं, उन्हें आगे पीछे गिरना चाहिये।

× × × ×

ऐसा प्रत्यक्ष प्रयोग दिखाने के कारण, 'धर्म-प्रेमियों' ने तुम्हें नास्तिक, धर्म-विद्रोही, पापी समझा। वे तुम से शुत्रुवत् व्यवहार करने लगे। भला कोई इनसे पूछे, कि विज्ञान के नियमों और सिद्धान्तों का ज्ञान अन्वेषण और अनुसंधान द्वारा, परीक्षा और प्रयोगों द्वारा होगा, या उस में भी धर्म-शास्त्र और विचार-परम्परा प्रमाण माने जांयगे। परन्तु ऐसी बात कौन सुनता है। अनेक धर्माधिकारी नितान्त तर्क-विरोधी और अन्ध-विश्वासी होते हैं। ये लोग न स्वयं ज्ञान प्राप्त करते हैं और न सर्व साधारण जनता में ही ज्ञान का प्रचार होने देना चाहते हैं। इन्हें हरदम यह भय बना रहता है कि कहीं ऐसा न हो

कि जनता ज्ञानवान होकर हमारे मत में अविश्वासी हो जाय; वह प्रत्येक बात में युक्ति और प्रमाण की खोज करे, और इस प्रकार हमारे अनुयायियों की संख्या का ह्रास हो चले, तथा हमारी 'गुरुडम' अर्थात् प्रतिष्ठा को धक्का लगे। ये बात बात में धर्म की दुहाई दिया करते हैं। परन्तु, महात्मा गेलिलियो ! तुम सत्य के प्रेमी थे; तुम सत्य का अन्वेषण करने वाले थे। हम तुम्हें सच्चा धर्मात्मा और धर्म-प्रेमी समझते हैं। धर्म के ठेकेदारों के, तुम्हारे विरुद्ध रहने पर भी, जो वास्तव में धार्मिक जगत है, उस में तुम सच्चे इसाई माने जाओगे। सच्चे धर्मात्माओं और सच्चे धर्मों को विज्ञान, युक्ति, तर्क आदि से भयभीत होने का कोई कारण नहीं है।

× × × ×

तुम्हें अपने कार्यों से, सत्य की सेवा से, संतोष नहीं होता था। मंज़िल दर मंज़िल तुम आगे बढ़ते गये। तुम अपना मानसिक विकास करते जा रहे थे। तुम अपनी योग्यता का अधिकतम उपयोग करना चाहते थे। तुम्हारा परिश्रम अद्भुत था, तो तुम्हारी सूझ--बूझ, कल्पना और विचार-शक्ति भी महान थी। तुम गति--विद्या के नये नये आविष्कार करते रहे। कितने ही सिद्धान्तों का तुमने पता लगा दिया। खगोल विद्या के सम्बन्ध में भी तुम अपने प्रयोग तथा निरीक्षण और अनुसन्धान करते जा रहे थे। तुम अन्ततः इस निश्चय पर पहुंच गये कि यह पृथ्वी स्थिर नहीं है, वरन् सूर्य के गिर्द घूमती है। तुमने अपना यह मत व्याख्यानों और लेखों द्वारा सर्व साधारण के सन्मुख रख दिया।

धर्माधिकारी जो पहले ही तुम से अप्रसन्न थे, अब और भी बिगड़ उठे। पोप का केन्द्र, रोम मौलिकता से डरता था, और विचार-स्वातंत्र्य से घृणा करता था। वहां अब तुम्हारे विरूद्ध भयंकर षड़यंत्र रचा जाने लगा।

× × × ×

हे ज्ञान की ज्योति फैलाने वाले! तुमने थर्मामीटर, दूर्दर्शक यंत्र (दूरवीन), सूक्ष्म दर्शक यंत्र (खुर्दवीन) आदि कितने ही उपयोगी यंत्र बनाये थे। योरप के दूर दूर के स्थानों में तुम्हारा बड़ा आदर मान था। बड़े बड़े जिज्ञासु तुम्हारे चरणों में बैठ कर शिक्षा प्राप्त करने को लालायित रहते थे। कई राज्याधिकारी, और हां, धर्माधिकारी भी तुम्हारे मित्र और शुभचिन्तक थे। परन्तु ये सब बातें भी अन्ध--विश्वासियों और अन्ध-भक्तों से तुम्हारी रक्षा न कर सकीं। तुम पर धर्म-विद्रोह का अभियोग लगाया गया, और तुम्हें रुग्ण और दुर्बल होते हुए भी रोम के 'होली आफिस', (धर्माधिकारियों की अदालत) में उपस्थित होने की आज्ञा दी गयी। तुम्हें, जैसे भी बना, रोम आना पड़ा। अभियोग चलते रहने के समय भी तुम जेल में रखे गये। हर दम तुम्हें यह खटका लगा रहता था कि न जानें इस अभियोग के निर्णय--स्वरूप तुम्हें क्या क्या यंत्रणा सहनी पड़े, न मालूम तुम समाज--बहिष्कृत किये जाओ, अथवा जीते जी ही जला दिये जाओ। अहा! उस ज़माने में, इसाई धर्म के गढ़, रोम में, इसी प्रकार के पुरस्कार, विचार--स्वातंत्र्य के ' अपराधियों ' को दिये जाया करते थे।

× × × ×

धार्मिक कृत्यों का प्रदर्शन करके, न्याय का पूरा आडम्बर रच कर, धर्म, ज्ञान और न्याय के ठेकेदारों ने तुम्हारे विषय में अपना निर्णय सुनाया। तुम से अपना 'अपराध' स्वीकार कराया गया। भविष्य के लिए तुम्हें वैसे विचारों का प्रचार करने से रोका गया। तुम्हारी पुस्तकों का बिकना और छपना बन्द किया गया। तुम अनिश्चित काल के लिए क़ैद किये गये। यह भी तुम्हारे साथ बड़ी रियायत थी, कि पीछे तुम कुछ सुविधा वाले स्थान में नज़र-बन्द किये गये, और तुम अपना अन्त समय अपने ही घर में बिता सके। अन्यथा, अन्ध विश्वास तो जो कुछ भी अनर्थ करे सो थोड़ा है।

× × × ×

हे सत्य-पूजक! धर्माधिकारियों ने समझा था कि तुम्हारे रूप में उन्हों ने विचार-स्वातंत्र्य अथवा विज्ञान को कारावास दे दिया; अब पृथ्वी के घूमने के सम्बन्ध में लोगों में चर्चा होनी बन्द होजायगी। पर यह तो उन की भयंकर भूल थी। कुछ मनुष्यों का क्या, चाहे सब ही मनुष्यों का मत विपरीत हो, चाहे धर्म-शास्त्रों में कुछ भी लिखा हुआ रहे, इस से पृथ्वी अपना घूमना बन्द नहीं कर सकती। वह तो घूमती ही रहेगी, साथ ही उस पर रहने वालों को भी घूमते रहना होगा। महात्मन्! तुम्हें कैद करने वाले नहीं जानते थे कि 'किसी क़िस्म का कारावास सत्य को बन्दी नहीं बना सकता। वह उसके प्रवाह को कुछ समय के लिए भले ही रोक ले; परन्तु पीछे, कालकोठरी से भी, वह बिजली की तरह चपल होकर दुनियां में फैल जाता है, और सारे

ब्रह्मांड को हिला देता है' । आज संसार भर में प्रत्येक विद्यार्थी और शिक्षित व्यक्ति यह जानता है, और कहता फिरता है कि पृथ्वी घूमती है । इस प्रकार सर्वत्र तुम्हारी विजय की घोषणा होरही है । महात्मन् ! तुम विजयी हो, अमर हो, धन्य हो !

× × × ×

हे सत्य-शोधक ! तुम जीवन भर बड़ा परिश्रम करते रहे । बहुधा रात को भी देर देर तक जग कर आकाश मंडल का अध्ययन करते रहे । लगातार मेहनत और चिन्ता के कारण तुम्हें वृद्धावस्था में गठिया और बात आदि बीमारियों ने आ घेरा । परन्तु शारिरिक वाधाओं से तुम्हारा काम करने का उत्साह मंद नहीं हो सका । तुम बेकार बैठने वाले न थे । तुम कहा करते थे कि निरन्तर काम करते रहना ही शरीर और मन के लिए सर्वोत्तम औषधि है । इसी औषधि के बल पर तुम सत्य और ज्ञान के शत्रुओं द्वारा दिये हुए विविध संकटों को सहन करने में समर्थ हुए । तुम मानव जनता की सेवा करने के लिए सदैव बेचैन रहे संसार तुम्हारा चिर काल तक कृतज्ञ रहेगा । तुम सब सत्य-प्रेमियों के सम्मान और भक्ति के अधिकारी हो । सादर वन्दना !

———

(७)

न्यूटन के प्रति

हे विज्ञान-भक्त ! प्रकृति देवी के मंदिर तक पहुंचने में कैसी कठोर मंज़िलें तय करनी होती हैं, उसके अन्तस्तल के दर्शन करने, उस के रहस्यों को समझने, और जनता के सन्मुख रखने के लिए किस प्रकार धैर्य-पूर्वक एक एक प्रश्न हल करना पड़ता है! वैज्ञानिक कैसा परिश्रम और त्याग करके जल, थल, वायु और आकाश के जड़ और चैतन्य भिन्न भिन्न पदार्थों के विविध गुणों को मालूम करते हैं, नाना प्रकार की शक्तियों के सिद्धान्तों और नियमों का पता लगाते हैं ! प्रायः एक व्यक्ति जो बातें मालूम करता है, दूसरा, उसके बाद आने वाला उन में कुछ संशोधन, परिवर्तन या परिवर्द्धन करता है। इस प्रकार अनेक मनुष्यों के विविध प्रयत्नों के फल-स्वरूप ही हमें आज दिन कुछ वस्तुओं और प्राणियों के विषय में थोड़ा बहुत ज्ञान प्राप्त है। एक एक वैज्ञानिक को कभी कभी सृष्टि का एक नियम, सिद्धान्त या सच्चाई मालूम करने के वास्ते कितना कष्ट उठाना पड़ता है, इस का कुछ ठीक अनुमान भुक्त-भोगी ही कर सकते हैं। उन्हें बहुधा दरिद्रता का जीवन बिताना पड़ता है। कितने ही बेचारे तो अपना स्वास्थ्य तक खो बैठते हैं। दिन रात उन्हें अपने स्वाध्याय, चिन्तन और प्रयोगों की धुन रहती है । ऐसी ऐसी यातनायें सहकर जिन महानुभावों ने हमें विज्ञान-ज्ञान प्रदान किया है, उन्हें, और उनके प्रतिनिधि-स्वरूप, महात्मा न्यूटन ! तुम्हें सादर प्रणाम !

× × × ×

सन् १६४२ ई० में तुम्हारा शुभ जन्म हुआ । बारह वर्ष की अवस्था में तुम स्कूल भेजे गये। वहां यंत्र-कला में तुम्हारी खूब रुचि रही। तुम्हारे जल यंत्र, वायु यंत्र, हवा की चक्की, और घड़ी यंत्रों को देख कर लोग तुम्हारी बुद्धि पर आश्चर्य करने लगे । ये चीज़ें तुम्हारे मनोरंजन का साधन थीं। अपने अवकाश का समय तुम इधर उधर नष्ट न करके, इन के बनाने सुधारने में, तथा नयी नयी बातें सोचने में लगाते थे। बहुत कम आदमियों को उस समय यह अनुमान हो सकता था कि तुम इन खेल की चीज़ों को बनाते बनाते, संसार को अपने अनुपम आविष्कारों से कृतार्थ करोगे, मानव जनता के ज्ञान की वृद्धि कर, नये नये अन्वेषणों के लिए, आने वाले का वैज्ञानिकों मार्ग प्रशस्त करोगे । तुम धन्य हो !

× × × ×

महात्मन् ! महापुरुषों को कैसी कैसी कठिनाइयों का सामना करना पड़ता है । अपने विद्यार्थी-जीवन में तरह तरह की बाधाओं का अनुभव करने वाले युवकों को यह जान कर अवश्य धैर्य प्राप्त होगा कि तुम्हारे जैसे संसार-प्रसिद्ध विद्वान को प्रारम्भ में, और तो क्या, यथेष्ट कागज़ पत्र का भी अभाव रहता था। और, तुम्हें रेखागणित के प्रश्नों को हल करने, और उस के सिद्धान्त याद रखने के लिए घर की दीवारों से ही कागज़ का काम लेना पड़ता था। इस से वे दीवारें पुस्तक सी बन गयीं। अठारह वर्ष की उम्र में तुम कालिज में पढ़ने गये । वहां तुमने त्रिभुजाकार 'प्रिज़्म' (Prism) या शीशे के द्वारा सूर्य की किरणों के रंग का

विश्लेषण किया। इस से तुम्हें मालूम हो गया कि उन का सफेद प्रगट होने वाला रंग वास्तव में सात रंगों का मिश्रण है। इन्द्र धनुष (Rain-bow) में भिन्न भिन्न सात रंग इसी लिए दिखायी देते हैं कि वहां पानी के परमाणुओं द्वारा सूर्य की किरणों के रंग का विश्लेषण होजाता है। तात्विक रंग सात ही हैं। अन्य सब रंग इन में से ही दो दो या अधिक के सम्मिश्रण से बने हैं। हे विद्यान्वेषी ! तुम्हें नमस्कार !

× × × ×

अहा ! महापुरुष कभी कभी छोटी और साधारण सी घटनाओं पर भी विचार करके, उन के कारण और कार्य का चिन्तन करके कैसे महत्व-पूर्ण परिणामों पर पहुंच जाते हैं। सन् १६६५ ई० में एक दिन तुम्हारा, एक वृक्ष का फल नीचे गिरते हुए देखना, ऐसी ही बात है। हज़ारों लाखों आदमियों ने योरप में तुम से पहले ऐसी घटना देखी होगी; पर किसी ने उस पर विशेष ध्यान नहीं दिया। तुम ने इसे महत्व प्रदान कर दिया। तुम सोचने लगे कि यह फल नीचे पृथ्वी पर क्यों गिरा, वृक्ष से टूट जाने पर यह वहीं क्यों न ठहरा रहा, अथवा कहीं इधर उधर क्यों न चला गया। आख़िर सोचते विचारते तुमने यह निष्कर्ष निकाला कि पृथ्वी में आकर्षण शक्ति है। इस मध्याकर्षण के सिद्धान्त से तुमने क्रमशः और नयी नयी बातों का पता चलाया। अन्ततः तुमने यह भी प्रमाणित कर दिया कि भिन्न भिन्न ग्रह उपग्रह आदि पारस्परिक आकर्षण के कारण ही आकाश में निराधार घूमते रहते हैं। इस सिद्धान्त के परिणाम स्वरूप तुमने गति के वह नियम निर्धारित किये, जिनके आधार पर सारा ज्योतिष-

शास्त्र अवलम्बित है। ऐसा सूक्ष्म और गूढ़ विचार करने वाले महात्मन्! तुम्हारी योग्यता की प्रशंसा कहां तक की जाय! तुम्हें उच्च पद तथा पदवी प्रदान कर सरकार तथा जनता ने अपनी गुणज्ञता का ही परिचय दिया। तुम धन्य हो!

× × × ×

निष्काम, निस्वार्थ, सच्चे ईश्वर-भक्त की तरह, सच्चा ज्ञान-प्रेमी भी अपने आविष्कार, अनुसंधान और अध्यवसाय का कोई प्रतिफल नहीं चाहता। वह आत्म-संतोष से ही सन्तुष्ट रहता है। वह न धन की इच्छा रखता है और न अपनी प्रसिद्धि या ख्याति की। इस बात का, तुमने अपने जीवन में कैसा उत्तम दृष्टान्त दिया है। एक सज्जन ने तुम्हारे गणित सम्बन्धी उदाहरणों को रायल सोसायटी में प्रकाशनार्थ भेजने की अनुमति मांगी। उस समय तुम्हारी उम्र कोई २७ वर्ष की थी। ऐसी उम्र में मनुष्यों को प्रायः नामवरी या धन हासिल करने की बड़ी उत्कंठा रहती है। पर विज्ञान-भक्त ऐसी बातों से कोसों दूर रहते हैं। तुमने उक्त सज्जन से स्पष्ट कह दिया कि मेरा नाम प्रकाशित मत करना, मैं अपनी ख्याति नहीं चाहता। तुमने मध्याकर्षणआदि अपने अन्य आविष्कारों को भी प्रकाशित करने की कभी जल्दी न की। जब संयोग से वे तुम्हारे किसी मित्र आदि को मालूम होगये तो उन्होंने उन्हें प्रकाशित कर, संसार को उनकी सूचना दी। हे त्याग-वीर! तुम्हें सभक्ति नमस्कार!

× × × ×

तुम्हारी गम्भीरता और शान्त-वृत्ति भी प्रशंसनीय तथा अनुकरणीय है। तुम्हारे जीवन की यह घटना कितनी शिक्षा-

प्रद है। एक दिन तुम रात्री के समय काम करते करते बीच में बाहर चले जाते हो। मेज़ पर तुम्हारे कई वर्षों के परिश्रम से लिखे हुए काग़ज़ पत्र रखे हैं। मोमबत्ती जल रही है। तुम्हारा 'डायमंड' (हीरा) नामक कुत्ता पास बैठा है। तुम्हारी अनुपस्थिति में कुत्ता अचानक मेज़ पर उछल जाता है, और मोमबत्ती से सब कागज़ पत्र जलकर स्वाहा होजाते हैं। तुम लौटने पर इस दुःखदायी दृश्य को देखते हो, तुम्हें बहुत वेदना होती है। पर, तुम साधारण आदमियों की भांति, हानि पहुंचाने वाले पर, कुत्ते पर, गुस्सा नहीं उतारते। उससे तुम केवल यही कहकर रह जाते हो, 'डायमंड! तू नहीं जानता, तू ने कितनी शरारत की है।'

× × × ×

सच है, कि पानी का ओछा घड़ा छिलकता है, छोटी नदियां वर्षा ऋतु में उमड़ पड़ती हैं, ऐसे ही क्षुद्र-हृदय आदमी थोड़ी सी विद्या पाकर बड़ा अहंकार और अभिमान करने लगते हैं। ऐसी बात तुम में कैसे होती! तुमने ज्ञान-समुद्र में गहरा गोता लगाया था, तुम विनय और नम्रता की साक्षात् प्रतिमा थे। तुमने पचासी वर्ष की उम्र पाई, खूब मान प्रतिष्ठा प्राप्त की, कितने ही आश्चर्यप्रद और ज्ञानप्रद आविष्कार किये। इतना सब कुछ होते हुए भी, तुम्हें यही विचार था कि मैं ने बहुत थोड़ा काम किया है, अभी बहुत कुछ करना शेष है। मरते समय तुम्हारा यह कथन था कि "लोग मुझे चाहे जैसा विद्वान समझते हों, मेरी दशा तो उस बालक के समान है जो समुद्र के किनारे खड़ा हो और जिसने संयोग से, तरंगों द्वारा फैंके हुए सीपी आदि पदार्थ उठा लिये हों।

ज्ञान का अथाह समुद्र मेरे सामने है, मैं तो उसके तट पर ही हूं" हे विनय और शील सम्पन्न! सच है, तुम्हारे जैसे विद्यान्वेषी सदैव परमात्मा की सृष्टि के नये नये रहस्यों की खोज करने में लगे रहते हैं। तुम धन्य हो!

× × × ×

हे संसार हितैषी! तुम्हारी मातृ-भूमि इंगलैंड तुम्हारे कारण उतना ही, नहीं, नहीं, उससे अधिक अभिमान कर सकती है, जितना वह बड़े युद्ध-वीरों का करती है। युद्ध-वीरों की विजय से लाभ केवल इंगलैंड को ही हुआ, और अनेक दशाओं में वह लाभ औरों का नुकसान होकर रहा; परन्तु तुम्हारे आविष्कार-रूप विजय से संसार भर का कल्याण हुआ, और हानि तो किसी की भी नहीं। हां, यदि स्वार्थियों ने उसका दुरुपयोग किया तो इसके उत्तरदायी, इसके अपराधी, वे हैं, न कि तुम! तुम तो परोपकारी थे! तुम्हें सादर नमस्कार!

---

(८)

एब्राहम लिंकन के प्रति

हे दासों का उद्धार करने वाले! संसार में समय समय पर विविध महापुरुषों ने अपने वाक्यों से, और अपने उदाहरणों से, मनुष्यों को समानता का उपदेश दिया है। पर स्वार्थ-परायण आदमी उसे वहां तक ही मानते हैं, जहां तक उनके

लाभ या सुखोपभोग में क्षति न हो। यही कारण है कि अमरीका की स्वतंत्रता की लड़ाई लड़ी जा चुकने पर भी, अब से केवल सत्तर अस्सी वर्ष पहले तक, गोरे अमरीकन, विशेषतया संयुक्त राज्यों की दक्षिणी रियासतों के निवासी अपने यहां से गुलामी दूर करने के लिए तैयार न थे। उन की यह धारणा थी कि हवशियों को भेड़ बकरी की तरह खरीदना और बेचना एक साधारण कार्य हैं। जो लोग इन के दाम दें, वे ही इन के सर्वेसर्वा हैं। वे इन से कठोर से कठोर भला बुरा प्रत्येक काम करा सकते हैं, वे इन्हें चाहें जैसा खाने पहनने को दें, इन्हें मारें पीटें, या और दुःख दें, इन से चाहे जैसा व्यवहार करें; इस में किसी को कुछ कहने सुनने का अधिकार नहीं। सदाचार नाशक, मनुष्यत्व–संहारक दास-प्रथा को उन्मूलन करने के लिए, जिन जिन महानुभावों ने प्रयत्न किया, उन्हें, तथा उन के प्रतिनिधि–स्वरूप स्वनाम धन्य एब्राहम लिंकन ! तुम्हें सादर प्रणाम !

× × × ×

महात्मन् ! सन् १८०९ में तुम्हारा शुभ जन्म धनाढ्य, और पाश्चात्य सभ्यता वाली अमरीका में हुआ था, अन्य अनेक महापुरुषों की भांति, निर्धनता के कष्ट तुम्हें भी कुछ कम भोगने नहीं पड़े। तुम्हारा निवास स्थान एक झोंपड़ा था, जिसमें दीवारों की जगह बांस की टट्टियां खड़ी थीं, ज़मीन पर पुआल बिछा रहता था, जो खाल से ढके जाने पर, तुम्हारे लिए तथा तुम्हारे माता पिता के लिए बिछौने का काम देता था। बाल्यावस्था में, रात की सर्दी का इन्तज़ाम तुम्हें दिन में ही कर लेना होता था। तुम लकड़ियां इकट्ठी

कर के रख लेते थे, उन को जला कर जैसे तैसे रात काटते थे। दरिद्रता के कारण, तुम उचित समय पर स्कूल न भेजे जा सके, तुम्हारी माता ही बहुत समय तक तुम्हें शिक्षा देने का काम करती रही। यह गौण रूप से तुम्हारे लिए अच्छा ही हुआ। तुम्हें अपनी धर्मात्मा और दयालु माता के मुखारबिंद से निकले हुए पवित्र उपदेश हृदयंगम करने का अवसर मिला। अन्यान्य बातों में तुमने उनसे गुलामों की करुण कथा सुनी, जो तुम्हारे जीवन का कार्य क्रम स्थिर करने में सहायक हुई।

× × × ×

महान सुधारक! तुम्हारा साहस और चरित्र-बल विलक्षण था। यह समझ लेने पर कि दास प्रथा घोर अन्याय और बुराई है, तुमने इसे हटाने के लिए जी जान से उद्योग करना आरम्भ कर दिया। दासों के स्वामियों का दावा था, कि गुलामी में कोई क़ानून हस्तक्षेप नही कर सकता। गुलामों को स्वतंत्रता कदापि नहीं दी जा सकती, वे परतंत्र ही रहेंगे। यदि कोई व्यक्ति इस के विरुद्ध आवाज़ उठाता है, तो वह समाज विद्रोही है, वह सामाजिक व्यवस्था को विध्वंस करना चाहता है। बजाय इसके कि उस से समाज को किसी प्रकार की क्षति पहुंचे, वेहतर है कि उसे ही जेल या फांसी दी जाय। परन्तु तुमने अपने इन विरोधियों की कुछ परवा न की; आने वाली निश्चित प्रायः मुसीबतों की चिन्ता न की। तुम्हारे विविध सद्गुणों और सद्व्यवहारों से तुम्हें कई बार कांग्रेस की सभासदी मिली, और आख़िर तुमने उस महान् संस्था के सभापतित्व को भी सुशोभित किया, परन्तु इस

प्रकार प्राप्त शक्ति और अधिकार का उपयोग तुमने सदैव जनता के कल्याण के लिए ही किया। स्वदेश के सर्वोच्च पद राष्ट्र-पति पद, को प्रतिष्ठित करते हुए भी तुमने दीनों के प्रति अपने उत्तरदायित्व का समुचित ध्यान रखा। तुम धन्य हो!

× × × ×

तुम नहीं चाहते थे कि घर में कलह और रक्त-पात हो, परन्तु जब दक्षिणी रियासतों के स्वार्थी लोग किसी भी तरह गुलामों को मुक्त करने के लिए राज़ी न हुए तो समानता के प्रचार के लिए, मानवी स्वत्वों की रक्षा के लिए तुमने विवश उनसे युद्ध घोषणा की। अनेक कठिनाइयां उपस्थित हुईं, कई बार विफलता ही मिलती दिखाई दी। पर अन्त में तुम यशस्वी हुए। अमरीका में गुलामी का मुंह काला हुआ। तुम्हारी घोषणा से चालीस लाख गुलामों को स्वतंत्रता का जीवन प्राप्त हुआ। गुलामों की ज़ंजीर तोड़ने के उपलक्ष्य में, तुम्हें विविध प्रकार के उपहारों की भेंट की गयी। हां, दुष्टों ने दुष्टता और षड्यंत्रों से ही तुम्हारा सत्कार किया। तुम प्रत्येक सहृदय सज्जन के आदर मान के अधिकारी हो। तुम्हें सादर बन्दना!

× × × ×

महोदय! तुमने कल्याणकारी कार्य किया तो तुम्हारे शत्रु भी अनेक होगये। तुम्हारे हितैषियों तथा राज्य-कर्मचारियों ने तुमसे सावधान रहने, आत्मरक्षा का प्रबन्ध रखने, के लिए कितना अनुनय विनय किया। परन्तु अपने देश के किसी व्यक्ति के प्रति अविश्वास करना तुम्हें ठीक न जचा। तुमने शरीर-रक्षक अपने पास रखना स्वीकार न किया। इधर

दासता का शव अपने अन्त्येष्टि संस्कार के लिए, एक विशुद्ध हृदय का बलिदान चाह रहा था। क्षुद्र कोटि के जीव तुम्हारी घात में थे। एक रात उन्होंने तुम्हें अपनी गोली का शिकार बना ही डाला। तुम्हारी ऐहिक लीला पूरी होगयी। तुम अमर हो ! तुम धन्य हो !

× × × ×

महात्मन् ! अमरीका में तत्कालीन गुलामी का अन्त होगया। परन्तु जितना काम हुआ, तुम्हारी आकांक्षा उससे कहीं अधिक महान थी। तुम तो मनुष्य मात्र के लिए समता और स्वाधीनता का आदर्श रखते थे। तुम गोरे काले का, अमरीकन और हबशी आदि ग़ैर-अमरीकन का, इसाई और अन्य मतावलम्बियों का भेद भाव हटाना चाहते थे। इस महान कार्य के तो अभी कई हिस्से अधूरे ही पड़े हैं। तुम्हारे सभ्य स्वदेश बन्धु और उनकी उन्नत सरकार अमरीका के मूल निवासियों के प्रति कैसा व्यवहार करती है ! ओह ! उनकी 'लिंचिंग' (खाल खिंचवाने की) प्रथा तो मनुष्यत्व को ही कलंकित करनेवाली है। विदेशियों को नागरिक अधिकार देने में कितनी अनुदारता का परिचय दिया जाता है। भगवन् ! अभी वहां कितने 'लिंकनों' की आवश्यकता और बनी हुई है !

× × × ×

एक अमरीका के ही नहीं, अन्य देशों के भी बहुत से दीन दुखी मज़दूर, प्रतिज्ञा-बद्ध कुली, और बेगार आदि प्रथाओं के शिकार अपने अपने 'लिंकनों' की पतीक्षा कर रहे हैं। गुलामी को असभ्य काल की प्रथा मानते हुए भी इन राष्ट्रों के

भलेमानस या भली सरकारें उसके विविध रूपान्तरों को पालित पोषित करने में लज्जित नहीं होतीं। कहीं यह घृणित कार्य देशोन्नति के नाम पर किया जाता है, कहीं समाज-रक्षा के नाम पर, और कहीं साम्राज्य-हितैषिता के नाम पर !

× × × ×

एक प्रकार से आधुनिक मज़दूरों की दशा, प्राचीन दासों की अपेक्षा, अधिक शोचनीय और दयनीय है। प्राचीन काल में दास कुटुम्ब का एक अंग होता था, गृह-स्वामी उसके भरण पोषण की कुछ तो चिन्ता रखता ही था। पर अब तो मालिक या पूंजीपति मज़दूरों से कड़े से कड़ा काम कराने पर, जब उनकी मज़दूरी के थोड़े से पैसे दे देता है, तो ऐसा समझा जाता है कि उसका कर्तव्य पूरा होगया। उन पैसों से मज़दूर और उसके परिवार का निर्वाह हो या न हो; वे भूखे मरें या सर्दी में ठिठरें, मालिक की बला से। क़ानून की मांग पूरी होगयी। बस; और कुछ करने धरने की, सोचने विचारने की बात न रही !

× × × ×

पुनः विविध पराधीन देशों के वे करोड़ों आदमी एक प्रकार के गुलाम ही तो हैं, जिनका खान पान, भाषण, सम्मेलन, यात्रा, लेखनादि उनके अधिकारियों की इच्छा पर निर्भर है। भले ही कुछ स्थानों में प्रजा की स्वतंत्र मनोवृत्ति सुषुप्त होजाने के कारण, वे अपने जीवन में कोई अस्वाभाविकता का अनुभव न करते हों, पर इससे वस्तु-स्थिति में कोई अन्तर नहीं आता। इससे तो यही सिद्ध होता है कि

पराधीनता का नशा गुलामी के नशे के समान अचेत करनेवाला है। संसार से पराधीनता हटाने की वैसी ही आवश्यकता है, जैसी कि गुलामी के पुराने स्वरूप को हटाने की थी, और, इसके आधुनिक स्वरूपों को हटाने की अब भी है।

× × × ×

महात्मन्! वह दिन कब आयेगा जब प्रत्येक समाज यह समझेगा कि दासत्व मालिक और गुलाम, दोनों को, एवं पराधीनता शासक और शासित सब को पतित करने वाली है? जब इस विषय में समुचित ज्ञान होजायगा, तभी कोई देश वास्तविक सुख शान्ति का उपभोग कर सकेगा। तुमने अपने समय की गुलामी दूर करने का कार्य किया था, देखें, इसके वर्तमान रूपों का मूलोच्छेद करने के लिए कितने और प्रयत्नों तथा बलिदानों की आवश्यकता होती है। जो हो; तुमने एक शुभ कार्य का मार्ग प्रशस्त करने में अपनी आहुति प्रदान करदी; तुम धन्य हो, चिरस्मरणीय हो!

(१)

फ्लोरेन्स नाइटिंगेल के प्रति

हे समाज सेविका! संसार को समय समय पर मानसिक कष्ट निवारण करने वालों की ज़रूरत होती है, तो उसे ऐसी महान आत्माओं की भी कम आवश्यकता नहीं, जो लोगों के शारीरिक रोगों के दूर करने में अपना तन मन धन अर्पण करदें, और उन के स्वास्थ्य और कुशल क्षेम की वृद्धि करने वाली हों। देवी! पिछली शताब्दी के आरम्भ में सर्व साधारण ने तुम्हें एक अंगरेज़ बालिका के रूप में देखा, तुम अपनी गुड़ियों से खेलती हो, उन्हें कपड़े पहनाती हो, उन्हें खिलाती पिलाती हो। ये बातें सभी बालिकायें करती हैं; पर तुम्हारे कार्य में कुछ अनोखापन है। तुम समय समय पर उन गुड़ियों को रोगी और ज़ख्मी समझ कर उनकी मरहम पट्टी और दवा-दारू भी करती हो। तुम्हारे इस खेल से बहुत कम आदमियों ने तुम्हारे होनहार भविष्य की कल्पना की होगी। कौन कह सकता था कि गुड़ियों की मरहम पट्टी करने वाली बालिका एक दिन मानव जाति के रोगों और कष्टों का अनुभव करेगी, उन के निवारण के लिए देश विदेश में घूम फिर कर समुचित शिक्षा प्राप्त करेगी, और फिर अपना जीवन धातृ-कार्य में लगा कर आने वाली मनुष्य सन्तान के लिए सेविकायें तैयार करने में पथ-प्रदर्शिका बनेगी? तुमने यह सब किया, तुम धन्य हो, अभिनन्दनीय हो!

× × × ×

छोटी उमर से ही तुम्हें सेवा सुश्रुषा करने का शौक था। साथ ही तुम्हारा हृदय भी उदार था, वह केवल मनुष्यों की ही हित-चिन्तता में लगा रहने के लिए नहीं था, वह जानवरों की पीड़ा का भी अनुभव करता था। हां, तुम्हारी चिकित्सा से लाभ उठाने वाला प्रथम प्राणी एक कुत्ता था। यह बात कितनी शिक्षा-प्रद है! सेवा और चिकित्सा के लिए तुमने अपने ऐश्वर्य और आराम को भी तिलांजलि दे दी। तुम आस पास के गांव में गरीबों की झोपड़ियों में जातीं, और जहां किसी को बीमार और कष्ट-पीड़ित पातीं, उस के दुःख को अपना दुःख समझ कर उसे स्वस्थ करने का हर प्रकार से प्रयत्न करतीं। तुमने अस्पतालों में जाकर देखा कि वहां रोगियों की सेवा शुश्रुषा कितनी कम, और, कैसी अज्ञानता और अकुशलता से की जाती है। दाइयां धातृ--विद्या के ज्ञान और अनुभव से नितान्त शून्य हैं। इस से तुम्हें बड़ी वेदना हुई और तुमने इस अवस्था को भरसक सुधारने का संकल्प कर लिया। इंगलैंड में तुम्हें यथेष्ठ शिक्षा देने वाली संस्था न मिली तो तुमने जर्मनी और फ्रांस की ख़ाक छानी; वहां धातृ--विद्या में समुचित योग्यता प्राप्त कर के तुम स्वदेश लौट आयीं और अपने निर्धारित कार्य में जुट गयीं।

× × × × ×

क्रिमिया में अंगरेज़ों और रूसियों की छिड़ गयी। युद्ध की विकरालता के समाचार क्रमशः इगलैंड वालों को ज्ञात होने लगे। अन्यान्य बातों में मालूम हुआ कि जो अभागे अधिक ज़ख्मी हो जाते हैं, वे मृत्यु की प्रतीक्षा किया

करते हैं। उन की सेवा सुश्रुषा करने वाले पर्याप्त संख्या में, और समुचित शिक्षा पाये हुए नहीं होते। इस से ज़ख्मी आदमी अधिकतर मर जाते हैं, और बहुत से तो अनेक कष्ट पाकर बुरी मौत मरते हैं। उनकी देख भाल के लिए, यथा शक्ति उनका कष्ट कम करने के लिए, और उन्हें बे-आयी मौत से बचाने के लिए ऐसे व्यक्ति के नेतृत्व में आयोजन करने की आवश्यकता है, जो निपुण और सुदक्ष होने के अतिरिक्त, प्रेम, दया और करुणा की साकार मूर्ति हो, जो वात्सल्य रस पूर्ण हो! अहा! यह काम तो विशेषतया मातृ--शक्ति के ही करने का है। इस में मस्तिष्क की अपेक्षा कहीं अधिक आवश्यकता हृदय की है। देवी! तुम इस कार्य के लिए सर्वथा सुयोग्य थीं। तुम्हें नमस्कार!

× × × ×

देवी! तुम अन्य दाइयों को साथ लेकर युद्ध क्षेत्र में गयीं, और मृत्यु शय्या पर पड़े हुए लोगों को तुमने जीवन संदेश सुनाया। अहा! सुकोमल हाथों से घावों को धोना, धीरे धीरे बड़ी सावधानी से पट्टी बांधना, प्यास से व्याकुल और बिस्तरे पर पड़े हुए असहाय आदमियों के मुंह में चम्मच से एक एक घूंट पानी डालना, भूख से तड़फते हुए, कुछ भी खाने में असमर्थ लोगों को थोड़ा थोड़ा दूध पिलाना, उन के खून से अथवा मल मूत्र से सने हुए कपड़ों को उतार कर, उन्हें साफ कपड़े पहनाना, तथा इस प्रकार के अन्य सभी कार्य करना तुम्हें प्रिय और रुचिकर था। और, उस समय भी तुम्हें क्रोध न आता था, जब कोई रोगी या पागल तुम्हारे उच्च उद्देश्य को न समझ कर तुम्हें

चोट पहुंचाता या तुम्हारा अपमान करता था। तुम ऐसे व्यक्ति को और भी अधिक दया का पात्र समझती थीं। हे विशालमना ! जब अंधेरी रात में तुम हाथ में लालटैन लिए अनाथ रोगियों की देख भाल करती फिरती थीं तो तुम साक्षात प्रकाशमान देवी प्रतीत होती थीं। तुम धन्य हो।

× × × ×

मानव जाति के दुर्भाग्य से अभी युद्धों का अन्त होता दिखायी नहीं देता, हर समय उनका सामान तैयार रहता है। परन्तु युद्ध न हों तो वैसे भी लोगों को आये दिन अनेक विपत्तियों, रोगों और दुर्घटनाओं का सामना करना पड़ता है। योग्य दाइयों के न मिलने से स्त्रियों को प्रसव सम्बन्धी अनेक कष्ट उठाने पड़ते हैं। अनेक बच्चे माता के पेट में ही, अथवा जन्मते ही मर जाते हैं, बहुत सों का रूप विकृत होजाता है। खेद है कि अभी अज्ञानान्धकार--पूरित अनेक देशों और जातियों में दाई का काम अपवित्र समझा जाता है, और उच्च कुल की महिलायें इस परमोपयोगी काम में भाग लेने के लिए यथेष्ठ संख्या में आगे नहीं बढ़तीं। देवी ! तुम्हारे आशीर्वाद से इस स्थिति में क्रमशः सुधार हो रहा है। धातृ--कार्य करने वाली अनेक सेविकायें तैयार हो रही हैं। जगह जगह मिशन अस्पताल खुले हैं, जो केवल आहत सैनिकों की ही नहीं, सर्व साधारण गृहस्थों और बाल वृद्ध· पुरुष स्त्रियों की सेवा करती हैं। देवी तुम धन्य हो, और जो तुम्हारा अनुकरण करके अपना जन्म सफल करते हैं, वे धन्य हैं !

× × × ×

देवी ! तुम ने अपने जीवन में निःस्वार्थ सेवा की थी। तुम्हें धन या ख्याति की कभी इच्छा न रही। जब तुम्हारे सम्मान के लिए कुछ द्रव्य संग्रह किया भी गया तो तुमने उसे धात्-विद्यालय के लिए लगा दिया। खेद है कि अब वहुत सी नर्सें और दाइयां तुम्हारे त्याग और निष्काम भाव से समुचित शिक्षा नहीं लेतीं। व्यक्तिगत रूप से, अथवा संस्थाओं में काम करते हुए, उन की नज़र धन की ओर रहती है। रोगी के पास उन्हें देने को पर्याप्त द्रव्य हुआ तो ठीक है, अन्यथा उसे किसी वहाने से टाल दिया जाता है, या नाम मात्र को, वड़ी बेपरवाही से कुछ दवा-दारू दे दी जाती है। दीनों और अनाथों की सम्यक् चिकित्सा और सेवा सुश्रूषा करने वाली कम हैं। परमात्मा करे, देश देश में, प्रत्येक ग्राम और नगर में सच्चा सेवा-व्रत धारण करने वाली 'नाइटिंगेल' पैदा हों, जो रोगियों का इलाज करना ही उच्चतम ईश्वराराधना और भक्ति--कार्य समझें। देवी ! तुम चिरस्मरणीय हो, और सर्वत्र अनुकरणीय हो। तुम्हें सादर वन्दना !

(१०)

मेज़िनी के प्रति

महात्मन् ! उन्नीसवीं शताब्दी के जिस प्रारम्भिक काल में, तुमने इटली में जन्म लिया, वह योरप भर के लिए विप्लव-कारी युग कहा जाता है। जिस देश में देखो, विप्लव का कोई न कोई रूप विद्यमान था। कहीं उस की योजना हो रही या, कहीं वह आरम्भ हो चुका था, अनेक स्थानों में विफलता-पूर्वक समाप्त हो चुकने पर उसकी पुनरावृत्ति हो रही थी। जनता पर स्वेच्छाचारी शासकों और उन के समर्थक धनी लोगों के भयंकर अत्याचार हो रहे थे। तुम्हारी मातृ-भूमि की भी बुरी दशा थी। वह भिन्न भिन्न भागों में विभक्त थी, अधिकांश भाग विदेशियों के चंगुल में फंसे हुए थे। प्रजा अपने उद्धार के लिए छटपटा रही थी, परन्तु उसे सफलता नहीं मिलती थी। जनता का उद्देश्य सिद्ध क्यों नहीं होता; यह प्रश्न था जिसे हल करने के लिए तुमने गम्भीर चिन्तन किया। फल--स्वरूप, तुमने स्वदेश को एवं अन्य देशों को अपनी अपनी कायापलट करने में बहुत कुछ सहायता दी। तुम धन्य हो ! तुम्हें सादर प्रणाम !

× × × ×

हे देश भक्त ! जब से तुम्हें कुछ पढ़ना लिखना आया, तुम कविवर आल्फिरी के देशभक्ति-पूर्ण नाटक पढ़ने लग गये थे। तुम्हारे हृदय में यह बात जम गयी कि प्रत्येक देश को

स्वंतत्र होना चाहिये, और विना कष्टों को सहे स्वतंत्रता प्राप्त नहीं होती। इस प्रकार तुमने आरम्भ से ही देश सेवा का महत्व सीख लिया था। एक रविवार को तुम अपनी माता के साथ गिरजाघर से लौट रहे थे। एक आदमी ने तुम्हारा रास्ता रोक कर, उन लोगों के लिए भिक्षा मांगी, जो इटली को स्वतंत्र करने के लिए नाना प्रकार के प्रयत्न कर रहे थे, और, जो सरकार के दमनकारी क़ानूनों के कारण विदेशों में ही रहने को वाध्य थे। इस वात से तुम्हारे ऊपर बड़ा प्रभाव पड़ा। यद्यपि तुम्हें वकालत सिखायी गयी थी, पर तुम सब उमंगों और आकांक्षाओं का वलिदान करके देश की वकालत करने के लिए आरुढ़ होगये।

× × × ×

हे महान शिक्षक! तुमने शीघ्र ही यह जान लिया कि भिन्न भिन्न देशों के राज रोग को दूर करने के लिए विप्लव-रूप जो औषधी दी जा रही है, उस में क्या दोष है तथा उस के अनुपान में क्या त्रुटि है, जिस से वह यथेष्ट आरोग्य प्रदान करने वाली प्रमाणित नहीं होती। तुमने समझ लिया, और ठीक समझ लिया कि ये विप्लवकारी जहां तहां अधिकार और स्वत्व को ही महत्व देते हैं, अपने कर्तव्य के पहलू का विचार मन में नहीं लाते। इस का फल यह होता है कि दूसरे स्वेच्छाचारी और अत्याचारी अधिकारियों को दमन करने के वाद, वे स्वयं नये स्वार्थियों के रूप में प्रकट होने लगते हैं। एक अधिकारी का पतन हुआ, दूसरा उसका स्थानापन्न होगया। एक श्रेणी नष्ट हुई, दूसरी आ धमकी। दीन दुखी जनता जैसी की तैसी

पद-दलित और पीड़ित बनी रही। वह अधिकाधिक निराश होती थी। आन्दोलन-कारियों पर से उसका विश्वास उठ जाता था।

× × × ×

हे महापुरुष ! परिस्थिति का सुविचार करके, तुम लोगों को अपने व्याख्यानों से तथा लेखों से कर्तव्य पालन की शिक्षा देने में जुट गये। तुम ने स्वदेशवासियों को सम्बोधन करके कहा, एक होजाओ, संगठन करो, तुम सब एक परम पिता की संतान हो, उस के आदेश पर ध्यान दो, अपने कर्तव्य पालन के लिए हर प्रकार का कष्ट सहन करने को तैयार रहो, अत्याचारी को दंड देना एक पवित्र कार्य है, जनता की, अपने भाई बन्धुओं की, सेवा करना तुम्हारे जीवन का उद्देश्य है, कोई मनुष्य या श्रेणी किसी ऐसे व्यक्तिगत अधिकार की अधिकारी नहीं होनी चाहिये, जिससे दूसरों को कुछ कष्ट पहुंचे।

× × × ×

हे युवकों के हृदय-सम्राट ! तुम्हें नवयुवकों पर असीम विश्वास था। तुम जानते थे कि जितने बड़े बड़े कार्य संसार में हुए हैं, उनमें नवयुवकों की सहायता अवश्य रही है। अतः तुमने 'तरुण इटली' नामक संघ की स्थापना की, इसने मानों प्रभात के शुभागमन की घोषणा कर दी। इसके राष्ट्रीय झंडे में सफेद, लाल और हरा ये तीन रंग थे, जो क्रमशः स्वाधीनता, समानता और मानवता के सूचक समझे जाते हैं। इस संघ के सदस्य परमात्मा, इटली, और शहीदों के नाम पर, अपने गुरु के सामने गम्भीरता पूर्वक देश सेवा की

शपथ लेते थे। उनके जैसा भाव जिस देश के तरुणों के हृदयोंमें यथेष्ठ रूप से अंकित होजाय, उसका उद्धार होने में क्या सन्देह है!

× × × ×

हे तपस्वी! तुम्हारे प्रभावशाली आन्दोलन से निरंकुश शासकों का भयभीत होना, और उन का तुम्हारे लेखों वाले पत्रों को बन्द करना, तुम्हें कैद, देश निकाला तथा नाना प्रकार के कष्ट देना और तुम्हारे सिर के लिए बड़े बड़े इनामों की सूचना निकालना स्वाभाविक ही था। तुम्हें एक स्थान से दूसरे स्थान, एक देश से दूसरे देश में, फ्रांस, स्विटज़रलैंड और इंगलैंड आदि में मारा मारा फिरना पड़ा। अपने शुभ आन्दोलन को तुमने विरुद्ध परिस्थितियों में भी, विदेशों में भी, जारी रखा! अपने उद्देश की महत्ता को, देश के शुभ भविष्य को तुमने खूब हृदयगंत कर लिया था, फिर तुम निराशा से भी निराश कैसे होते। तुम्हारा तप और त्याग आखिर फल लाकर रहा। अत्याचारी शासकों के विरुद्ध जनता उठी, और पहले की अपेक्षा खूब सोच समझ कर उठी। अपने जीवन-काल में ही, तुमने अपनी आंखों देख लिया कि तुम्हारी मातृ-भूमि ने अंशतः तो स्वतंत्रता प्राप्त कर ही ली। तुम्हें अन्त काल में यह संतोष रहा कि अब उस की पूर्ण स्वतंत्रता का मार्ग प्रशस्त होगया है।

× × × × ×

तुम्हारी मननशीलता विलक्षण थी। तुम्हारे हृदय पटल पर यह भली भांति अंकित होगया था कि फ्रांस की राज्य क्रान्ति मनुष्यों की व्यक्तिगत स्वतंत्रता, समता तथा भ्रातृत्व

के लिए थी; अब क्रान्ति का उद्देश्य होना चाहिये जातियों की स्वतंत्रता, समता और भ्रातृत्व। तुमने सोच लिया था कि इस क्रान्ति के लिए संसार का पथ-प्रदर्शक नेता होगा इटली; वह इटली जो प्राचीन काल में रोम कहलाता हुआ अपने सीज़रों (सम्राटों) और पोपों के लिए विश्व-विख्यात रहा, अब प्रजातंत्र स्थापित कर, सब देशों के लिए विश्व-बन्धुत्व का अनुकरणीय उदाहरण उपस्थित करेगा। महानुभाव तुम्हारी राष्ट्रीयता संकीर्ण न थी। तुम्हें केवल इटली की चिन्ता न थी, अन्य जातियों और देशों का भी तुम्हें पर्याप्त ध्यान था। तुम कहा करते थे कि इटली के अतिरिक्त स्पेन, पुर्तगाल, हंगरी, पोलैंड और रूस आदि में भी लोग अत्याचार-पीड़ित हैं, सब को मिलकर राजनैतिक मोक्ष की प्राप्ति का प्रयत्न करना चाहिये।

× × × × ×

तुम भली भांति जानते थे कि विचार-स्वातंत्र्य के विना कोई राजनैतिक क्रान्ति, सफल नहीं होसकती। यह ठीक ही है कि प्रत्येक महान कृत्य से पूर्व उच्च भाव होने चाहियें। तभी तो तुम सर्व साधारण को मानसिक दासता से मुक्त कर, उन में नया बौद्धिक तथा नैतिक जीवन भरना चाहते थे। और हां, तुम्हारा ध्येय विविध देशों में रहने वाली जनता को केवल राजनैतिक उत्थान ही नहीं था। तुम चाहते थे जनता का सर्वांगीन कल्याण, पूर्ण उन्नति। और, यह तो सदा बना रहने वाला प्रश्न है। इसके लिए प्रत्येक देश में समय समय पर ऐसे बलिदान होते रहने की आवश्यकता है, जिसका नमूना तुम अपने जीवन में दिखा गये। तुम धन्य हो!

× × × ×

महात्मन ! तुम्हारे त्याग, निरहंकार, धैर्य, कर्तव्य-परायणता, धर्म-भीरुता, विशाल मानव प्रेम, अपार सहन-शीलता आदि विविध गुणों का कोई कहां तक बखान करेगा? तुम्हारे जीवन-काल में, तुम्हारे देश के तथा विदेशों के बहुत कम आदमियों ने तुम्हारी महत्ता को यथेष्ठ रूप से समझा, और सब मिलाकर, बहुत कम ने ही तुम्हारा समुचित आदर किया। परन्तु कौन अभागा होगा जो अब तुम्हें श्रद्धांजलि अर्पित करना न चाहता हो? तुम्हारी कृतियां अमर हैं, तुम्हारे लेख और भाषण अब भी अनेक भूले भटकों को राह पर लाने वाले हैं। परमात्मा करे, तुम्हारी आत्मा इटली तथा अन्य राज्यों और साम्राज्यों के सूत्रधारों के हृदयों में ऐसी प्रेरणा करे कि वे तुम्हारे महान संदेश पर ध्यान दें, और अपने अपने स्वार्थ में रत न रह कर मनुष्यत्व के हित और उन्नति का चिन्तन करें। सादर सभक्ति प्रणाम!

---

(११)

टाल्स्टाय के प्रति

हे तत्ववेत्ता! आधुनिक वातावरण में हम चहुं ओर क्या देख रहे हैं! अधिकांश आदमी अपने अपने स्वार्थ साधन, भोग विलास की सामग्री जुटाने के बेढब पीछे पड़े हैं। दिन रात उन्हें इसी की चिन्ता रहती है। उन की आवश्यकताओं

की पूर्ति ही नहीं हो पाती, अथवा जितनी आवश्यकताओं की पूर्ति होती है, उन से अधिक और बढ़ जाती हैं। इस प्रकार उनके प्रयत्नों से उन्हें शान्ति प्राप्त नहीं होती; उलटा असंतोष की अग्नि उन के अन्दर जला करती है। फलतः समाज में जो आदमी धनी और सम्पन्न होते हैं, वे भी वास्तव में चिन्ता-ग्रस्त और दुखमय जीवन व्यतीत करते हुए ही मिलते हैं, फिर मज़दूरों और किसानों आदि उन असंख्य लोगों का तो कहना ही क्या, जो अपनी दरिद्रता के कारण, साधारण शारिरिक आवश्यकताओं की भी पूर्ति नहीं कर पाते। और, इन लोगों की यह भयानक दरिद्रता कहां से आयी ? समाज की व्यवस्था, समाज के क़ायदे सर्व साधारण को दीन हीन बनाते हुए भी जायज़ क़रार क्यों दिये जाते हैं। इन प्रश्नों पर गम्भीर चिन्तन करके, अमृतमय उपदेश छोड़ जाने वाले, ऋषी प्रवर ! तुम धन्य हो ! सादर वन्दना !

× × × ×

महात्मन ! तुम्हें केवल अठारह महीने की अवस्था में, माता की गोद से सदैव के लिए अलग होना पड़ा। तुम्हारी नौ वर्ष की उम्र होने पर, तुम्हारे पिता का भी स्वर्गवास होगया ! विद्योपार्जन करते हुए, तुमने पहले राजदूत बनने के विचार से पूर्वीय भाषायें सीखने का निश्चय किया। इसमें मन न लगने पर तुमने क़ानून का अध्ययन आरम्भ किया। जब इसमें सफल मनोरथ न हुए तो तुम कृषकों में काम करने के लिये चले आये। कुछ दिन पीछे तुम रूस की राजधानी में गये। यहां तुमने संसार के भोग विलास, तथा दूषित वायु मंडल का अनुभव किया। तुमने सरकारी

नौकरी भी की, और देश विदेश की यात्रा भी की। तुमने एक के बाद दूसरी, एक से एक अच्छी, पुस्तक लिखीं, इस प्रकार तुम्हारी उम्र के पचास वर्ष बीत गये। संसार को तुम्हारे लेखन कार्य के अतिरिक्त, अन्य कार्य क्रम कुछ विशेष महत्व का प्रतीत न हुआ। वास्तव में महान परिवर्तन तो अभी होने को ही था।

× × × ×

अहा! शिक्षित संसार तुम्हारी क़लम का लोहा मानता है; तुम्हारे पास धन सम्पत्ति भी पर्याप्त है, घर में प्रेम करने वाली स्त्री तथा अन्य सुख सामग्री मौजूद है। पर, यह सब होते हुए भी तुम अपने जीवन से असंतुष्ट हो। वास्तव में युवावस्था से ही तुम धार्मिक तथा सामाजिक समस्याओं का चिन्तवन करते आरहे थे, परन्तु सांसारिक बातों ने उन्हें दबा दिया था। पर ऐसा कब तक रहता! आख़िर, समय आया, उन समस्याओं ने फिर तुम्हारा ध्यान आकर्षित किया, इस बार वे समस्यायें किसी प्रकार टाली नहीं जा सकीं। तुम्हारे जीवन ने यकायक पलटा खाया। तुमने अपनी जायदाद और ज़मीदारी से विरक्त होकर अपनी आवश्यकतायें कम करके, और यह घोषणा करके कि धनवान या ज़मींदार होना पाप है, उन्नीसवीं और बीसवीं शताब्दी में, भौतिकवाद के युग में, अति प्राचीन काल के त्याग की छटा दिखायी है; और हां, योरप के रूस देश में भारतीय साधु सन्तों का सा दृश्य दिखाया है। तुम धन्य हो!

× × × ×

भगवन्! आज दिन भिन्न भिन्न देशों में अनेक आदमी देश-भक्त बनने का दावा करते हैं; पर देश की आत्मा के निवास-स्थानों, देहातों और ग्रामों में रहना पसन्द नहीं करते; श्रमकी महत्ता का उपदेश देते हुए भी किसानों और मज़दूरों का आदर नहीं करते; इन से दूर दूर ही रहते हैं। कैसी शोचनीय स्थिति है! सच्चा सुधारक बनने की शिक्षा पाने के लिए, तुम्हारा जीवन एक उपदेश-पूर्ण ग्रन्थ है। तुमने किसानों के रहन सहन आदि का अध्ययन किया, और अन्ततः धनवानों और 'शिक्षितों' का वातावरण त्याग कर स्वयं एक किसान का जीवन व्यतीत करना आरम्भ कर दिया। साधारण वस्त्र पहनना, रूखा सूखा भोजन करना, दूर दूर तक पैदल ही यात्रा करना, अथवा, जब कभी रेल में ही जाना पड़े तो साधारण स्थिति के लोगों की संगति का अनुभव करने के लिए तीसरे ही दर्जे में बैठ कर जाना, खेतों में जाकर, अपने हाथों खेती का काम करना आदि बातें तुम्हारी अपने महान् कार्य के प्रति सच्ची लगन और हार्दिक प्रीति प्रदर्शित करती हैं। वास्तव में तुम्हारा आदर्श उच्च था, और उसे प्राप्त करने के लिए, तुम्हारे जैसे सुख-साधन-सम्पन्न, और बाल बच्चों वाले गृहस्थी को अपने जीवन की दिशा बदलने में कितना प्रयत्न और साहस करना पड़ा होगा, इसे कोई भुक्त-भोगी ही जान सकता है।

× × ×

अपनी आत्म कथा (Confessions) में तुमने अपनी निर्बलताओं और दोषों की आलोचना करने में किसी प्रकार की रियायत नहीं की, वरन् यह कहा जा सकता है कि तुमने

आवश्यकता से अधिक कड़ाई की है। तुम्हारी स्पष्टवादिता की बातें पढ़ते ही बनती हैं। धर्म सम्बन्धी कई प्रचलित विषयों में तुम्हें जो अश्रद्धा और अविश्वास हुआ, उसे प्रकट करने में तुमने कुछ भी संकोच नहीं किया। धर्म, सभ्यता या संस्कृति आदि के सम्बन्ध में नाना प्रकार के संदेह रखते हुए भी आज कल अनेक आदमी केवल दूसरों को दिखाने के लिए, दूसरों की दृष्टि में धर्मात्मा और पुण्यात्मा बनने के लिए, विविध 'धार्मिक' कृत्य किया करते हैं। ऐसे लोगों के लिए तुम्हारा उदाहरण कितना शिक्षा-प्रद है!

× × × ×

तुम्हारी अन्य रचनाओं में भी कोरा मस्तिष्क-कार्य, पांडित्य या विद्वता ही नहीं है, तुम ने तो उन में अपना हृदय खोल कर रख दिया है। प्रायः लोगों की भौतिक आकांक्षाओं और नैतिक विचारों में बड़ा संघर्ष रहता हैं। उन की इच्छायें स्वार्थमय होती हैं, पर वे डींग मारा करते है, सेवा और परोपकार की। अन्यान्य बातों में, इस विषय का भी चित्र तुमने अपनी रचनाओं में खैंचा है। वह चित्र जितना सच्चा उस समय था, अब उस से भी अधिक सच्चा और अधिक कष्टदायक है। भिन्न भिन्न प्रकार के सुधारकों के लिए, अपने अपने क्षेत्र में प्रचार करने के वास्ते, तुम्हारे ग्रन्थों से भरपूर सहायता मिली है, और मिलती रहेगी। तुम्हारी निर्भीकता, और प्रतिभा तो देखते ही बनती है। जहां जो बात खटकी, उसकी लगे लिपटे शब्दों में नहीं, खुल्लमखुल्ला ऐसे ढंग से निन्दा की, कि सुनने वाले के जी में बैठ जाय, उस के हृदय पर अंकित होजाय। तुमने धनी

लोगों की स्वार्थ-लिप्सा का स्पष्ट वर्णन किया है, तो सरकारों की भी विविध ज़्यादतियों की समुचित आलोचना करनेमें कुछ कमी नहीं की है। सत्ताधारियों ने तुम्हारी पुस्तकों पर, तथा स्वयं तुम्हारे ऊपर जितना अधिक दमन-चक्र चलाया, उतना ही सर्व साधारण पर तुम्हारी कृतियों का प्रभाव बढ़ता गया।

× × × ×

महाशय ! तुम चाहते थे कि कोई किसी को कष्ट न दे। श्रमजीवियों का, किसानों और मज़दूरों आदि का जीवन सुखमय हो। उन्हें भोजन वस्त्रादि का अभाव न हो, और उन्नति का समान अवसर मिले। सर्वत्र शान्ति रहे। कहीं पशुबल का व्यवहार न हो, कोई हिंसा न हो, जीवों की भी हत्या न हो। सेना द्वारा मारकाट न हो, यही नहीं, मार काट करने वाली सेनाओं में कोई भरती ही न हो। सब इसाई ईसा मसीह के प्रेम आदि सद्‌गुणों और सद् शिक्षा को धारण करके उसके सच्चे भक्त बनें, और अपने धर्म में घुसे हुए दोषों तथा वाह्याडम्बर को त्याग दें। लोगों का जीवन सादा हो, उस में अहंकार और विलासिता न हो। सब एक दूसरे से न्याय और समानता का व्यवहार करें। अपराधियों का सम्यग् सुधार किया जाय, पर प्राण दंड किसी को न दिया जाय। अहा ! संसारी आदमी इन बातों पर समुचित ध्यान देकर कब अपना एवं दूसरों का कल्याण करने वाले होंगे ?

× × × ×

भगवन् ! समय समय पर कई महात्माओं ने प्रेम और

अहिंसा का प्रचार किया है, पर राजनैतिक स्वातंत्र्य-प्राप्ति के लिए भी अहिंसा की ही शिक्षा देने में तुमने विशेष भाग लिया है। तुम्हारा उपदेश है कि "बुराई का भी विरोध पशु बल अर्थात् ज़ोर ज़बरदस्ती से न किया जाय, वरन् आध्यात्मिक शक्ति से अहिंसा और असहयोग द्वारा हो। इस प्रकार, दूषित और अत्याचारी शासन वाले देश में भी लोगों को अधिकारियों के सताने या मारने का विचार न करके, केवल उनसे असहयोग कर देना चाहिये। सर्व साधारण की सहायता और स्वीकृति से वंचित होने पर उस शासन यंत्र का स्वयं अन्त होजायगा।" महात्मन्! कभी तो वह दिन आयेगा ही, जब आत्म बल से पाशविक बल के पराजित होने की सच्चाई सर्व साधारण के मन में भली भांति स्थान करेगी, परन्तु उस के लिए अभी न मालूम संसार को कितने 'टालस्टायों' की आवश्यकता होगी।

× × × ×

तुम्हारे विचार साधारण प्रवाह के प्रतिकूल होते हुए भी लोगों के दिल में बैठने लगे। सत्तावाद, पूंजीवाद, सेनावाद, धार्मिक संगठन, और स्त्री पुरुषों के सम्बन्ध में तुमने जो लेखादि लिखेहैं, उनसे सारे यूरप में विलक्षण क्रान्ति मच गयी। कौन विवेकशील यह स्वीकार न करेगा कि आधुनिक रूस में जो दृष्य इस समय विद्यमान है, वह बहुत कुछ उस हलचल का परिणाम है जो तुम ने अपने पाठकों के मानसिक क्षेत्र में उत्पन्न की थी। हां, वहां जिस साम्यवाद का प्रचार हुआ है उस का रूप अभी अधिकांश में राजनैतिक सा है। तुमने आध्यात्मिक साम्यवाद का आदर्श सामने रखा था,

जिसके अनुसार कोई दूसरों की सम्पत्ति छीनने झपटने का विचार न करे; वरन् लोग खुशी से, प्रेम और त्याग भाव से, दूसरों की सुख सुविधा का विचार रखते हुए, अपनी सम्पत्ति का मोह स्वयं छोड़ दिया करें। सब एक दूसरे की सेवा सुश्रुषा और सहायता करना अपना अनिवार्य कर्तव्य समझें। ये बातें सत्ताधारियों के चिरकाल-सिद्ध स्वार्थों को धक्का पहुंचाने वाली हैं, अतः वे इन्हें समझ लेने पर भी सहसा कार्य में परिणत नहीं करते। तथापि कोई इनका विरोध या खंडन भी नहीं कर सकता। तुम्हारा उपदेश सत्य है। तुम धन्य हो!

× × × ×

महोदय! तुम्हारी सब बातें मान्य हों, या थोड़ी सी, लोग उन्हें अब समझें या कालान्तर में, इस में कोई संदेह नहीं कि तुम अमर हो। तुम्हारे भक्त ही नहीं, प्रत्येक निष्पक्ष समालोचक तुम्हारी प्रतिभा और महत्ता की घोषणा कर रहा है, और करेगा। अपने महान उद्देश्य की पूर्ति में तुम्हारी श्रद्धा और विश्वास अटल था। तुम में अपने संदेश द्वारा लोगों की आत्मा जागृत करने की शक्ति अनुपम थी। तुम वास्तव में महान थे। तुम्हें सादर प्रणाम!

(१२)

कार्ल मार्क्स के प्रति

हे मज़दूरों के देवता ! कैसे खेद का विषय है कि जितना कोई देश भौतिक सभ्यता की अधिक डींग मारने वाला होता है, उतनी ही अधिक संख्या वहां दीन दुखी मज़दूरों की होती है। सभ्य जगत मज़दूरों के विविध कष्टों को देखने का ऐसा आदी होगया है कि किसी को उन के विषय में चिन्ता करने की ज़रूरत मालूम नहीं होती। लेखकों को, कवियों को, क़ानून बनाने वालों को, और प्रबन्ध करने वालों को, निदान किसी भी 'बड़े' कहलाने वाले आदमी को इन क्षुद्र प्राणियों की ओर दृष्टिपात करने की फ़ुरसत नहीं। ऐसी परिस्थिति में तुमने मज़दूरों के उद्धार का भरसक प्रयत्न किया ! दीन-बन्धु कार्ल मार्क्स ! तुम्हें बारम्बार नमस्कार !

× × × ×

महात्मन् ! तुम्हारा शुभ जन्म १८१८ में जर्मनी में हुआ था। तुम्हारे पिता वकील थे, वे यहूदी से ईसाई हुए थे। उन्हें तुमसे बड़ी आशा थी। तुम प्रारम्भिक शिक्षा समाप्त कर बर्लिन के विश्व विद्यालय में दर्शन शास्त्र और नीति शास्त्र पढ़ने लगे। तुम्हारे पिता को तुम्हारा यह सिद्धान्त-प्रेम अच्छा न लगा। वे तुम्हें समझाते थे कि संसार में, गृहस्थ के लिए धन का बड़ा महत्व है। वे चाहते थे कि तुम खूब धन कमाओ, और परिवार को सुख पहुचाओ। उन्हें यह तो कभी कल्पना ही नहीं हो सकती थी कि तुम ऐसी दरिद्रता और

देश-निकाले का जीवन व्यतीत कराये कि तुम्हारे बच्चों को आवश्यक दूध न मिलने के कारण ऐहिक लीला समाप्त करनी पड़ेगी, तुम्हें अपने परिवार सहित एक जगह से दूसरी जगह, एक देश से दूसरे देश में इस प्रकार मारे मारे फिरना पड़ेगा। धन्य है, तुमने इन कष्टों को अपने सिद्धान्तों की रक्षा के लिए सहर्ष सहन किया। महानुभाव! तुम्हारी सहधर्मिणी की कोई किन शब्दों में प्रशंसा कर सकेगा, जिसने अपने प्राणों से प्यारे गोद के बच्चों के विछोह के समय भी अपना धैर्य न छोड़ा, और धनाभाव की मर्मभेदी पीडाओं में वीरांगना की भांति तुम्हारा साथ दिया। तुमने अपने आपको, अपने माता पिता, अर्द्धांगिनी या बच्चों को कुछ सुख न दिया, पर उसी त्याग का तो यह फल है कि आज दिन लाखों करोड़ों नर नारियों को तुम्हारा दिव्य आशामय संदेश, तथा नवयुग की समानता और साम्यवाद का आभास मिल रहा है, उन्हें आधुनिक भौतिक सभ्यता के अन्धकारमय पहलू के अन्त होने की सम्भावना प्रतीत होती है।

× × × × ×

हे प्रातः स्मरणीय! तुमने अपना तमाम जीवन ग़रीबी में, ग़रीबों के साथ, और ग़रीबों की हितचिन्तना में लगा दिया। तुमने उनकी दुर्दशा के कारणों पर विचार किया, तुमने उन बेचारों के अभावों को दूर करने के लिए साम्य धर्म का प्रचार करके अपनी अद्भुत प्रतिभा का परिचय दिया। प्राचीन काल के अधिकांश धर्माचार्य ग़रीबों को कहते थे कि तुम्हारे भाग्य में ग़रीबी और दुख ही लिखा है, तुम उसी में संतुष्ट रहो। अथवा, वे आचार्य अमीरों को दान धर्म का उपदेश देते थे।

आज कल भी बहुत से सुधारक इसी मार्ग का अवलम्बन करते हैं। परन्तु, इस से मूल रोग का निवारण नहीं होता। चहुं ओर की विषमता के वातावरण में, नाना प्रकार के कष्टों का अनुभव करते हुए दीन दुखी मज़दूर संतोष और धैर्य कब तक धारण कर सकते हैं ? तर्कवाद के युग में भाग्यवाद का सारहीन आश्वासन कहां तक सफल हो सकता है ? और, अधिकांश स्वार्थी अमीर लोगों ने यदि कभी कभी अपनी झूठन के टुकड़े फैंक ही दिये तो उन से मज़दूरों का क्या भला हो सकता है ? फिर दान या भिक्षा ग्रहण करने वालों में समुचित स्वाभिमान कैसे उदय और विकसित हो ? तुमने बतलाया कि स्वार्थयुक्त थोथी बातों से, या शास्त्रों के उपदेशों से लोगों की शारिरिक आवश्यकताओं की पूर्ति नहीं हो सकती; उन्हें रोटी कपड़ा चाहिये। जब तक सम्पत्ति का समुचित बटवारा न होगा, जनता की अशान्ति दूर नहीं हो सकेगी। तुमने साम्यवाद की घोर गर्जना की और योरप को, तथा अंशतः संसार को सामयिक चेतावनी देदी। तुम धन्य हो !

× × × ×

हे दलितों के हित-चिन्तक ! तुम्हारी सन् १८४८ ई० की 'कम्यूनिस्ट मेनिफ़ेस्टो' या समुदायवादी घोषणा तो प्रसिद्ध ही है। उस में तुमने जो सिद्धान्त बतलाये थे, वे आज भी मज़-दूरों की मझदार में पड़ी हुई नौका के लिए अनुभवी संचालक काम काम दे रहे हैं। किसी न किसी रूप या अंश में, सर्वत्र यही मांग हैं कि श्रेणी संघर्ष न हो, मालिक नौकर, पूंजीपति और मज़दूर, तथा ऊंच नीच आदि का भेद भाव न हो। भूमि से

वैयक्तिक अधिपत्य हटे, और समाज का सामूहिक स्वामित्व हो, पैत्रिक सम्पत्ति सम्बन्धी अधिकार की प्रथा का नाश हो, शासन साम्यवाद के सिद्धान्त पर हो, अर्थात् थोड़े से पूंजीपतियों या अन्य स्वार्थी आदमियों या श्रेणियों के हाथ में न रह कर जनता के सच्चे प्रतिनिधियों के अधिकार में रहे। ऐसा न हो कि मुट्ठी भर आदमियों के हाथ में तो देश का अपार द्रव्य हो, और बहुत से आदमियों को जीवन-निर्वाह भी कठिन हो। सब बच्चों के लिए निश्शुल्क शिक्षा की, और प्रत्येक व्यक्ति के लिए अनिवार्य रूप से परिश्रम करने की, व्यवस्था हो। महात्मन्! योरपीय मज़दूरों के सब दलों के कार्य क्रम में तुम्हारे प्रभाव की छाया, प्रत्यक्ष दीख पड़ती है।

× × × ×

तुम्हारे ये शब्द कि, 'सब देशों के श्रमजीवियो! चलो! एकता के सूत्र में संगठित हो।' बहुतों को चकित करने वाले हुए, और अब संसार को हिला रहे हैं। श्रमजीवियों के अन्तर्राष्ट्रीय सम्मेलनों का कार्य क्षेत्र बढ़ता जारहा है। तुम्हारा 'मूल धन' (Das Capital) ग्रन्थ समुदायवादियों की बाइबल (धर्म पुस्तक) बन गया है। यह तुम्हें अमर बनाये रखने के अतिरिक्त, अनेक मानव हितैषियों को दिशा-दर्शक का काम देता रहेगा। तुम धन्य हो!

× × × ×

आज कल समुदायवाद के कई भेद उपभेद होगये हैं; अतः तुम्हारे सिद्धान्तों को औरों के सिद्धान्तों से पृथक् रखने के लिए 'मार्क्सिज़्म' नाम देना ठीक ही है। तथापि बड़ी कठिनाई यह है कि तुम्हारे सिद्धान्तों के कई परस्पर-

विरोधी अर्थ लिये जा रहे हैं। तुम्हारी मूल रचना के रहते हुए भी, तुम्हारे अनुयायियों द्वारा की हुई उसकी भिन्न भिन्न व्याख्याओं में बड़ा अन्तर है। तुम्हारी चलायी हुई लहर की कई शाखायें होगयी हैं। भिन्न भिन्न समूह तुम्हारे नाम पर पृथक् पृथक् आन्दोलनों के समर्थक और पोषक होगये हैं। कुछ लोगों का मत है कि 'बोल्शेविज़्म' ही वास्तव में 'मार्क्सिज्म' है। पर कौन कह सकता है कि यह बात कहां तक ठीक है। अनेक हृदयों में सन्देह है कि लक्ष्य-प्राप्ति के लिए तुम जिसे बीच की अवस्था समझते थे, उसे कहीं लक्ष्य ही न मान लिया जाय। वर्तमान परिस्थिति में अभीष्ट सुधार या परिवर्तन करने के लिए जिन उपायों का तुम्हारे अनुयायी प्रयोग करते हैं, वे न मालूम कहां तक तुम्हारे मतानुकूल हैं। क्या क्रान्ति का अर्थ तुम उग्र या हिन्सात्मक क्रान्ति करते ? 'जनता' शब्द से तुम किस किस प्रकार के, कौन कौन से कार्य करने वालों का आशय समझते ? ऐसे विवाद-ग्रस्त विषय अनेक हैं। परमात्मा करे, तुम्हारे अनुयायियों में देश काल की समुचित परख करके, अभिलषित मार्ग अवलम्बन करने की शक्ति हो; उनमें तुम्हारे जैसी दूर्दर्शिता, दीन-बन्धुता और सूक्ष्म विवेचन-बुद्धि तथा त्याग--भाव हो।

× × × ×

हे निर्धनों के अधिष्ठातृ देव! तुम्हारा भौतिक शरीर पिछली शताब्दि में, सन् १८८३ ई० में इस संसार को छोड़कर चला गया, परन्तु कृतज्ञ मनुष्य संतान सदैव अपने हृदय--मंदिरों में तुम्हारी प्रतिष्ठा करती रहेगी; साम्यवादियों

की प्रत्येक विजय तुम्हारे यश और कीर्ति की वृद्धि करती रहेगी। अपने सुखों को ठुकरा कर संसार को सुख पहुंचाने की चिन्ता में लगे रह कर, तुमने मनुष्यों को मनुष्यत्व की वास्तविक शिक्षा दी है। सुयोग्य शिक्षक ! तुम्हें सादर वन्दना !

---

(१३)

सनयुत सेन के प्रति

हे महापुरुष ! तुम्हारी कर्म-भूमि, चीन संसार के रंग मंच पर कितने दृश्य देख चुकी है। इस की सभ्यता कितनी पुरानी है। इसे सब से अधिक वयो-वृद्ध न भी माना जाय, तो इस की अत्यन्त प्राचीनता की घोषणा तो इतिहास स्पष्ट रूप से कर रहा है। हज़ारों वर्ष पहिले यहां आविष्कृत किये हुए मुद्रण यंत्र, काग़ज़, नोट, रेशमी वस्त्र, तथा अन्य अन्वेषण आधुनिक वैज्ञानिकों का दर्प चूर्ण करने के लिए पर्याप्त हैं। विदेशियों के आक्रमण से बचने के लिए बनायी हुई यहां की पंद्रह सौ मील लम्बी और पन्द्रह फुट चौड़ी दीवार संसार के अत्यन्त प्रसिद्ध आश्चर्यों में से है। परन्तु यहां के निवासियों को, पीछे जाकर, अपनी

सभ्यता का अहंकार होगया; प्रजा को नाना प्रकार से कष्ट और अज्ञानान्धकार में रखा जाने लगा। फलतः जब कि जंगली देश क्रमशः सभ्य होते गये, चीन, जो अपनी सभ्यता के लिए प्रसिद्ध था, विविध व्यसनों और कुरीतियों के कारण अधिकाधिक अवनत होता गया। विदेशियों ने जहां जहां मौक़ा पाया, अपने अड्डे जमा लिये। पश्चिमी व्यापारियों ने लोगों को विविध प्रलोभनों में फंसा कर यहां का रक्त-शोषण करना आरम्भ कर दिया।

× × × ×

महात्मन्! इस दशा में, तुम्हें चीन का उद्धार करने में कितनी कठिनाई का सामना करना पड़ा होगा, इस का कुछ अनुमान करने के लिए हमें इस देश की विशालता और भौगोलिक परिस्थिति को स्मरण रखना चाहिये। अहा! इस भू-खण्ड का क्षेत्रफल चालीस लाख वर्ग मील से अधिक, और, जन-संख्या, संसार की कुल मनुष्य-संख्या की लगभग एक चौथाई—कोई पैंतालीस करोड़! जगह जगह दुर्गम नदी, नाले, पहाड़ और घाटियां। फिर, रेल, तार और टेलीफ़ोन नहीं। और तो क्या, सड़कों और रास्तों की ठीक व्यवस्था नहीं। जनता में शिक्षा नहीं। जागृति का आन्दोलन करने वाले समाचार-पत्र नहीं। ऐसी अवस्था में, तुमने एक दीन हीन किसान के पुत्र होकर, विविध साधनों से वंचित रह कर, अपनी मातृ-भूमि की चिरकालीन निद्रा हटाई और, उस में नवजीवन का संचार किया, यह बात तुम्हारे प्रति किस मानव हृदय का भक्ति-भाव आकर्षित न करेगी। तुम्हारा साहस, तुम्हारा त्याग, तुम्हारी दृढ़ता

निराश से निराश मनुष्य को आशा का संदेश देने वाली है, अकर्मण्यों को कर्मवीर बनाने वाली है। तुम धन्य हो, तुम्हें सादर वन्दना !

× × × ×

हे संसार-भूषण ! युवावस्था में तुम डाक्टरी करने लग गये थे, परन्तु तुम्हारा देश-भक्ति-पूर्ण हृदय तो अपनी रुग्ण जन्म-भूमि के इलाज में लग जाने के लिए व्याकुल था। तुमने निश्चय किया कि चीन को सभ्य संसार में समुचित स्थान मिलना चाहिये, उसे विदेशी लुटेरों के अधिपत्य से मुक्त करना चाहिये, और उस एक-सत्तात्मक स्वेच्छाचारी सरकार का भी मूलोच्छेद कर देना चाहिये जिस की निर्बलता का दुरुपयोग विदेशी अपने पंजे मज़बूत करने के लिए करते जा रहे हैं। तुमने सुधारक दल से सहयोग करके उसकी शक्ति दिन दूनी रात चौगनी बढ़ायी; खूब संगठन किया, युद्ध सामग्री एकत्र की। स्वार्थी देश द्रोहियों ने तुम्हारे कार्यों को विफल करने की भयंकर चेष्टा की। तुम्हें दूर दूर के देशों की ख़ाक छाननी पड़ी, और, वहां भी तुम्हारे सत्ता-धारी शत्रुओं के लोभी जासूसों ने तुम्हारा पीछा न छोड़ा। पर तुमने भी तो कभी निराश होना न सीखा था। बार बार स्वातन्त्र्य-युद्ध के लिए आन्दोलन करते रहे। अनेक नर-कलंक तुम्हारी जान लेने के लिए नियत हुए परन्तु तुम्हारी रक्षा होती रही; कई बार तुम अपनी बुद्धिमानी से बचे, तो कभी कभी अपनी उदारता और गम्भीरता के कारण ही बच गये। तुमने प्रजा तंत्र की स्थापना का कार्य जारी रखा। तुमने स्वदेश के लिए सर्वस्व

न्यौछावर करने वाले सुयोग्य और साहसी नेताओं को चुना, स्थान स्थान में अपने दल के केन्द्रों का संगठन किया, और देश भर में जागृति करके प्रजा को स्वतंत्रता-प्राप्ति के लिए बेचैन कर दिया। महाभाग! तुम धन्य हो; सहस्र बार धन्य हो!

× × × ×

दूरदर्शी महानुभाव! तुमने जान लिया कि प्रजा तंत्र की स्थापना करना ही पर्याप्त न होगा, उस की रक्षा के लिए, उसका कार्य-संचालन करने के लिए भी यथेष्ठ व्यवस्था होने की आवश्यकता है। इस के वास्ते ऐसे उत्साही कार्यकर्ता—पुरुष और स्त्रियां—चाहियें जिन्हों ने समुचित शिक्षा और अनुभव प्राप्त किया हो। अतः तुमने चीनी युवकों और युवतियों को छात्रवृत्तियां देकर पाश्चात्य देशों में भेजा। तुमने महिलाओं की उन्नति की; सामाजिक और राजनैतिक बाधायें दूर करने, तथा उन्हें उनके समुचित अधिकार दिलाने का भरसक उद्योग किया। चीन के उत्थान में इन नवयुवकों और महिलाओं ने जो भाग लिया है, वह प्रत्येक स्वतंत्रताभिलाषी देश के लिए शिक्षा-प्रद है, अनुकरणीय है।

× × × ×

मान्यवर! तुमने अपने महान उद्देश्य की पूर्त्ति कैसे करली? तुम्हारे पास धन जन का अभाव था। तुम ऐसे विशेष विद्वान नहीं थे। तुम्हारा परिवार भी प्रभावशाली नहीं था। पर, इस से क्या? तुम्हारे पास और कुछ न होते हुए भी काम करने की सच्ची लगन थी, आशा थी, त्याग-

भाव था, संगठन-कौशल था, और मुसीबतों से कभी भी न घबराने वाला हृदय था। संसार का कौनसा कठोर से कठोर काम है, जो इन सद्‌गुणों से वशीभूत न होजाय !

× × × × ×

निस्संदेह तुम अपने सामने चीन को पूर्ण रूप से स्वतंत्र और प्रजा-तंत्र--वादी न देख सके। गृह--युद्ध के कारण चीन यथेष्ठ उन्नति न कर सका। तुम कुछ समय और इस भूतल पर रहते तो न जाने उसे कितना अग्रसर कर जाते। तथापि तुम्हारे उद्योग से उन्नीसवीं. शताब्दी के चीन और आधुनिक चीन में ज़मीन आसमान का अन्तर हो गया है ,तुमने रोगी जननि जन्म-भूमि की सम्यक् चिकित्सा करके उसे विदेशियों के स्वार्थ-रोग से बहुत कुछ मुक्त कर दिया। अब समुचित पथ्य का सेवन और अनुपान करके वह हृष्ट पुष्ट भी होजावेगा। तुमने चीन में उस शक्ति का संचार कर दिया जो अब उसे स्वदेशी या विदेशी किसी अत्याचारी सत्ता का शिकार सहज ही न होने देगी। परमात्मा करे, इस शक्ति की क्रमशः वृद्धि होती रहे। चीन की जागृत जनता अन्य सोये हुए देशों के उत्थान में सहायक हो, वह अपने महत्व-पूर्ण प्रभाव से संसार की सुख-शान्ति बढ़ाने में समुचित योग प्रदान करे। चीन के त्राता, पालक और पोषक ! तुम्हें सादर प्रणाम !

———

(१४)

बुकर· टी· वाशिंगटन के प्रति

आत्मोद्धार की शिक्षा देने वाले महापुरुष ! तुमने भली भांति दिखला दिया कि जो जाति वर्षों और पीढ़ियों दासता की बेड़ियों में फंसी रह चुकी है, जो निर्धन और असहाय है, वह किन उपायों से अपना उद्धार कर सकती है। तुम्हारे महान प्रयत्नों से पूर्व कौन कल्पना कर सकता था कि संयुक्त राज्य अमरीका के नीग्रो (हबशी) जाति के आदमी संसार के सभ्य पुरुषों के सामने अपना सिर ऊंचा उठा सकेंगे। यद्यपि एब्राहम लिंकन आदि महानुभावों के त्याग और परिश्रम से नीग्रो लोगों को दासत्व से मुक्ति मिल चुकी थी, पर उन की हालत बुरी थी, वे भूखे नंगे रहते थे, उन्हें किसी शिल्पादि की ऐसी शिक्षा ही न मिली थी, जिससे वे अपना निर्वाह तक भी कर सकते। इस में संदेह नहीं कि उत्तरी रियासतों के गोरे उन से सहानुभूति रखते थे, परन्तु अधिकांश नीग्रो लोगों का निवास दक्खिनी रियासतों में था, और इन रियासतों के गोरे आदमी विजाति-विद्वेष के कारण उन्हें उन्नति-पथ से सर्वथा विमुख ही रखना चाहते थे। ऐसी परिस्थिति में भी तुमने उनके उद्धार का मार्ग प्रशस्त कर दिया, अत्यन्त निराश जनता के लिए भी आशावादी होने का प्रभावशाली संदेश दिया। तुम धन्य हो !

× × × ×

महात्मन् ! अब से केवल एकहत्तर वर्ष पूर्व ही आपका

इस भूतल पर शुभागमन हुआ था। तुम बहुत ही साधारण गुलाम थे। अपने पुरुषार्थ से, तुम ऊपर उठे; और हां, पीछे औरों को उठाने वाले हुए। रंक से तुम राव हुए; नहीं, नहीं, राव से अधिक पूज्य और प्रतिष्ठित हुए। तुम्हारा उदाहरण कितना उत्साह-प्रद है। जब गुलामी बन्द हुई तो तुम्हें अपना तथा अपने परिवार का पालन करने के लिए मेहनत मज़दूरी करनी पड़ती थी। शिक्षा प्राप्त करना बहुत कठिन था, तुम्हें इसके लिए बहुत संकट झेलने पड़े। पर तुमने शिक्षा-प्राप्ति की धुन न छोड़ी। जैसे तैसे हेम्पटन विद्यालय या शिल्प शाला की सम्पूर्ण शिक्षा समाप्त की। इसके बाद दो तीन वर्ष तक जहां तहां पढ़ाने का कार्य किया। पीछे तुम्हें टस्केजी में आकर पाठशाला खोलने का कार्य सौंपा गया। इस कार्य में तुमने अपना तन मन पूरी तरह लगा दिया, तुमने इस संस्था की भरसक उन्नति करना अपने जीवन का प्रधान लक्ष्य बना लिया। तुम इसके जीवन प्राण बन गये। तुम्हें सादर प्रणाम!

× × × ×

तुम्हारे त्याग और कष्ट सहन से यह संस्था ऐसी उन्नत हुई कि इसे देखने वाले और इसका हाल सुनने वाले चकित होजाते हैं। अहा! जिस संस्था का कार्य तुमने एक पुरानी कोठड़ी या मुर्गीख़ाने में आरम्भ किया था, उसके विशाल भवन में, तुम्हारे जीवन-काल में सैंकड़ों सुन्दर कमरे बन गये। जहां दो अध्यापक और पन्द्रह विद्यार्थी थे, वहां लगभग दो सौ शिक्षक तथा अन्य कर्मचारी, और दो हज़ार शिक्षा पाने वाले रहने लगे!

इस संस्था में हज़ारों एकड़ ज़मीन है और हज़ारों ही चौपाये रहते हैं। गाड़ियों, खेती के औज़ारों और स्थायी सम्पत्ति मिलाकर इसकी मिलकीयत करोड़ों रुपये की है। यह संस्था अब संसार भर की सुप्रसिद्ध संस्थाओं में है। इसके पालक पोषक ! तुम धन्य हो।

× × × ×

इस संस्था ने असंख्य नीग्रो युवकों को कर्तव्य-पथ में लगा दिया है। इसने नीग्रो जाति की मुख्य मुख्य समस्याएं हल करने में भारी सहायता दी है। यहां उनके उद्धार का उपाय करने वाली कई सभा समितियां काम करती हैं। यह संस्था, कोरा एक विद्यालय या शाला नहीं है, वरन एक बड़ी समाज है, जो अपने सब अभावों की पूर्त्ति स्वयं करती है। यहां विद्यार्थी अनेक वस्तु तैयार करते हैं, खेत जोतते हैं, रसोई बनाते हैं, भजन करते हैं, खेलते हैं, और मकान आदि बनाते हैं। ये बातें किस शिक्षा संस्था के लिए गौरव-सूचक न होंगी? महानुभाव! अन्य संस्थाओं के वास्ते ऐसा आदर्श उपस्थित करने के लिए श्रम की महत्ता समझाने, हाथ से काम करने की और स्वावलम्बी होने की शिक्षा देने के लिए शिक्षा-प्रेमी चिरकाल तक तुम्हारे कृतज्ञ रहेंगे। तुम धन्य हो।

× × × ×

महोदय ! इस संस्था ने ऐसा उच्च पद कैसे प्राप्त कर लिया ? तुम इतना काम कैसे कर गये ? आज कल अनेक शिक्षा प्रचारक अपने अपने उद्देश्य में सफल क्यों नहीं होते ? बात यह है कि अधिकांश सुधारक उन लोगों से

मिल जुल कर रहना, उनके सुख दुख में शामिल होना नहीं चाहते, जिनका उन्हें सुधार करना है, जिनमें उन्हें शिक्षा का प्रचार करना है। दूर बैठे कोरी कल्पनाओं से काम निकालना चाहते हैं। शहरों में, विशाल भवनों में, समय व्यतीत करते हुए ग्राम निवासियों के, झोंपड़ियों में रहने वालों के, हित की बातें कह सुन देते हैं; या कार्यालयों और दफ्तरों में जाकर कुछ लिखा पढ़ी कर देने से या सभा मंच पर समय समय पर कुछ व्याख्यान देदेने मात्र से संतुष्ट होजाते हैं। ये उनकी आदतों आवश्यकताओं, अभावों और त्रुटियों आदि से अपरिचित होते हैं, फिर ये उनका सुधार करने में कैसे सफल हो सकते हैं! तुम इन बातों को खूब अच्छी तरह समझते थे। रोगी का इलाज करने से पहले उसके रोग के सम्यग् निदान कर लेने का महत्व जानते थे। सुधारक तुम्हारी सफलता के इस रहस्य को भली भांति जान लें, और इसे कार्य में परिणत करें तो कितना कल्याण हो। महाशय! तुम्हें सादर प्रणाम!

× × × ×

महात्मन्! तुम्हारे 'आत्मोद्धार' नामक आत्म चरित्र में लिखे हुए अनुभव पाठकों, विशेषतया शिक्षा-प्रचारकों के के लिए कितने उपदेश-प्रद हैं। देहातों के लोगों की रहन सहन देखने और उनमें पाठशाला की चर्चा फैलाकर शिक्षा प्राप्ति के लिए प्रेम उत्पन्न करने की उपयोगिता तुम अच्छी तरह जानते थे। तुमने इस कार्य के लिए एक महीना व्यतीत किया। तुम गांवों में भ्रमण करते हुए वहां वाले असभ्य लोगों के साथ भोजन किया करते थे। तुम्हें

अनेक ऐसे मौक़े मिले, जब तुमने बाजरे की रोटी केवल पानी में उबाले हुए मटर के साथ खायी है। तुमने देखा कि धनाभाव के कारण वहां के अनेक आदमियों के घरों में जीवन रक्षक पदार्थों की कमी भले ही हो, परन्तु वे शौक के लिए घड़ी और हारमोनियम आदि खरीद लेते थे, यद्यपि वे इन चीज़ों से फ़ायदा उठाना नहीं जानते थे, और इनके लिए उन्हें अधिकाधिक ऋण-ग्रस्त होना पड़ता था। देहात की पाठशालाओं के शिक्षक पढ़ाने के काम में निरे मूर्ख होते थे। उनका आचरण भी शुद्ध न होता था। लड़कों के पास पुस्तकों की कमी रहती थी। एक पाठशाला में—जो एक झोंपड़ी में थी, तुमने देखा कि पांच विद्यार्थी एक ही पुस्तक से पाठ ले रहे हैं, पुस्तक बेंच पर बैठे हुए पहले दो विद्यार्थियों के बीच में थी। इनके पीछे दो विद्यार्थी खड़े खड़े इनके कन्धों पर से झुक कर पुस्तक देख रहे थे, और इन चारों के कन्धों पर से झुक कर देखने वाला एक छोटा विद्यार्थी और खड़ा था। इन बातों से तुमने स्वयं जान लिया कि तुम्हें कैसी जनता में काम करना है। फिर तुम अपने महान कार्य में जुट गये। महाशय! तुम्हारे अनुभवों की कहां तक प्रशंसा की जाय, तुम धन्य हो!

× × × ×

तुम्हारे शिक्षा-विषयक सिद्धान्त कितने उत्तम थे। तुमने हृदयंगत कर लिया था कि सच्ची शिक्षा वही है जिससे प्रत्यक्ष जीवन का सम्बन्ध हो, जिससे जीवन के छोटे बड़े सब कार्यों के करने में सहायता मिले। यह ध्यान में रखकर कि दक्षिण के राज्यों के ८५ फ़ीसदी नीग्रो खेती

पर ही निर्वाह करते हैं, तुमने यह निश्चय किया कि शिक्षा का ऐसा फल न हो कि विद्यार्थी खेती से प्रेम करना छोड़दें। साथ ही प्रत्येक विद्यार्थी कोई न कोई ऐसी कला या हुनर जान जाय, जिससे वह विद्यालय से निकलने पर अपना निर्वाह सुगमता-पूर्वक कर सके। इसके अतिरिक्त विद्यार्थी सदाचारी और सुव्यवस्था-प्रेमी हों; वे अपने काम में नवीन जीवन डालदें और जिन लोगों के साथ उन्हें जीवन व्यतीत करना हो उनकी मानसिक, नैतिक और धार्मिक उन्नति कर सकें। अहा! अन्यान्य देशों में भारतवर्ष की शिक्षा संस्थाएं इन बातों का समुचित पालन करें तो वे कितनी अधिक उपयोगी बन जांय।

× × × ×

हे मार्ग प्रदर्शक! तुम्हारे जैसे धीर, परिश्रमी और स्वार्थ-त्यागी सज्जनों के प्रयत्नों का ही यह फल है कि जो नीग्रो साठ साल पहले गुलामी का जीवन बिताते थे, और भेड़ बकरी की तरह बेचे और ख़रीदे जाते थे, जो तीस पैंतीस वर्ष पहले मज़दूर ही थे, वे आज कृषक, दुकानदार, शिक्षक, धर्मोप-देशक, अधिकारी, एवं कुशल कारीगर बनकर समाज में उच्च प्रतिष्ठित पद प्राप्त कर रहे हैं। तुमने बतलाया है कि यद्यपि दूसरों की सहायता से लाभ उठाया जा सकता है, है, और उठाया जाना चाहिये; परन्तु प्रत्येक जाति और देश का उद्धार प्रधानतया उसके ही सदस्यों द्वारा होगा। दूसरों की अथवा परमात्मा की सहायता भी तभी मिलेगी, जब हम पहले स्वयं अपनी सहायता करना आरम्भ

कर देंगे। पहले से औरों का आसरा ताकना और बिना हाथ पांव हिलाये बैठे रहने की नीति घातक है। परमात्मा करे, हम तुम्हारी इस बहु-मूल्य शिक्षा से समुचित लाभ उठावें, और अपने जीवन को स्वजाति, स्वदेश तथा मानव जनता के लिए अधिकाधिक उपयोगी बनावे। हे स्वावलम्बन-शिक्षक! सन् १९१५ ई० में तुम्हारा भौतिक शरीर इस मर्त्य लोक से विदा होगया, परन्तु तुम ऐसी शिक्षा देगये कि सहृदय सज्जन तुम्हें सदैव स्मरण रखेंगे, और मानव जाति को तुम्हारे उपकारों की याद दिलाते रहेंगे। तुम्हें सादर सभक्ति बन्दना!

राष्ट्रीय विद्यालयों, तथा सरकारी स्कूलों में प्रचलित पाठ्य पुस्तकों, पारितोषिक और पुस्तकालयों के लिये विशेष उपयोगी

भारतीय ग्रन्थ माला, वृन्दावन।

"प्रत्येक देश-प्रेमी को इस माला की पुस्तकें अपनाकर, इसके व्यवस्थापक को साहित्य की वृद्धि के लिये उत्साहित करना चाहिये।"

—सैनिक।

It is the duty of every Hindi-knowing citizen to help the author, in the pioneer work that he is doing.

—The Education.

१–भारतीय शासन Indian Administration—"राजनैतिक ज्ञान के लिये आइने का काम देने वाली", और "विद्यार्थियों, पत्र-सम्पादकों और पाठकों" के बड़े काम की"। छटा संस्करण; मूल्य ॥।=)

२–भारतीय विद्यार्थी विनोद—भाषा, विज्ञान, इतिहास आदि पाठ्य विषयों की आलोचना, और मातृ भाषा आदि आठ विचारणीय विषयों की विवेचना। "नये ढङ्ग की रचना।" दूसरा संस्करण; मूल्य ।=)

३–भारतीय राष्ट्र निर्माण Indian Nation Building—राष्ट्रीय समस्याओं का "बहुत ही योग्यता और स्वतंत्रता से विचार किया गया है।" दूसरा संस्करण। मूल्य ॥।=)

४–भावना—(ले०---श्री० स्वामी आनन्द भिक्षुजी

सरस्वती) कल्याण--पथ की प्रदर्शिका। गद्य काव्य। स्फूर्ति का संचार करने वाली। नवयुवकों के लिये विशेष उपयोगी। ओजस्वी रचना; मूल्य ।॥=)

५-सरल भारतीय शासन—साधारण योग्यता वालों के लिये राजनीति की अत्यन्त आवश्यक पुस्तक। मूल्य ॥)

६-भारतीय जागृति Indian Awakening—गत सौ वर्षों का धार्मिक, सामाजिक, आर्थिक और साहित्यिक आदि इतिहास। मूल्य ।॥=)

७-विश्व वेदना-मानव समाज के भिन्न भिन्न पीड़ित अंग--मज़दूर, किसान, लेखक, बच्चे, विधवायें, वेश्याएं, क़ैदी और अनाथ आदि अपनी अपनी वेदना बता रहे हैं। उनकी व्यथा सुनिये। कष्ट पीड़ितों की वेदना के निवारण के विषय में भी विचार किया गया है। मूल्य ॥)

८-भारतीय चिन्तन—राजनैतिक, अन्तरार्ष्ट्रीय, आर्थिक, सामाजिक और धार्मिक आदि विषयों का मनोहर वर्णन। मूल्य ।॥=)

९-भारतीय राजस्व Indian Finance—दो सौ करोड़ रुपये के वार्षिक सरकारी आय-व्यय का ज्ञान प्राप्त कर आर्थिक स्वराज्य प्राप्त कीजिये। मूल्य ।॥=)

१०-निर्वाचन नियम Election Guide-(ले०-श्री० दयाशंकर दुबे. एम० ए०, एल एल० बी० और भगवानदास केला) व्यवस्थापक संस्थाओं, म्यूनिसिपैलिटियों और ज़िला बोर्डों के निर्वाचकों और उम्मेदवारों के लिये अत्युपयोगी। मूल्य ॥-)

११-बालब्रह्मचारिणी कुन्ती देवी—एक आधुनिक आदर्श महिला का मनन करने योग्य, सचित्र जीवन चरित्र। स्त्री शिक्षा की अनूठी पुस्तक। साधारण, सजिल्द और राज संस्करण; मूल्य क्रमशः १॥), १॥।), ३)

१२-राजनीति शब्दावली Political Terms—राजनीति के हिन्दी-अंगरेज़ी तथा अंग्रेज़ी—हिन्दी पर्यायवाची शब्दों का उत्तम संग्रह। मूल्य।-)

१३-नागरिक शिक्षा Elementary Civics—सरल भाषा में, सरकार के कार्यों—सेना पुलिस, न्याय, जेल, कृषि, उद्योग-धंधे, शिक्षा स्वास्थ्य आदि विषयों का विचार। सचित्र। मूल्य ॥)

१४-ब्रिटिश साम्राज्य शासन Constitution of the Br. Empire—(ले०-श्री प्रोफेसर दयाशंकर दुबे, और भगवानदास केला) इंगलैंड की तथा उसके साम्राज्य के स्वतंत्र तथा परतंत्र उपनिवेशों, एवं अन्य भागों की शासन पद्धति का सरल सुबोध वर्णन। मूल्य केवल ।॥=)

१५-श्रद्धाञ्जलि—"यह श्रद्धा के पथ में पूर्व और पश्चिम, नवीन और प्राचीन, स्त्री और पुरुष, धर्मी और विधर्मी सब की अर्चना कर रही है। वीर पूजा में प्रेरणा, उत्साह और प्राण की मांग की गयी है।" इसमें २९ महापुरुषों के दर्शन हैं। मूल्य केवल ।॥=)

१६-भारतीय नागरिक—इसमें भारतीय नागरिकों के अधिकार और कर्तव्यों के अतिरिक्त, किसानों, ज़मींदारों

लेखकों, सम्पादकों, विद्यार्थियों और अध्यापकों महिलाओं और दलित जातियों आदि को देशोन्नति के लिए दी जाने वाली सुविधायें बतलायी गयी हैं। मूल्य ॥)

अन्य पुस्तकें।

संसार के सम्वत ॥-)	हिन्दी भाषा में अर्थ शास्त्र -)
भारतीय अर्थ शास्त्र	हमारा प्राचीन गौरव -)
प्रथम भाग १॥)	हिन्दी भाषा में राजनीति -)
,, द्वितीय भाग १)	भारतीय प्रार्थी ॥)

हमारी पुस्तकों की स्वीकृति

पाठ्य पुस्तकें।

हिन्दी साहित्य सम्मेलन	(१) भारतीय शासन, (२) सरल भारतीय शासन, (३) भारतीय राजस्व, (४) निर्वाचन नियम, (५) नागरिक शिक्षा, (६) ब्रिटिश साम्राज्य शासन।
इन्दौर	भारतीय शासन
काशी विद्यापीठ	,,
गुरुकुल कांगड़ी	,,
गुरुकुल इन्द्रप्रस्थ	,,
प्रेम महाविद्यालय वृन्दावन	(१) भारतीय शासन, (२) भारतीय विद्यार्थी विनोद, (३) नागरिक शिक्षा।

पारितोषिक और पुस्तकालयों के लिए

मध्य प्रान्त — (१) भारतीय विद्यार्थी विनोद, (२) भावना, (३) सरल भारतीय शासन, (४) वान ब्रह्मचारिणी कुन्ती देवी, (५) नागरिक शिक्षा, (६) ब्रिटिश साम्राज्य शासन ।

बड़ौदा — (१) सरल भारतीय शासन, (२) भावना ।

पुस्तकालयों के लिए

संयुक्त प्रान्त — (१) भारतीय शासन, (२) भारतीय राजस्व, (३) निर्वाचन नियम, (४) वान ब्रह्मचारिणी कुन्ती देवी ।

बिहार — (१) सरल भारतीय शासन, (२) नागरिक शिक्षा ।

पंजाब — राजनीति शब्दावली ।

इसके अतिरिक्त माला की भिन्न भिन्न पुस्तकें मध्य प्रान्त, गवालियर, बड़ौदा, गुजरात विद्यापीठ आदि में पुस्तकालयों के लिये स्वीकृत है ।

देश भक्त पाठकों को ये पुस्तकें मंगाकर पढ़नी चाहियें । इनके प्रचार की प्रत्येक नगर और गांव में आवश्यकता है ।

भारतवर्षीय हिन्दी अर्थ शास्त्र परिषद्

(सन् १९२३ ई० में संस्थापित)

सभापति—श्री० सी. डी. टामसन, एम. ए. प्रयाग.

मंत्री-(१) श्रीमान् पंडित दयाशंकर जी दुबे, एम० ए., एल-एल० बी० अर्थशास्त्र शिक्षक, प्रयाग विश्व विद्यालय, प्रयाग। (२) श्री जयदेव जी गुप्त एम० ए०; एस० एम० कालिज, चंदौसी।

उद्देश्य—जनता में हिन्दी द्वारा अर्थ शास्त्र का ज्ञान फैलाना, और उसका साहित्य बढ़ाना।

सदस्य और संरक्षक—कोई भी सज्जन १) प्रवेश शुल्क देकर परिषद् का सदस्य हो सकता है। जो सज्जन कम से कम एक सौ रुपये की आर्थिक सहायता देते हैं, वे इसके संरक्षक समझे जाते हैं। सदस्यों और संरक्षकों को परिषद् द्वारा प्रकाशित या सम्पादित पुस्तकें पौने मूल्य में दीजाती हैं।

हिन्दी में अर्थ शास्त्र सम्बन्धी साहित्य की कितनी कमी है, यह किसी साहित्य-प्रेमी से छिपा नहीं है। देश के उत्थान के लिए इस साहित्य की शीघ्र वृद्धि होनी चाहिये। प्रत्येक देश-प्रेमी सज्जन से हमारी प्रार्थना है कि वह इस परिषद् का संरक्षक या सदस्य होकर इसे सहायता देने की कृपा करें। जिन महाशयों ने इस विषय का कोई निबन्ध या पुस्तक लिखी हो, वे उसे मंत्री के पास निम्नलिखित पते से भेजदें; परिषद् से स्वीकृति होने पर वह इसकी सम्पादन समिति द्वारा बिना मूल्य सम्पादित की जायगी। जो महाशय आर्थिक विषयों पर कोई लेख या पुस्तक लिखने में परिषद् की सहायता लेना चाहें, वे भी निम्नलिखित पते से पत्र व्यवहार करें।

दारागंज
प्रयाग

दयाशंकर दुबे,
मंत्री